नव्वाबे ख़ास़

नामे किताब : नव्वाबे ख़ास़

तर्जुमा : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

तरतीब : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

सने इशाअ़त : १४३७ हि.

हदिया : ५० रुपये

फ़ेहरिस्त

१. इब्तेदाइया.....५

२. नेयाबत की ज़रूरत २४

३. पहले नाएबे ख़ास़
जनाब उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैह ३४

४. दूसरे नाएबे ख़ास़
जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैह ५०

५. तीसरे नाएबे ख़ास़
जनाब हुसैन बिन रौह़ नोबख़्ती रह्मतुल्लाह अ़लैह ७१

६. चौथे नाएबे ख़ास़
जनाब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी रह्मतुल्लाह अ़लैह.....८८

७. मुह़ाफ़ेज़ाने वेलायत १०२

इब्तेदाइया

ख़ुदावन्द आ़लम रहमान-ओ-रहीम है, कोई भी मख़्लूक़ात के हक़ में ख़ुदा से ज़्यादा मेहबान नहीं है। माँ की मोहब्बत अपनी तमाम वुस्अ़तों के साथ इक़यानूस रहमते इलाही की सिर्फ़ एक नमी है। जब माँ की मोहब्बत अपने फ़र्ज़न्दों को किसी तकलीफ़ में देखना पसंद नहीं करती तो ख़ुदा की रहमते वासेआ़ अपने बंदे को किस त़रह जहन्नम में मुब्तेलाए अ़ज़ाब देखेगी।

बरतरीन मख़्लूक़

ख़ुदावन्द आ़लम ने इन्सान को अशरफ़े मख़्लूक़ात क़रार दिया। कर्रम्ना बनी आदम के ताज से इन्सान को तमाम मख़्लूक़ात पर बरतरी अ़त़ा की, उस को नेहायत मोअ़्तदिल पैदा किया। उस की ज़रूरत की तमाम चीज़ें उसमें कूट कूट कर भर दीं। अगर इन्सान को एक त़रफ़ "इख़्तेयार" की दौलते लाज़वाल से माला माल किया तो दूसरी त़रफ़ इस "इख़्तेयार" के "स़हीह इस्तेअ़्माल" के लिए "अ़क़्ल" जैसी अ़ज़ीम नेअ़्मत अत़ा की। अगर इन्सान में हैवानी ख़ाहिशात की चिंगारियाँ क़रार दीं तो हेदायते कामिल के जज़्बए तमाम से भी सरशार किया। अगर ख़ाहिशात को महमेज़ करने के लिए शैतान और चिंगारी को जवालामुखी में तब्दील करने के लिए इब्लीस वजूद में आए तो ख़ुदा ने हेदायत के लिए अंबिया, औलिया और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का सिलसिला शुरूअ़् किया।

चूँकि ख़ुदावन्द आ़लम इन्सान और उसकी अंदरूनी कैफ़ीयात से पूरी त़रह वाक़िफ़ है। उसने इन्सान की हेदायत का ऐसा मुकम्मल-ओ-

मुनज़्ज़म इन्तेज़ाम किया जिसको इस ज़मीन पर सबसे पहले इन्सान बनाकर भेजा उसको नबी और अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा। ताकि इन्सान येह बहाना न बना सके "अगर हमारी हेदायत का इन्तेज़ाम किया होता तो हम गुमराह न होते।" और अगर कोई गुमराही और हलाकत के रास्ते पर चलना चाहता है तो हुज्जत उस पर तमाम हो चुकी हो। और वोह अपने क़दमों और अपने इख़्तेयार से हलाकत की त़रफ़ जाए।

मुख़्तार-ओ-आज़ाद

ख़ुदावन्द आलम ने इन्सान को आज़ाद-ओ-मुख़्तार पैदा किया है। आज़ादी और इख़्तेयार सिर्फ़ इस सूरत में मअ़्क़ूल है जब दो रास्ते हों। एक ख़ैर का रास्ता दूसरा शर का रास्ता। अगर सिर्फ़ एक ही रास्ता सामने हो उस वक़्त येह कहना "आप जिधर चाहें चले जाएँ" ग़ैर मअ़्क़ूल है। जब कोई दूसरा रास्ता नहीं है तो जिधर चाहे चले जाएँ का क्या मत़लब। क़ुरआन करीम ने इस हक़ीक़त को मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में बयान फ़रमाया है। कभी इर्शाद हुआ:

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ

व हदैनाहुन्नज्दैन.

हमने इन्सान को दोनों रास्ते दिखा दिए।

(सूरए बलद, आयत १०)

और कभी इस त़रह इर्शाद हुआ:

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا

इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकेरँव व इम्मा कफ़ूरा.

हमने उस को रास्ता दिखा दिया है चाहे वोह शुक्र गुज़ार हो जाए और चाहे कुफ़्राने नेअ़्मत करने लगे।

(सूरए दह्र, आयत ३)

और कभी इस त़रह़ इर्शाद हुआ:

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا {7} فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا {8} قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا {9} وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا {10}

व नफ़्सिँव व मा सव्वाहा. फ़अल ह-महा फ़ुजू-र-हा व तक़्वाहा. क़द अफ़्ल-ह मन ज़क्काहा. व क़द ख़ा-ब मन दस्साहा.

(सूरए शम्स, आयत ७-१०)

जब ख़ुदावन्द आ़लम ने इन्सान को वोह अ़ज़ीम नेअ़्मतें दी हैं जो किसी को नहीं दी। अ़क़्ल, फ़ह्म, फ़िक्र, नबी, रसूल और इमाम जैसी अ़ज़ीम नेअ़्मतें अ़त़ा की हैं तो इन्सान का इम्तेह़ान भी सबसे ज़्यादा सख़्त होगा। और जो इस इम्तेह़ान में कामियाब होगा उसको वोह दर्जात अ़त़ा होंगे जिसको अ़क़्ल सोच भी नहीं सकती है और जहाँ तक फ़िक्र की रसाई नहीं है।

इम्तेह़ान

लेहाज़ा नेअ़्मतें है, इख़्तेयार है, इम्तेह़ान है उसके बअ़्द या अअ़्ला इल्लीयीन है या सूए इख़्तेयार की बेना पर अस्फ़लस्साफ़ेलीन है।

ख़ुदावन्द आ़लम ने शैत़ान को नेअ़्मतों से नवाज़ा और उसकी ए़बादत की बेना पर उसको फ़रिश्तों में जगह दी। नारी मख़्लूक़ को नूरी मख़्लूक़ात के साथ रहने का मौक़अ़् दिया। दर्जा बलन्द हुआ। इम्तेह़ान की मंज़िल आई। ख़ुदा ने ख़ाकी मख़्लूक़ को सज्दा करने का हुक्म दिया। वोह नूरी मख़्लूक़ जो अपनी ए़बादत की बेना पर ख़ुदा के बन्दए कामिल थे। जो ख़ुदा के हर हुक्म के सामने तस्लीम थे उनकी निगाहों में ख़ाकी मख़्लूक़ न थी बल्कि हुक्मे ख़ुदा था जो हर एक से बलन्द-ओ-बाला है।

उन्होंने हुक्मे ख़ुदा के सामने सज्दा किया और इम्तेहान में कामियाब होकर मुक़र्रबे बारगाहे इलाही क़रार पाए। नारी मख़्लूक़ ने ज़ाहिर पर नज़र की हुक्मे ख़ुदा को नज़र अंदाज़ करके सज्दा करने से इन्कार कर दिया। ख़ुदा ने उसको मलाएका की बज़्म से निकाला, अपनी बारगाह से दूर किया। अ़र्श की बलंदियों से फ़र्श की पस्तियों पर फेंक दिया।

उस वक़्त उसने ख़ुदा की बारगाहे क़ुद्स में जिस जसारत और बदकलामी का मुज़ाहेरा किया है क़ुरआने करीम ने उसको यूँ बयान किया है:

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ{32} قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ{33} قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ{34} وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ{35} قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ{36} قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ{37} إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ{38} قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ{39} إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ{40} قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ{41} إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ{42}

क़ा-ल या इब्लीसो मा ल-क अल्ला तकू-न मअ़स्साजेदीन

क़ा-ल लम अ-कुल्लअस्जु-द ले-ब-शरिन ख़लक़्तहू मिन स़ल्सालिम मिन ह़-म-इम मस्नून

क़ा-ल फ़ख़्रुज मिन्हा फ़इन्न-क रजीम

व इन-न अ़लैकल्लअ़न-त एला यौमिद्दीन

क़ा-ल रब्बे फ़-अन्ज़िरनी एला यौमे युब्असू-न

क़ा-ल फ़-इन्नका मिनल मुन्ज़री-न

एला यौमिल वक़्तिल मअ्लूम

क़ा-ल रब्बे बेमा अग़्वैतनी ल-ओज़य्येनन-न लहुम फ़िल अर्ज़े व-ल-उग़्वेयन्नहुम अज्मईन

इल्ला एबाद-क मिन्हुमुल मुख़्लसी-न

क़ा-ल हाज़ा सेरातुन अलय्या मुस्तक़ीमुन

इन-न एबादी लै-स ल-क अलैहिम सुल्तानुन इल्ला मनित्तबअ-क मिनल ग़ावी-न

अल्लाह ने कहाः ऐ इब्लीस तुझे क्या हो गया तू सज्दा गुज़ारों में शामिल न हो सका।

इब्लीस ने कहाः मैं ऐसे बशर को सज्दा नहीं कर सकता जिसे तूने सियाही माएल ख़ुश्क मिट्टी से पैदा किया है।

अल्लाह ने कहाः तू यहाँ से निकल जा तू मरदूद है और तुझ पर क़यामत के दिन तक लअ्नत है।

इब्लीस ने कहाः परवरदिगार मुझे रोज़े हश्र तक मोहलत दे दे।

अल्लाह ने कहाः तुझे मोहलत दे दी गई एक मअ्लूम और मोअय्यन वक़्त के लिए।

इब्लीस ने कहाः परवरदिगार जिस तरह तूने मुझे गुमराह किया है मैं ज़मीन में उनके लिए सजा सजा कर पेश करूँगा और सबको ज़रूर बिज़्ज़रूर गुमराह करूँगा।

लेकिन तेरे मुख़्लिस बन्दों तक मेरी रसाई न होगी।

अल्लाह ने कहा: यही मेरा सीधा रास्ता है मेरे बन्दों पर तेरा कोई क़ाबू नहीं है। मगर वोह लोग जो गुमराहों में तेरी पैरवी करने लगें।

(सूरए हिज्र, आयत ३२-४२)

इसी त़रह़ सूरए मुबारका स़ाद में यही पूरी गुफ़्तुगू एक और अंदाज़ से नक़्ल करने के बअ्द इर्शाद होता है:

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

क़ा-ल फ़-बेइ़ज़्ज़ते-क लउग़्वेयन्नहुम अज्मई़-न.

इब्लीस ने कहा: परवरदिगार तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मैं सबको गुमराह करूँगा।

(सूरए स़ाद, आयत ८२)

शैत़ानी मन्सूबा

इन आयतों से येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ है कि शैत़ान सबको गुमराह करना चाहता है और सबको अपने साथ जहन्नम में ले जाना चाहता है।

गुमराह करना यअ्नी ख़ुदा से दूर कर देना। ख़ुदा के दीन से दूर कर देना, ख़ुदा के औलिया से दूर कर देना, इमामत से दूर कर देना। हुदूदे इलाही की मुख़ालेफ़त करना। शरीअ़ते इस्लाम पर अ़मल न करना। ह़लाल को ह़राम, ह़राम को ह़लाल क़रार देना। मुख़्तस़र येह कि इन्सान को ख़ुदा की हेदायत से मह़रूम कर देना। दुनिया में ख़ुदा के निज़ाम को, शरीअ़ते इस्लाम को नाफ़िज़ ने होने देना। ज़मीन पर हुकूमते इलाहिया को क़ाएम न होने देना। बन्दगाने ख़ुदा में अ़द्ल-ओ-इन्स़ाफ़ के बजाए ज़ुल्म-ओ-जौर को राएज करना। अह़कामे इलाही के ख़ेलाफ़ काम करना। तौह़ीद के बजाए शिर्क, इस्लाम के बजाए कुफ़्र, ईमान के बजाए नेफ़ाक़ को आ़म करना.....

शैत़ान ने ख़ुदावन्द आ़लम की इ़ज़्ज़त की क़सम खाकर तमाम लोगों को गुमराह करने की ठान ली है। "ज़मीन के हर गोशे पर गुमराही को आ़म करूँगा" - येह है शैत़ान का मन्सूबा।

सुन्नते इलाही

ख़ुदावन्द आ़लम ने लोगों की हेदायत के लिए जो इन्तेज़ाम किया है वोह भी कोई मह़दूद इन्तेज़ाम नहीं है ख़ुदावन्द आ़लम ने ह़जरत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बारे में इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया:

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا

कुल या अय्योहन्नासो इन्नी रसूलुल्लाहे इलैकुम जमीआ़.

ऐ पैग़म्बर आप उन लोगों से कह दीजिए: ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ अल्लाह का रसूल और नुमाइन्दा हूँ।

(सूरए अअ्राफ़, आयत १५८)

وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ

व ऊह़ेया एलैया हाज़ल कुरआनो लेउन्ज़े-रकुम बेही व मन ब-ल-ग़.

और मेरी त़रफ़ इस कुरआन की वह़्य की गई है ताकि इसके ज़रीए़ और जहाँ तक मेरा पैग़ाम पहुँचे सबको अ़ज़ाबे इलाही से बाख़बर करूँ।

(सूरए अन्आ़म, आयत १९)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ

व मा अरसल्ना-क इल्ला रह़्मतन लिल आ़-लमी-न.

ऐ पैग़म्बर हमने आपको तमाम आ़लम के लिए रह्मत बनाकर भेजा।

(सूरए अंबिया, आयत १०७)

هُوَ الَّذِىٓ أَرْسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلْهُدَىٰ وَدِينِ ٱلْحَقِّ لِيُظْهِرَهُۥ عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْمُشْرِكُونَ

हो-वल्लज़ी अर्सला रसूलहू बिल होदा व दीनिल ह़क़्क़े लेयुज़्हेरहू अ़लद्दीने कुल्लेही, व लौ करेहल मुश्रेकू-न.

वोह अल्लाह जिसने अपने रसूल को हेदायत और दीने ह़क़ के साथ भेजा ताकि दीने ह़क़ को तमाम अदियान पर वाज़ेह ग़लबा-ओ-बरतरी अ़ता करे गरचे मुशरिकों को नागवार क्यों न गुज़रे।

(सूरए तौबा, आयत ३३)

इस मज़्मून की और भी आयतें हैं। इन दोनों बातों को नज़र में रखते हुए येह बात बिल्कुल स़ाफ़ और वाज़ेह़ है कि शैत़ान तमाम लोगों को गुमराह करना चाहता है और ख़ुदा सारी दुनिया में दीने मुक़द्दस इस्लाम की बरतरी चाहता है। फ़र्क़ येह है कि शैत़ान अपने मक़ास़िद के ह़ुस़ूल के लिए हर जाएज़-ओ-नाजाएज़ ह़र्बे इस्तेअ़्माल कर सकता है। क़त्ल, ग़ारतगरी, लूट मार, झूट, इल्ज़ाम, बोहतान। वोह सब कुछ कर सकता है।

मगर इलाही नुमाइन्दे अपने उलूही मक़ास़िद की तक्मील के लिए शरीअ़त से बाल बराबर भी इन्हेराफ़ नहीं कर सकते। वोह अपने मक़ासिद के ह़ुस़ूल के लिए नाजाएज़ त़रीक़े इस्तेअ़्माल नहीं कर सकते हैं। वोह तक़्वा और परहेज़गारी की डगर से जरा भी हट नहीं सकते हैं एक त़रफ़ अपने नाजाएज़ मक़ास़िद के ह़ुस़ूल के लिए बेशुमार रास्ते हैं और एक

त़रफ़ हदफ़-ओ-मक़स़द के मुक़द्दस होने के साथ साथ उन राहों का भी शरई और ख़ुदा पसन्द होना ज़रूरी है जो इस मक़स़द के हुसूल के लिए इख़्तेयार की जाएँ।

ह़क़ की फ़त्ह़

इस फ़र्क़ के अ़लावा एक और वाज़ेह फ़र्क़ है जिस की बेना पर इलाही नुमाइन्दे मुश्किल तरीन ह़ालात में भी मुत़्मइन हैं। शैत़ान और उसके नुमाइन्दे तमाम तर वसाएल के बावजूद मुज़्त़रिब हैं वोह फ़र्क़ क़ुरआन करीम का येह एअ़्लान है:

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ

वल अ़ाक़ेबतो लिल मुत्तक़ीन.

अन्जामकार स़ाह़ेबाने तक़्वा के लिए है।

(सूरए अअ़्राफ़, आयत १२८)

यअ़्नी आख़िर में कामियाबी तक़्वा और परहेज़गारी की होगी। यअ़्नी ज़लालत-ओ-हेदायत की क़दीमी जंग का नतीजा हेदायत की वाज़ेह और नुमायाँ कामियाबी है।

अगर बज़ाहिर एक अ़र्से से शैत़ान का सिक्का चल रहा है उसकी वजह एक येह है: इलाही नुमाइन्दे लोगों को उनके इख़्तेयार से दीन की त़रफ़ दअ़्वत देते हैं वोह चाहते हैं कि लोग अपनी पूरी आज़ादी और इख़्तेयार से दीने ह़क़ क़बूल करें उस में किसी त़रह़ का जब्र और जबरदस्ती न हो। अपने इख़्तेयार से हेदायत की त़रफ़ आना अपने जज़्बात को मर्ज़ीए ख़ुदा के मुत़ाबिक़ इस्तेअ़्माल करना दुश्वार ज़रूर है। मगर इसके नताएज इतने अ़ज़ीम हैं अगर इन्सान को इसका ज़रा भी अंदाज़ा हो जाए तो उसके लिए येह दुश्वारियाँ नेअ़्मत साबित होंगी।

जब्र नहीं है

इसके अ़लावा दुनियादार अस्बाब है। हर चीज़ अपने निज़ाम के तह़त काम कर रही है। बीज रफ़्ता रफ़्ता दरख़्त की शक्ल इख़्तेयार करता है इसके लिए वक़्त दरकार है। हर जगह मोअ्जिज़ा नहीं होता और हर काम चश्मे ज़दन में अंजाम नहीं पाता है। अगर ख़ुदा इसी त़रह़ काम करना चाहता तो दुनिया में कोई एक भी गुमराह न होता। लेकिन ख़ुदा ने त़य कर लिया है कि इन्सान अपने इख़्तेयार से हेदायत की मंज़िलें त़य करे और ज़लालत के रास्ते पर अपने इख़्तेयार से क़दम बढ़ाए।

शैत़ान ने शुरूअ़् ही से सरकशी और तुग़यानियत का रास्ता इख़्तेयार किया। अगर वोह अपने किए पर शर्मिन्दा होता और अपने गुनाह की मआ़फ़ी त़लब करता तो रह़मान-ओ-रह़ीम ख़ुदा उसको मआ़फ़ कर सकता था। लेकिन तौबा-ओ-इनाबा का रास्ता छोड़ कर ख़ुदा की मुख़ालेफ़त और शरकशी का रास्ता इख़्तेयार किया। उसने शुरूअ़् ही से इलाही नुमाइन्दों के लिए मुश्केलात ईजाद कीं। क़ाबील के दिल में ह़सद की आग भड़का कर हाबील को क़त्ल कराया। फिर येह सिलसिला चलता रहा। फ़िरऔ़न, हामान, नमरूद, क़ारून, अबू लहब, अबू जेह्ल, अ़करमा, अबू सुफ़ियान, बनी उमय्या, बनी अ़ब्बास.....सब इसी सिलसिले की कड़ियाँ हैं। उन तमाम लोगों का बस एक मुश्तरक एजेंडा था। वोह एजेंडा था "नूरे ख़ुदा को ख़ामोश कर देना" क्योंकि जब भी आफ़ताबे हेदायत ग़ुरूब हो जाएगा ज़लालत का अंधेरा फैल जाएगा तो हेदायत के दुश्मनों को ज़लालत फैलाने का खुला मैदान मिल जाएगा।

येह अफ़राद एक के बअ़्द एक ह़ुज्जते ख़ुदा को क़त्ल करते रहे। यहाँ तक कि येह सरकारे दो आ़लम स़द्रनशीने बज़्मे नबूवत-ओ-रेसालत, मह़बूबे ख़ुदा, मह़मूदे रब्बे ओ़ला ह़ज़रत मोह़म्मद मुस्त़फ़ा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व

आलेही व सल्लम की ज़ाते अक़दस पर अपने कमाल को पहुँच कर ख़त्मे नबूवत की सूरत में नुमायाँ हुआ।

शैतान ने पहले तो बहुत कोशिश की कि मक्के ही में येह नूरे हेदायत ख़ामोश हो जाए सारे क़बीलों ने क़त्ल की साज़िश-ओ-कोशिश की मगर ख़ुदा का इरादा हर एक पर ग़ालिब रहा। पैग़म्बर काफ़िरों और मुश्रिकों की आँखों में धूल डाल कर इस तरह दुश्मनों के नर्ग़े से बाहर आ गए जिस तरह बदली से चाँद निकल आया हो। मदीना में सरकारे रेसालत अभी आराम भी न करने पाए थे कि मुख़ालेफ़त का एक नया सिलसिला जंगों की सूरत में शुरूअ् हुआ जो ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात तक जारी रहा।

काफ़िरों, मुश्रिकों, यहूदियों की मुख़ालेफ़तों और मुनाफ़ेक़ीन की रीशा दवानियों और तह ब तह साज़िशों के दरमियान पैग़म्बर अकरम सल्ललाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने इस हिकमते अमली से ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाया कि ग़दीर के मैदान में हज़रत अली अलैहिस्सलाम की इमामत-ओ-वेलायते बिला फ़स्ल का एअ्लान करके दीन के तकमील की सनद हासिल कर ली। इकमाले दीन की आयत इस बात की मुस्तहकम सनद है कि आँहज़रत सल्ललाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपना पैग़ाम मुकम्मल कर दिया। अपनी रेसालत तमाम कर दी हज़रत अली अलैहिस्सलाम की वेलायत का एअ्लान दीन की तकमील के साथ साथ क़यामत तक दीन की हेफ़ाज़त की ज़मानत भी थी।

शैतान और तमाम मुख़ालेफ़ीने ख़ुदा और दुश्मनाने दीने ख़ुदा को येह एअ्लान, नबूवत से ज़्यादा गराँ गुज़रा क्योंकि एअ्लाने नबूवत के वक़्त उन्होंने येह ख़याल किया था कि पैग़म्बर की ज़िन्दगी का चिराग़ गुल होते होते येह पैग़ाम ख़ुद ब ख़ुद ख़ामोश हो जाएगा लेकिन हज़रत अली अलैहिस्सलाम की इमामत के एअ्लान ने उनके सारे मन्सूबों पर पानी फेर

दिया और ख़िरमने उम्मीद को ख़ाकिस्तर कर दिया। लेहाज़ा येह लोग अब पैग़म्बर अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की वफ़ात का बेचैनी से इन्तेज़ार करने लगे। पैग़म्बर अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के स़रीही हुक्म और बार बार के इस़रार के बावजूद ओसामा के लश्कर में शामिल नहीं हुए। पैग़म्बर अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने बअ़्द होने वाली साज़िशों से ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को बाख़बर कर दिया था और बता दिया था कि उनकी वफ़ात के बअ़्द उम्मत की त़रफ़ से ज़ुल्म का एक नया सिलसिला शुरूअ़् होगा। दिलों में पोशीदा कीने फूट फूट कर बाहर निकल आएँगे लेकिन मसअला इख़्तेयार के साथ हेदायत के रास्ते पर आने का है जब्र-ओ-इकराह का कोई सवाल नहीं है। लोगों ने पैग़म्बर अकरम स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के वाज़ेह़ इर्शादात को छोड़ कर शैत़ान की सजाई हुई दुनिया को अपने दामन में समेट लिया फिर उसकी मोह़ब्बत में यके बअ़्द दीगरे हुज्जते ख़ुदा को शहीद करते रहे।

नाक़द्रियाँ

ख़ुदावन्द आ़लम ने ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्ललाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की नबूवत के बअ़्द सुब्हे क़यामत तक इन्सानों की हेदायत के लिए सि़र्फ़ १२ इमाम मोअ़य्यन फ़रमाए। जिन में से पहले ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम और आख़िरी ह़ज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम हैं। दुश्मनाने ख़ुदा और दीने ख़ुदा ने उन में से किसी एक को आज़ादी से ज़िन्दगी बसर करने का मौक़अ़् नहीं दिया। ख़ुदा ने हेदायत के लिए १२ इमाम मोअ़य्यन किए थे। दुनिया परस्तों, इक़्तेदार के ह़रीस़ों, नूरे ख़ुदा के दुश्मनों ने ग्यारह इमामों को शहीद कर दिया। ख़ुदा ने क़यामत का जो वक़्त मोअ़य्यन फ़रमाया वोह अभी दूर था। लेहाज़ा ख़ुदा ने आख़िरी आफ़ताबे हेदायत को दुश्मनों की दस्तरस से दूर करके ग़ैबत के पर्दे में रख दिया।

ख़ुदावन्द आ़लम जब्र-ओ-इकराह से काम लेना नहीं चाहता। हर क़दम पर मोअ्जिज़े पेश करना उसकी सुन्नत नहीं है। लेहाज़ा इस आफ़ताबे हेदायत की हेफ़ाज़त ज़रूरी थी ताकि दुश्मन अपना सारा कस बल निकालें और उस आ़लमी हुकूमत के लिए रफ़्ता रफ़्ता अफ़राद तैयार हो जाएँ जिसका वअ्दा ख़ुदा ने अपने रसूल से किया है।

इस बात को दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ बयान किया जा सकता है।

१. ख़ुदावन्द आ़लम ने तमाम इन्सानों की हेदायत-ओ-सआ़दत के लिए दीने मुक़द्दसे इस्लाम को नाज़िल फ़रमाया है।

२. ख़ुदावन्द आ़लम ने पैग़म्बरे आख़िर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की नबूवत-ओ-रेसालत को आ़लमी-ओ-अबदी नबूवत-ओ-रेसालत क़रार दिया है।

३. ख़ुदावन्द आ़लम ने अंबिया-ओ-मुरसलीन और उनके हमराह शरीअ़त इसलिए नाज़िल फ़रमाई ताकि दुनिया के गोशे गोशे में अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ क़ाएम हो सके, कोई किसी पर ज़ुल्म न करे। न शिर्क-ओ-कुफ़्र के ज़रीए अपने आप पर ज़ुल्म करे और न हुक़ूक़ ग़स़्ब करके दूसरों पर ज़ुल्म करे।

४. ख़ुदावन्द आ़लम ने अपनी मस़लेहतों की बेना पर (जिसको वोह ख़ुद बेहतर जानता है) सारी दुनिया में अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ राएज करने और हर त़रह के ज़ुल्म-ओ-जौर के ख़ात्मे की ज़िम्मेदारी हज़रत हुज्जत बिन हसन अल-अ़स्करी अ़लैहेमस्सलाम के सिपुर्द की है। शायद इसी बेना पर हज़रत वलीए अ़स्र अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ रवायतों में येह जुम्ला बार बार और जगह जगह नज़र आता है:

يَمْلَأُ الْأَرْضَ قِسْطاً وَعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْماً وَجَوْرًا

यम्लउल अर्ज़ा क़िस्तन व अ़द्लन बअ़्-द मा मोलेअत ज़ुल्मन व जौरा.

वोह ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से इस त़रह़ भर देंगे जिस त़रह़ वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी।

(अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़.१८८)

५. ख़ुदावन्द अ़ालम येह चाहता है कि लोग अपने इरादा-ओ-इख़्तेयार से इस्लामी हुकूमत के लिए ज़मीन हमवार करें। क्योंकि जब्र-ओ-इकराह सुन्नते इलाही के ख़ेलाफ़ है।

६. ख़ुदावन्द अ़ालम ने इस चौदह सौ साल के अ़र्से में दुनिया वालों की हेदायत-ओ-सआ़दत के लिए १२ मोह़म्मद १२ अ़ली १२ ह़सन १२ हुसैन..... अ़त़ा किए जिनमें से हर एक फ़ज़्ल-ओ-कमाल, इ़ल्म-ओ-मअ़्रेफ़त में एक दूसरे की त़रह़ था। जिनको तमाम मख़्लूक़ात पर वाज़ेह और नुमायाँ बरतरी ह़ासि़ल थी। दुनिया वालों ने उनमें से किसी एक की क़द्र न की अगर लोगों ने क़द्र की होती तो जंगे स़िफ़्फ़ीन के मौक़ेअ़् पर जब जंग बिल्कुल इन्तेहाई मरह़ले पर थी और फ़त्ह़ बस दो क़दम पर थी ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को जनाब मालिके अश्तर को वापस बुलाना न पड़ता। अगर लोगों ने क़द्र की होती तो ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम गोशानशीन न होते। अगर लोगों ने क़द्र की होती तो इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम को मुआ़विया से सुल्ह न करना पड़ती। अगर लोगों ने क़द्र की होती तो यज़ीद जैसे अफ़राद बर सरे इक़्तेदार न आते और इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद न होते। अगर लोगों ने क़द्र की होती तो हारून रशीद इमाम मूसा काज़िम अ़लैहिस्सलाम को क़ैद न कर पाता। अगर लोगों ने क़द्र की होती तो इमाम अ़ली नक़ी और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहेमस्सलाम को मदीना के बजाए सामर्रा मे जिला वत़नी की ज़िन्दगी बसर न करना पड़ती।

मुख़्तसर येह कि अगर लोगों ने उन कश्तियाने नजात, हादियाने बरहक़, मोहाफ़ेज़ाने दीने हक़, रहनुमायाने सेराते मुस्तक़ीम, हम वज़्ने क़ुरआन अज़ीम की क़द्र की होती और उनकी उस क़द्र-ओ-मन्ज़ेलत को तस्लीम किया होता जो ख़ुदावन्द आलम ने उनके लिए मख़्सूस की थी तो ज़ालिमों, जाबिरों को उनको शहीद करने की जुरअत न होती। अगर क़द्र की होती तो बक़ीअ् और सामर्रा के मज़ारात मुन्हदिम न होते।

७. चूँकि ख़ुदावन्द आलम ने अपने इल्म-ओ-मसलेहत की बेना पर हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के बअ्द लोगों की हेदायत के लिए सिर्फ़ १२ इमाम मोअय्यन फ़रमाए थे। जिनमें से ग्यारह लोगों की नाक़द्रियों की बेना पर ज़ालिमों के हाथों शहीद कर दिए गए।

८. अभी ख़ुदावन्द आलम का वोह वअ्दा पूरा नहीं हुआ जो उसने अपने हबीब से किया था कि उन के दीन को तमाम अदियाने आलम पर बरतरी अता फ़रमाएगा।

९. लेहाज़ा अब सूरते हाल येह है कि:

अ: उस इमामे आख़िर को बक़िया ग्यारह की तरह ज़ाहिर कर दे और ज़ालिम-ओ-जाबिर इस आख़िरी हुज्जत को भी क़त्ल कर दें।

ब: इस आख़िरी हुज्जत की हेफ़ाज़त के लिए दुनिया का निज़ाम बदल दिया जाए। यअ्नी इमाम ज़ाहिर रहे लोग तलवार चलाएँ असर न हो। ज़हर खिलाएँ असर न हो। सामने मौजूद हों लोग तीर चलाएँ मगर असर न हो। निज़ामे काएनात की जब्रिया तब्दीली सुन्नते इलाही के ख़ेलाफ़ है।

स: इस आख़िरी हुज्जत को दुनिया से उठा लिया जाए। तो इस सूरत में निज़ामे काएनात दरहम बरहम हो जाएगा क्योंकि दुनिया की बक़ा के लिए ज़मीन में एक हुज्जत का वजूद ज़रूरी है।

द: इस हुज्जत को इसी ज़मीन पर बाक़ी रखा जाए। निज़ामे काएनात के तअ़ल्लुक़ से सुन्नते इलाही भी तब्दील न हो। इस आख़िरी हुज्जत को लोगों की निगाहों से दूर कर दिया जाए। और इस त़रह़ दूर कर दिया जाए कि सामने रहें मुलाक़ात करें लोग पहचान न सकें। और येह सिलसिला उस वक़्त तक क़ाएम रहे जब तक लोग अपने इख़्तेयार से उनकी फ़रमाबरदारी के लिए पूरी त़रह़ तैयार न हो जाएँ।

इस सूरते ह़ाल को "ग़ैबत" के नाम से याद करते हैं। जनाब ख़ाजा नसीरुद्दीन त़ूसी अ़लैहिर्रह्मा ने अपनी किताब तज्रीदुल एअ़्तेक़ाद में इस ह़क़ीक़त को इस त़रह़ नेहायत ह़सीन और जामेअ़् अंदाज़ में बयान फ़रमाया है:

وُجُوْدُهُ لُطْفٌ وَ تَصَرُّفُهُ لُطْفٌ آخِرُ وَ عَدَمُهُ مِنَّا

वुजूदोहू लुत़्फ़ुन व तस़र्रोफ़ोहू लुत़्फ़ुन आख़ेरो व अ़-दमोहू मिन्ना.

उनका वजूद ख़ुदा की एक नेअ़्मत है। उनका फ़रमानरवा होना एक और नेअ़्मत है और उनकी ग़ैबत का सबब हम हैं।

इस त़रह़ ज़माने के ह़ालात को देखते हुए ह़ज़रत वलीए अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के लिए ग़ैबत लाज़िम-ओ-ज़रूरी थी। चूँकि ख़ुदावन्द आ़लम के इ़ल्म में येह तमाम वाक़ेआ़त थे और वोह येह जानता है कि अगर येह ग़ैबत यकबारगी वाक़ेअ़् होगी तो लोग दीने ह़क़ से बरगश्ता हो जाएँगे।

उसकी रह़मते वासेअ़ा ने येह तय किया कि आख़िरी हुज्जत की इमामत के साथ साथ उनकी ग़ैबत का भी तज़्केरा होता रहे। ताकि स़ाहेबाने ईमान इस अ़ज़ीम वाक़ेए़ के लिए ज़ेह्नी त़ौर पर आमादा रहें इस बेना पर ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से लेकर आज आख़िरी इमाम तक हर एक ने किसी न किसी अंदाज़ में ह़ज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत और ग़ैबत के ह़ालात का तज़्केरा फ़रमाया है। उन्हीं ह़दीसों में येह बात भी वाज़ेह कर दी गई कि दो त़रह़ की ग़ैबत होगी:

अ: मुख़्तस़र ग़ैबत

ब: त़ूलानी ग़ैबत

मुख़्तसर ग़ैबत को ग़ैबते स़ुग़रा और त़ूलानी ग़ैबत को ग़ैबते कुबरा के नाम से याद किया जाता है।

ग़ैबते स़ुग़रा की ख़ुस़ूस़ियत है कि इस दौर में गरचे ह़ज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलास तक अ़वामुन्नास की रसाई नहीं थी मगर ह़ज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम ने अपनी त़रफ़ से नाएब मोअ़य्यन किए थे जो लोगों और ह़ज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के दरमियान राबेता थे। जिनका किसी ह़द तक तफ़स़ीली तज़्केरा आप आइन्दा स़फ़्ह़ात में मुत़ालेआ़ फ़रमाएँगे। येह ग़ैबते स़ुगरा २६० हि. से ३२९ हि. तक यअ़्नी ६९ साल तक जारी रही।

३२९ हि. में जब ह़ज़रत के आख़िरी नाएब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी का इन्तेक़ाल हो गया तो ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ हो गया जिसका सिलसिला आज तक जारी है।

अलबत्ता हमारी दुआ़एँ और हमारे नेक अअ़्माल ग़ैबते कुबरा की मुद्दत को कम करके ह़ज़रत के ज़ह़ूरे पुरनूर में तअ़्जील का सबब बन सकते हैं।

इस ग़ैबते कुबरा मे इमाम अ़लैहिस्सलाम हमारी निगाहों से ओझल ज़रूर हैं हमसे ग़ाफ़िल नहीं हैं। वोह हमारी नाक़द्रियों के बावजूद हमारी हेफ़ाज़त करते रहते हैं।

इस ग़ैबते कुबरा में इमाम अ़लैहिस्सलाम ने हमें आज़ाद नहीं छोड़ा है बल्कि हमें उ़लमा-ओ-फुक़्हाए अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के हवाले किया। "मुहाफ़ेज़ाने वेलायत" के ज़ैल में इसका तज़्केरा किया गया है।

आख़िर में इस बात का तज़्केरा बहुत ज़रूरी है - एक दिन येह ग़ैबत का सिलसिला तमाम होगा फ़र्ज़न्दे रसूल हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम ज़हूर फ़रमाएँगे। मुख़्लिस और जाँनिसार अफ़राद के हमराह होंगे वोह पूरी दुनिया में तौहीद का परचम बलन्द करेंगे। शिर्क का ख़ात्मा होगा, ज़ुल्म-ओ-जौर नाबूद होगा। हर तरफ़ अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ आ़म होगा। किसी एक पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न होगा। दीने हक़ तमाम अदियान-ओ-मकातिब पर ग़ालिब आएगा। शैतान और उसके साथियों की हज़ार हा साल की मेहनत ख़ाक में मिल जाएगी, शैतान की तमाम साज़िशें नाकाम होंगी, हक़ की फ़त्ह होगी। ग़दीरी इस्लाम का परचम लहराएगा और शैतान मारा जाएगा, तब लोगों को यक़ीन होगा ख़ुदा का वअ़्दा हक़ है।

उस रोज़े रोशन की उम्मीद में कि
सहर क़रीब है दिल से कहो न घबराए

इस वक़्त जो किताब आपके सामने है उन मज़ामीन का मज्मूआ है जो "अल क़ाएम अल मुन्तज़र" के शअ़्बान नंबर के मुख़्तलिफ़ शुमारों में शाएअ़् हो चुके हैं।

ग़ैबते सुग़रा के ज़माने में यूँ तो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के मुतअ़द्दिद वकील थे मगर चार अफ़राद को ख़ास़ वकालत-ओ-नेयाबत हास़िल थी। येह हज़रात इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के नज़्दीक नेहायत ज़्यादा मोअ़्तबर, मोअ़्तमद और मुस्तनद थे। इन हज़रात को "नव्वाबे अरबअ़्" (चार

नाएबीन) के नाम से याद किया जाता है। इन नाएबीन की मुख़्तस़र सवानेह ह़यात आप आइन्दा स़फ़्ह़ात में मुलाह़ेज़ा फ़रमाएँगे। इससे अंदाज़ा हो जाएगा कि इन ह़ज़रात ने किस क़द्र इमामत की मुख़्लेस़ाना ख़िदमत की है और करीम इब्ने करीम इमाम अ़लैहिस्सलाम ने अपने ख़िदमतगुज़ारों को क्या दर्जा मरह़मत फ़रमाया है।

चौथे नाएब जनाब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी के इन्तेक़ाल के बअ़्द ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ हो गया। ग़ैबते कुबरा में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का कोई ख़ास़ नाएब नहीं है। बल्कि इमाम अ़लैहिस्सलाम ने येह ज़िम्मेदारी मकतबे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के फ़ुक़्हा-ओ-मुज्तहेदीन के सिपुर्द की है।

इस बेना पर इस दौरे ग़ैबते में फ़ुक़्हा और मुज्तहेदीन का एह्तेराम हम सबकी ज़िम्मेदारी है। इस सिलसिले में आख़िरी मज़्मून मुह़ाफ़ेज़ाने वेलायत का मुत़ालेआ मुफ़ीद होगा।

ख़ुदा हम सबको इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की मुख़्लेस़ाना ख़िदमत की बेश बहा तौफ़ीक़ करामत फ़रमाए। आमीन।

ख़ुदावन्द आ़लम मोह़म्मद-ओ-आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम पर अपनी अ़ज़मतों और रह़मतों की वुस्अ़तों के मुत़ाबिक़ बेपनाह दुरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमाए।
और हम सब को मोह़म्मद-ओ-आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम के गुलामों के गुलामों में शुमार फ़रमाए।
और हम सबको येह सआ़दत नस़ीब फ़रमाए कि हम क़ाएमे आले मोह़म्मद अ़लैहिस्सलाम के ज़ह़ूरे पुर नूर के लिए ज़मीन हमवार कर सकें।
और उनके मुख़्लिस अअ़्वान-ओ-अन्स़ार में शुमार हों।
आमीन रब्बुल आ़लमीन।

नेयाबत की ज़रूरत

क़ारेईन पर येह बात वाज़ेह है कि दो त़रह़ की ग़ैबतें हैं, ग़ैबते सुग़रा और ग़ैबते कुबरा। ग़ैबते सुग़रा दरअस्ल मुक़द्दमा है ग़ैबते कुबरा का।

सन २५५ हिजरी में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत हुई। २६० हिजरी में ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत वाक़ेअ् हुई। इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ्द अ़ब्बासी ख़लीफ़ा के सिपाहियों ने इमाम अ़लैहिस्सलाम के मकान को घेर लिया और उनके फ़र्ज़न्द और जानशीन की तलाश में लग गए।

तारीख़ में दर्ज येह वाक़ेआ ख़ुद इस बात पर दलील पेश कर रहा है कि इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द की ज़िन्दगी ख़त़रे में थी और ख़त़रा ऐसा वैसा भी नहीं, जान की ख़त़रा। लेहाज़ा ज़रूरी था कि जान की ह़ेफ़ाज़त और इमामत-ओ-सिलसिलए नबूवत की बक़ा के लिए लोगों की नज़रों से ग़ाएब हो जाएँ। ह़ज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इसकी पेशीनगोई इस त़रह़ फ़रमाई है:

ثُمَّ يَغِيبُ عَنْهُمْ إِمَامُهُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ وَيَكُونُ لَهُ غَيْبَتَانِ....

सुम्मा यग़ीबो अ़न्हुम इमामोहुम माशा अल्लाहो व यकूनो लहू ग़ैबताने....

फिर जब तक ख़ुदा चाहेगा उनका इमाम उनसे ग़ैबत इख़्तेयार करेगा और उसके लिए दो ग़ैबतें होंगी।

(बेह़ारुल अनवार, जि.५२, स़.३८०)

इन्तेख़ाबे नव्वाबे ख़ास़

इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द शीअ़याने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम शक-ओ-शुब्हा, ह़ैरत-ओ-सरगरदानी की ह़ालत में थे। अलबत्ता शीओं की येह ह़ालत सि़र्फ़ इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की रेह़लत की वज़ह से नहीं थी बल्कि उस वक़्त के सियासी ह़ालात और अ़ब्बासी ख़ुलफ़ा की जानिब से अइम्मा के लिए जो धड़का लगा रहता था और लोगों के लिए राबेत़ा की राहें बज़ाहिर मसदूद थीं, इस वजह से भी शीअ़याने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम मसाएल में उलझे हुए थे और इसके नतीजे में बअ़्द के मराह़िल में शीआ़ मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में भी बटने लगे थे और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द मुश्केलात यअ़्नी शक-ओ-तरद्दुद और मुख़्तलिफ़ गरोह में बटना दुगना हो गया और नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि बअ़्ज़ शीआ़ अपने अ़क़ाएद से बरगश्ता हो गए। दरअस़्ल येह ग़ैबते सुगरा का आग़ाज़ था और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम जिस्मानी त़ौर पर लोगों की नज़रों से ग़ाएब थे और ख़ुद इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने ह़ेफ़ाज़त के पेशे नज़र हर एक से अपने फ़र्ज़न्दों का तआ़रुफ़ नहीं कराया था। बक़ौले शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह़्मा यहाँ तक कि इमाम (ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम) ने अपने पैरवों की एक तअ़्दाद से अपने फ़र्ज़न्द का तआ़रूफ़ नहीं कराया था।

(अल-इर्शाद, स़.३४५)

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने किसी से अपने फ़र्ज़न्द, अपने जानशीन और अपने बअ़्द इमामे वक़्त और ह़ुज्जते ख़ुदा का तआ़रुफ़ न कराया हो। बल्कि जिन लोगों पर एअ़्तेमाद था उनसे तआ़रुफ़ कराया था। अह़मद बिन इस्ह़ाक़ क़ुम्मी को ख़त़ के ज़रीए मुत्तलअ़् किया था और दूसरे मोअ़्तमद लोगों को बाख़बर करने को

कहा था कि लोग उनके जानशीन से बाख़बर हो जाएँ और ख़बर आम भी न होने पाए।

बअ़्ज़ वाक़ेआत

(१) मदीना के कुछ लोग जो औलादे अबू तालिब अ़लैहिस्सलाम में से थे और उनका अ़क़ीदा हक़ था, येह लोग इमाम हसन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के एक फ़र्ज़न्द और उनके बारहवें इमाम होने के क़ाएल थे लेकिन इमाम हसन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की रेहलत के बअ़्द उन में से कुछ लोग अपने अ़क़ीदे से मुन्हरिफ़ हो गए।

(उसूले काफ़ी, बाब मौलदुस्साहब)

(२) मोहम्मद बिन महज़ियार ग्यारहवें इमाम अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द शक-ओ-शुब्हा का शिकार हो गए। जब कि उनके वालिद इब्राहीम बिन महज़ियार, अहवाज़ में हज़रत वलीए अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के वकील थे। मरहूम शेख़ कुलैनी अ़लैहिर्रह्मा ने रवायत की है कि जब मोहम्मद बिन इब्राहीम के वालिद ने रेहलत की उस वक़्त उनके पास सह्मे इमाम की कुछ रक़म थी और वालिद ने उनसे वसीयत की थी कि रक़मे सह्मे इमाम में बड़ी एह्तेयात से काम लेना और सहीह लोगों तक उसे पहुँचाना। मोहम्मद बिन इब्राहीम शक-ओ-तरद्दुद की हालत में इस रक़म को लेकर इराक़ गए और फ़ैसला किया कि अगर क़ानेअ् करने वाली दलीलें पेश न की गईं तो रक़म को किसी की तहवील में न दूँगा और वापस ले आऊँगा। लेकिन जहाँ वोह ठहरे थे वहाँ एक क़ासिद आया और रक़म के सिलसिले में निशानी बयान करके रक़म को अपनी तहवील में ले लिया। इसके बअ़्द मोहम्मद बिन इब्राहीम ग़मज़दा हो गए और इसी हालत में थे कि कुछ दिनों बअ़्द आपके नाम एक ख़त सादिर हुआ और आपको बाप की जगह पर वकील मुन्तख़ब किया गया है।

(उसूले काफ़ी, २/४५६)

(३) मरहूम शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह्मा ने नक़्ल किया है कि अबू रजा मिस्री ने रवायत की है कि: इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की रेह़लत के दो साल बअ़्द मैंने उन ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम के जानशीन की तलाश में सफ़र किया लेकिन मुझे कुछ सुराग़ न मिला। तीसरे साल मैं मदीने में इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द की तलाश में था। अबू ग़ानिम ने मुझे दअ़्वत दी कि शाम को उनके पास पहुँचूँ। उस वक़्त बैठा हुआ येह सोच रहा था कि अगर इमाम अ़लैहिस्सलाम का कोई लड़का होता तो यक़ीनन अब तीन साल बअ़्द ज़ाहिर हो जाता। अचानक किसी हातिफ़ की आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची लेकिन मैंने उसे न देखा, वोह कह रहा था: ऐ नस्र बिन अ़ब्दुल्लाह (अबू रजा) मिस्र वालों से कहो: क्या तुम जिन पैग़म्बरों पर ईमान लाए हो उनको देखा है? नस्र कहते हैं कि मैं उस वक़्त तक अपने वालिद का नाम नहीं जानता था क्योंकि मैं मदाएन में पैदा हुआ था और नूफ़ली मुझे मिस्र ले आए थे और अपने वालिद की वफ़ात के बअ़्द मैंने मिस्र ही में परवरिश पाई। येह सुनने के बअ़्द मैं उठा और चला लेकिन अबू ग़ानिम के पास नहीं गया बल्कि मिस्र की राह इख़्तेयार की।

(कमालुद्दीन २/४९१, बाब ४५, ह़.१५)

(४) ह़सन बिन अब्दुल मजीद कहते हैं :"मैं ह़ाजिज़ बिन यज़ीद (जो बग़दाद में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वकीलों में से एक वकील थे और उ़स्मान बिन सईद के अव्वल दर्जे के मुआविन थे) के बारे में शक में पड़ गया। फिर मैंने कुछ रक़म जमा की और सामर्रा आ पहुँचा। मेरे नाम एक ख़त मिला जिसमें तह़रीर था:

हमारे बारे में और जो हमारे अम्र का जानशीन हो उन पर शक जाएज़ नहीं है जो कुछ साथ लाए हो उसे ह़ाजिज़ बिन यज़ीद के ह़वाले कर दो।

(उसूले काफ़ी, बाब मौलदुस़्साह़ब)

अगर हम ह़दीस की किताबों का मुतालेआ करें तो इस त़रह़ के वाक़ेआत बहुत मिलेंगे। लेकिन शक-ओ-शुब्हात के असरात की वजह से शीआ ह़ज़रात कई फ़िर्क़ों में तक़सीम हुए।

मसऊ़दी ने "मुरूजुज़्ज़ह्ब" में २० फ़िर्क़ों का तज़्केरा किया है। स़अ़्द क़ुम्मी ने "अल मक़ालात वल फ़ेरक़" में पंद्रह फ़िर्क़ों का नाम लिया है। नोबख़्ती ने "फ़ेरक़ुश्शीआ" में और शेख़ मुफ़ीद ने "अल फ़ुस़ूलुल मुख़्तारह" में चौदह फ़िर्क़ों के नाम ज़िक्र किए हैं। शहरिस्तानी ने "अल मेलल वन्नेहल" में ग्यारह फ़िर्क़ों के नाम बताए हैं।

उ़लमा के दरमियान मशहूर है कि इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के बअ़्द इमामिया चौदह फ़िर्क़ों में तक़सीम हुए और उ़लमाए मआ़सिर के नज़रिए के मुत़ाबिक़ येह चौदह फ़िर्क़े उस़ूले मज़हब के एअ़्तेबार से पाँच फ़िर्क़ों को तश्कील देते हैं।

उन तमाम फ़िर्क़ों में जो स़फ़्ह़ए तारीख़ पर अक्सरीयत में बाक़ी है वोह है फ़िर्क़ए इमामिया और जो इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की इमामत पर अ़क़ीदा रखता है।

तज़क्कुर

उस वक़्त के शीआ बुज़ुर्गों और सरबरावुर्दह अफ़राद की होशमंदियों और मुदब्बेराना मन्सूबा बंदियों के बावजूद हम येह मुशाहेदा करते हैं कि शीआ मआ़शरे को एक हौलनाक ह़ालात ने घेर लिया था और ख़ुद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने उन ह़ालात की पेशीनगोई भी कर दी थी। और ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम किसी भी त़रह़ से शीओं के ह़ालात से ग़ाफ़िल न थे और जैसा कि ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ख़ुद फ़रमाते हैं:

न तो हम तुम्हारे ह़ालात से बेख़बर हैं और न ही तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल हैं, अगर ऐसा होता तो तुम कब के ह़लाक हो गए होते।

मुबस्सेरीन येह बात लिखते हैं कि अगर सरकर्दह और ख़वास़े शीआ और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के दरमियान राबेत़ा न होता तो शीईयत की असास ही नाबूद हो जाती।

लेहाज़ा ऐसी स़ूरते ह़ाल पैदा न हो और लोग एक त़ूलानी मुद्दत तक के लिए एक ज़ाहिरी इमाम अ़लैहिस्सलाम के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए आमादा हो जाएँ, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने ग़ैबत के इस इब्तेदाई दौर में अपने और शीओं के दरमियान बराहेरास्त राबेत़ा और वसीले को "ख़ास़ नुमाइन्दों" के ज़रीए़ बरक़रार रखा और इस त़रह़ का राबेत़ा इमाम के दीदार से मह़रूम रहने वाली क़ौम के लिए एक त़रह़ के सुकून और इत़्मीनाने क़ल्ब का सबब था।

नाएबीन का अहम रोल

नव्वाबे अरबआ ने अपनी संजीदा रविश और मुदब्बेराना और आ़क़ेलाना रहबरीयत के ज़रीए़ शीओं की बिगड़ी हुई ह़ालत को अच्छी ह़ालत में तब्दील किया और लोगों को सरगरदानी और गुमराही से नजात दिला कर टुकड़ों में बटने से रोक लिया। ज़ाहिर है कि येह सारी चीज़ें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की रहनुमाई में अंजाम पाईं।

पहले नाएब के दौर में अगरचे कई गरोह थे जो इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द के बारे में मुख़्तलिफ़ नज़रियात रखते थे लेकिन तारीख़ येह बताती है कि दूसरे नाएब की सरगर्मियाँ और तअ़्लीमात का दौर बड़ा ही कमियाबी का दौर था और दूसरे नाएब की तअ़्लीमात शीओं की मह़फ़िलों में आ़म हो चुकी थीं। और इस त़रह़ दूसरे गरोह मुज़्मह़िल

हो गए।

और इसी त़रह़ तीसरे और चौथे नाएब के दौर में शीओं की जदीद नस्ल उन दोनों ह़ज़रात के अक़वाल और बयानात को इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का बयान और क़ौल समझ कर ज़्यादा मुत़ीअ़-ओ-फ़रमाँबरदार थी और ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम के दीदार की मुश्ताक़ थी।

हर त़ौक़ीअ़् में एक ही दस्तख़त़

इस जदीद नस्ल ने येह देखा कि चारों नाएबीन को स़ादिर होने वाली तौक़ीआत में एक ही दस्तख़त़ पाई जाती है, इससे उनके ईमान को और भी तक़्वीयत पहुँची।

जब येह बात बहुत आ़म हो गई कि तौक़ीआते इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ही के दस्तख़त़ से आती हैं तो बस चौथे नाएब को आख़िरी तौक़ीअ़् स़ादिर हुई जिसके ज़रीए़ ग़ैबते सुगरा के ख़ात्मे और ग़ैबते कुबरा के आग़ाज़ का एअ़्लान हुआ। अब ज़ेह्न मुकम्मल त़ौर पर आमादा हो चुके थे और ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम की त़ूलानी ग़ैबत के लिए ज़मीन हमवार थी।

इस त़रह़ टुकड़ियों में बटे हुए शीआ भी मुज्तमअ़् हो गए। शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह़्मा फ़रमाते हैं कि उन चौदह फ़िर्क़ों में से स़िर्फ़ फ़िर्क़ए इमामिया बाक़ी बचा है (येह बात आप अ़लैहिर्रह़्मा ने सन ३७३ हिजरी में तह़रीर फ़रमाई जब आप किताब "अल-फ़ुस़ूल अल-मुख़्तारा" लिख रहे थे) इसके आगे आप तह़रीर फ़रमाते हैं कि येह गरोह उ़लमा, मुतकल्लेमीन, नज़्ज़ार, स़ालेह़ीन, आ़बेदीन, फ़ुक़हा, मोह़द्देसीन, अदिब्बा और शाए़रों के एअ़्तेबार से सबसे बड़ा गरोह है और येह ह़ज़रात शीआ इमामिया की आबरू हैं, सरपरस्त हैं और लोगों के दरमियान मूरिदे एअ़्तेमाद हैं।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.८४)

नेयाबत का बुनियादी हदफ़-ओ-मक़सद

नुमाइन्दगी और नेयाबत दो बुनियादी मक़सद रखते हैं:

१. उमूमी ज़ेह्नों को "ग़ैबते कुबरा" के लिए आमादा करना और आहिस्ता आहिस्ता लोगों को इमाम की ग़ैबत में रहने का आदी बनाना। और इसी तरह ग़ैबत के मौज़ूअ् से हर तरह की ग़फ़्लत से लोगों को दूर रखना। अगर इमाम अलैहिस्सलाम अचानक ग़ैबत में चले जाते तो आम तौर पर लोग आपके वजूद का मुतलक़ इन्कार कर देते और मुन्हरिफ़ हो जाते। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के नाएबीने ख़ास ने ग़ैबते सुगरा में ग़ैबते कुबरा के लिए ज़ेह्न साज़ी के काम को बहुस्न-ओ-ख़ूबी अंजाम दिया।

२. इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के चाहने वालों और मानने वालों की रहनुमाई और इज्तेमाई तौर पर शीओं को इकट्ठा करना और उनकी हेफ़ाज़त करना। नेयाबते ख़ास्सा ने इमाम अलैहिस्सलाम की अदम मौजूदगी की ख़ला को एक हद तक पुर कर दिया और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने उनके ज़रीए शीओं की रहनुमाई फ़रमाई और अपनी अदम मौजूदगी में होने वाले नुक़सान का इलाज किया।

अगर येह नेयाबत न होती तो गुमराही किस हद तक पहुँचती इसका अंदाज़ा हम नहीं कर सकते। ख़ात्मे पर नव्वाबे अरबआ की बअ्ज़ मुश्तरक ज़िम्मेदारियों और उनकी फ़अ्आलियत का ज़िक्र ज़रूरी है।

नव्वाबे अरबआ की ज़िम्मेदारियाँ और फ़अ्आलियत

यूँ तो हम अलग अलग नाएबीन की ज़िन्दगी पर रोशनी डालते वक़्त उनकी मख़्सूस ज़िम्मेदारियों की तरफ़ इशारा करेंगे लेकिन यहाँ मुश्तरक ज़िम्मेदारियों को इख़्तेसार के साथ लिख रहे हैं:

१- इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के रहने की जगह को पोशीदा रखना

येह दो त़रफ़ा ज़िम्मेदारी है। इस त़रह़ कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के मह़ल्ले सुकूनत को न सि़र्फ़ दुश्मनों से बल्कि शीओं से भी मख़्फ़ी रखना। अपने वोकला को भी इसकी ताकीद की कि हरगिज़ ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम के नाम को भी लोगों के दरमियान में न लाएँ और इस त़रह़ शीओं को अ़ब्बासियों के ख़त़रे से मह़फ़ूज़ रखें।

दूसरी त़रफ़ नाएबीन पर येह लाज़िम था कि वोह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वुजूद को मूरिदे एअ्तेमाद शीओं में साबित करें ताकि इन्हेराफ़ और शक-ओ-शुब्हा ईजाद न हो।

और बअ़्ज़ मवाक़ेअ़् पर मूरिदे इत़्मीनान लोगों से ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात और मुलाक़ात की जगह बताते ताकि दिल से शक के ग़ुबार छटते रहें।

इन्शाअल्लाह हम इस ज़िम्मेदारी को अच्छी त़रह़ वाज़ेह करने के लिए दूसरे नाएब जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान रह्मतुल्लाह अ़लैह की शर्ह़े ज़िन्दगी में नक़्ल करेंगे।

२- शीओं को फ़िर्क़े बंदियों से रोकना

इस सिलसिले में कुछ ह़द तक तह़रीर कर चुके हैं।

३- फ़िक़्ही मसाएल और अ़मली-ओ-अ़क़ाएदी गुत्थियों को सुलझाना

शीओं के फ़िक़्ही और शरई मसाएल को इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश करते और जवाबों को लोगों तक पहुँचाते थे। दूसरे नाएब

के दौर में ऐसे सवालों की भरमार थी। तौक़ीआत के मुत़ालेए़ से इसका अंदाज़ा होगा।

४- मह्दवीयत के झूटे दअ़्वेदारों से मुक़ाबला

इसकी भी मिसालें इन्शाअल्लाह दूसरे नाएब अ़लैहिर्रह्मा के ह़ालात में नक़्ल करेंगे।

५- इमाम अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ अमवाल की तह़्सील-ओ-तक़सीम

नाएबीने ख़ास़ शीओं से या मुक़ामी वोकला से ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ रक़म को जमअ़् करते और उसको किसी न किसी त़रीक़े से इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचाते थे और फिर जिस त़रह़ इमाम अ़लैहिस्सलाम हुक्म देते, ख़र्च करते थे।

६- वकील तैयार करना या वकील मोअ़य्यन करना

गुज़श्ता अइम्मा के दौर में मुक़ामी वकील का रवाज था। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के बअ़्द भी येह बाक़ी रहा अलबत्ता वोकला का तअ़य्युन नव्वाबे ख़ास़ के ज़रीए़ होता था और येह वोकला भी नाएबे ख़ास़ के साथ कभी कभी इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात करते थे लेकिन बअ़्ज़ वोकला स़िर्फ़ एक ही दफ़्आ और बअ़्ज़ कई दफ़्आ मिले। दूसरे नाएब के दस वकील बग़दाद मे थे, सबसे क़रीब हुसैन बिन रौह़ थे और बअ़्द में येह तीसरे नाएब क़रार पाए।

इन्शाअल्लाह बक़िया तफ़स़ील नाएबीने ख़ास़ के ह़ालाते ज़िन्दगी में तह़रीर होगी।

पहले नाएबे ख़ास़
जनाब उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैह

ह़ज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के पहले नाएबे ख़ास़ जनाब उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैहे थे। शेख़ुत्ताएफ़ा जनाब मोह़म्मद बिन ह़सन तूसी अपनी गराँक़द्र किताब "अल-ग़ैबत" में लिखते हैं सुफ़रा जो अइम्मए अत़हार अ़लैहिमुस्सलाम की जानिब से नेकी और अच्छाई के साथ याद किए गए हैं, उनमें पहले जिनको ह़ज़रत हादी अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने मोअ़्तबर और मोवस्सक़ क़रार दिया वोह अबू अ़म्र उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैह हैं।

(किताबुल ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़.३५२)

नाम-ओ-अल्क़ाब

आप का नाम "उ़स्मान" था, वालिद का नाम "सईद"। रेजाले कश्शी ने आप का नाम "ह़फ़्स़ बिन अ़म्र" लिखा है लेकिन तमाम उ़लमाए रेजाल ने इसे ग़लत क़रार दिया है। आपका स़ह़ीह़ नाम "उ़स्मान बिन सईद" ही बताया गया है।

आपकी दो कुनियत बयान हुई हैं। (१) अबू अ़म्र और (२) अबू मोह़म्मद। "अबू अ़म्र" इस इसलिए कहते हैं कि आपके पर दादा "अ़म्र" थे और अबू मोह़म्मद इस बेना पर कहा जाता है कि आपके बेटे का नाम "मोह़म्मद" था। रेजाली और रुवाई तमाम किताबों में आपकी कुनियत "अबू अ़म्र" ही नक़्ल हुई है। अलबत्ता सफ़ीनतुल बेह़ार और बेहारुल अनवार में अबू मोह़म्मद नक़्ल हुई है।

शीओं के दरमियान में आप चार अल्क़ाब से मशहूर हैं।

(१) सोमान या ज़य्यात (रोग़न फ़रोश)

आपको इस लक़ब से इसलिए याद किया जाता है कि आप अपने मन्सबे वकालत-ओ-नेयाबत को आ़म लोगों से छिपाए रखने के लिए तेल की तिजारत करने लगे और इस ज़रीए़ से ख़लीफ़ए वक़्त के शर से ख़ुद को और शीअ़याने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को महफ़ूज़ रखा। आपका त़रीक़ा येह था कि जो अमवाल और अमानतें शीआ़ ह़ज़रात इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के लिए लाते थे उसे वोह ले लेते और अ़ब्बासी हुकूमत के डर से उन अमानतों को तेल के बर्तनों में रखकर इमाम अ़लैहिस्सलाम के घर पहुँचाते थे।

(अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़.३५४)

आप अपनी नेयाबत के ह़स्सास मन्स़ब को पोशीदा रखने के लिए तेल के बाज़ार में फ़ौजियों के लिए तेल और दूसरी चीज़ें सप्लाई करते थे।

(रोज़गारहाई अज़ कामिल सुलेमान, जि.१/२९१)

(२) असदी

आप क़बीलए बनी असद से तअ़ल्लुक़ रखते थे इसलिए आपको "असदी" भी कहा जाता है।

(३) अ़स्करी

चूँकि आप सामर्रा के मोह़ल्ला "अ़स्कर" में रहते थे इसलिए आपको अ़स्करी कहा जाता है।

(४) अ़म्री

उ़स्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अ़लैह के "अ़म्री" लक़ब से किसी ने इख़्तेलाफ़ नहीं किया है। यअ़्नी तमाम उ़लमा आपको अ़म्री कहते हैं अलबत्ता उ़लमाए रेजाले ह़दीस ने "अ़म्री" होने की इल्लत में इख़्तेलाफ़

किया है। शेख़ुत्ताएफ़ा मोहम्मद बिन हसन तूसी अलैहिर्रह्मा ने जो तहक़ीक़ इस बारे में पेश की है हम उसका ख़ुलासा नक़्ल कर रहे हैं :

पहली बात येह है कि उस्मान बिन सईद के दादा का नाम "अम्र" था इसलिए उन्हें "अम्री" कहा गया और दूसरी बात येह कि बअ्ज़ उलमा येह कहते हैं कि हज़रत इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम इस बात से राज़ी न थे कि उस्मान (ख़लीफ़ए सेवुम उस्मान बिन अफ़्फ़ान) का नाम और उनकी कुनियत "अबू अम्र" एक शख़्स में जमअ् हो इसलिए फ़रमाया कि उनकी कुनियत जो कि "अबू अम्र" थी बदल दो और "अम्री" कहो।

(अल-ग़ैबा, शेख़ तूसी, स.३५४)

उस्मान बिन सईद तीन इमामों के वकीले ख़ास

जनाब शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा ने लिखा है कि आप ग्यारह साल के हुए तो इमाम हादी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत की ज़िम्मेदारी ले ली और आप ने हज़रत अलैहिस्सलाम से अह्द-ओ-पैमान किया।

शेख़ अलैहिर्रह्मा ने अस्हाबे इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम का तज़्केरा करते हुए लिखा है कि उस्मान बिन सईद अम्री रह्मतुल्लाह अलैह ज़य्यात या सुम्मान मक्कनी ब अबू अम्र, साहेबे जलालत, क़द्रे वेसाक़त हैं और आप हज़रत अस्करी अलैहिस्सलाम के वकील थे।

इसी तरह फ़रमाते हैं कि उस्मान बिन सईद साहेबुज़्ज़मान अलैहिस्सलाम की जानिब से वकील थे और शीओं के दरमियान आपकी बड़ी मन्ज़ेलत और क़द्र-ओ-इज़्ज़त थी।

जनाब शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा के इन अक़वाल से साफ़ ज़ाहिर है कि आपका शुमार तीन अइम्मा के अस्हाब में होता है।

इब्ने दाऊद हिल्ली अपनी रेजाल में, मरहूम कम्पानी ने मज्मउर्रेजाल में, मरहूम सैयद मोहम्मद महदी बहरुल उलूम ने अपनी रेजाल में इसी तरह

बक़िया कुतुबे रेजाल मसलन तन्क़ीहुल मक़ाल, क़ामूसुर्रेजाल, मोअ्जमुर्रेजाल अल हदीस वग़ैरह में आपके तीन इमामों के सहाबी होने का ज़िक्र मिलता है।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास, स.१०६)

तज़क्कुर

डॉक्टर जासिम हुसैन ने अपनी किताब "तारीख़े सियासी ग़ैबते इमामे दवाज़दहुम अलैहिस्सलाम" में उस्मान बिन सईद अम्री अलैहिर्रह्मा को अबू जअ्फ़र सानी इमाम जवाद अलैहिस्सलाम के अस्हाब में शामिल किया है। इब्ने शह्रे आशोब ने मनाक़िबे आले अबी तालिब, मरहूम शेख़ अब्बास क़ुम्मी ने सफ़ीनतुल बेहार, मरहूम अल्लामा हिल्ली वग़ैरह ने भी आपको इमाम जवाद अलैहिस्सलाम के सहाबी में गिनवाया है।

अली ग़फ़्फ़ार ज़ादा ने अपनी किताब "पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम" में इस बात को रद्द करते हुए लिखा है कि "जो शख़्स तारीख़े अइम्मा अलैहिमुस्सलाम और तीरीख़े ग़ैबते सुग़रा से मुख़्तसर सी भी आश्नाई रखता हो वोह बड़ी आसानी से समझ लेगा कि उस्मान बिन सईद का अस्हाबे इमाम जवाद अलैहिस्सलाम और उनके नुमाइन्दे होने का नज़रिया दुरुस्त नहीं है और येह नज़रिया ख़ेलाफ़ वाक़ेअ् है और तारीख़ी-ओ-रुवाई एअ्तेबार से इसकी कोई मोअ्तबर सनद नहीं मिलती।"

इसके बअ्द अली ग़फ़्फ़ार ज़ादा ने अपनी तहक़ीक़ की सनद के लिए दर्ज ज़ैल उलमा और उनकी किताबों का तज़्केरा किया है:

१. हाज मोहम्मद अर्दबेली ने किताब "जामेउर्रुवात" में।

२. शेख़ अब्दुल्लाह मामक़ानी ने किताब "तन्क़ीहुल मक़ाल" में।

३. अल्लामा शूश्तरी ने किताब "क़ामूसुर्रेजाल" में।

४. ह़ज़रत आयतुल्लाह अल उज़मा ख़ूई ने "मोअ्जमुर्रेजाल" में।

इन तमाम उ़लमा ने तह़क़ीक़ के बअ्द लिखा है कि उ़स्मान बिन सईद अस्ह़ाबे इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम में न थे।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१०९-११०)

एह्तेमाल येह है कि इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम के ज़माने को पाया हो कमउ़म्री में।

फ़ज़ीलते उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह्मतुल्लाह अ़लैह अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की ज़बानी

अह़मद बिन इस्ह़ाक़ कुम्मी अ़लैहिर्रह़्मा नक़्ल करते हैं: एक रोज़ ह़ज़रत इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचा और अ़र्ज़ किया: मौला! मैं कभी आप अ़लैहिस्सलाम की मुलाक़ात का शरफ़ ह़ास़िल कर लेता हूँ और कभी कभी इस फ़ैज़ से मह़रूम रह जाता हूँ और इस त़रह़ येह फ़ैज़ हमेशा मेरे लिए मोयस्सर नहीं है, (ऐसे ह़ालात में) मैं किस की बातें क़बूल करूँ और किसकी पैरवी करूँ? ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

هَذَا أَبُو عَمْرٍو الثِّقَةُ الْأَمِينُ مَا قَالَهُ لَكُمْ فَعَنِّي يَقُولُهُ وَمَا أَدَّاهُ إِلَيْكُمْ فَعَنِّي يُؤَدِّيهِ

हाज़ा अबू अ़म्रिस्सेक़तिल अमीन मा क़ालहू लकुम फ़अ़न्नी यक़ूलोहू, व मा अद्दाहो इलैकुम फ़अ़न्नी योअद्दीह.

येह अबू अ़म्र (उ़स्मान बिन सईद) मोवस्सक़-ओ-मोअ्तबर-ओ-अमीन हैं, जो कुछ तुमसे कहें, हमारी त़रफ़ से कहेंगे और जो कुछ तुमको दें, हमारी जानिब से देंगे।

(बेह़ारुल अनवार, ५१/३४४)

इस बयान से पता चलता है कि इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम जनाब उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा पर ग़ैर मअ़्मूली इत्मीनान रखते थे और साथ ही येह भी पता चलता है कि उनका काम इमाम अ़लैहिस्सलाम के अक़वाल और उन ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम के हुक्म को लोगों तक पहुँचाना था और लोगों की ज़िम्मेदारी थी कि नाएबे इमाम के क़ौल पर अ़मल करें।

ह़ज़रत इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम की रेह़लत के बअ़्द अह़मद बिन इस्ह़ाक़, इमااम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचे और वही सवाल दोहराया जो इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम से किया था। इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

هَذَا أَبُو عَمْرٍو الثِّقَةُ الْأَمِينُ ثِقَةُ الْمَاضِي وَ ثِقَتِي فِي الْحَيَاةِ وَ الْمَمَاتِ فَمَا قَالَهُ لَكُمْ فَعَنِّي يَقُولُهُ وَمَا أَدَّى إِلَيْكُمْ فَعَنِّي يُؤَدِّيهِ

हाज़ा अबू अ़म्र अस्सेक़तुल अमीनुल माज़ी व सेक़ती फ़िल मह़या वल ममाते फ़मा क़ालहू लकुम फ़अ़न्नी यक़ूलोहू व मा अद्दा इलैकुम फ़अ़न्नी योअद्दीह.

येह अबू अ़म्र (उ़स्मान बिन सईद) मोवस्सक़-ओ-मोअ़्तबर-ओ-अमीन हैं। गुज़श्ता इमाम के लिए मोवस्सक थे और हमारी ज़िन्दगी में और हमारी मौत के बअ़्द हमारे नज़्दीक भी मोवस्सक़-ओ-मोअ़्तबर हैं। जो कुछ तुमसे कहें हमारी त़रफ़ से कहेंगे। और जो कुछ तुम्हें दें हमारी त़रफ़ से देंगे।

(बेहारुल अनवार, ५१/३४४)

नेयाबते इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम

ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने चालीस लोगों की मौजूदगी में उ़स्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अ़लैह को इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाएबे अव्वल मुक़र्रर किया।

जअ़्फ़र बिन मोह़म्मद बिन मालिक फ़ुज़ारी, अ़ली बिन बिलाल, अह़मद बिन हेलाल, मोह़म्मद बिन मुआ़विया बिन ह़कीम, ह़सन बिन अय्यूब बिन नूह - इन सभी ह़ज़रात ने नक़्ल किया है कि हम इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचे ताकि ख़ुसूसन उनसे दरियाफ़्त करें कि उनके बअ़्द इमाम कौन होगा। हमारे अ़लावा चालीस लोग और भी उस जगह मौजूद थे। इस दरमियान उ़स्मान बिन सईद खड़े हुए और अ़र्ज़ किया: यब्ना रसूलिल्लाह, हम आपसे कुछ मअ़्लूम करना चाहते हैं जो कि आप ख़ुद अच्छी त़रह़ जानते हैं। ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ऐ उ़स्मान बैठ जाओ! फिर ह़ज़रत के चेहरे का रंग बदला और आप उसी ह़ालत में बाहर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि कोई बाहर न आए। हम में से कोई भी बाहर नहीं गया। कुछ देर बअ़्द ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने उ़स्मान बिन सईद को आवाज दी, वोह अपनी जगह पर खड़े हो गए, फिर ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्या मैं बताऊँ कि तुम लोग किस लिए मेरे पास आए हो? लोगों ने कहा, यब्ना रसूलिल्लाह, बयान फ़रमाएँ। आप अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: तुम आए हो ताकि मुझसे पूछो कि मेरे बअ़्द कौन इमाम है? लोगों ने कहा: हाँ। उस वक़्त हमने एक नौजवान को देखा जो चाँद के टुकड़े की मानिन्द था और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम से बहुत ज़्यादा शबाहत रखता था। ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मेरे बअ़्द येह तुम्हारे इमाम और मेरे जानशीन हैं। इन की पैरवी करो और मुन्तशिर न होना कि दीन के उमूर में हलाकत को पहुँचोगे। जान लो कि आज के बअ़्द अब इसे न देख पाओगे यहाँ तक कि इसकी उ़म्र कामिल हो जाए

इसलिए उ़स्मान बिन सईद उन की त़रफ़ से जो कुछ ख़बरें दें, क़बूल करो:

فَهُوَ خَلِيفَةُ إِمَامِكُمْ وَالْأَمْرُ إِلَيْهِ

फ़ हो-व ख़लीफ़तो इमामेकुम वल अम्रो इलैहे.

तुम्हारे इमाम के नुमाइन्दे हैं और अम्र (नेयाबत) इन्हीं के लिए है।

(बेहारुल अनवार, ५१/३४६)

उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा वकीलों के वकील

इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने एक तूलानी ख़त इस्ह़ाक़ बिन इस्माईल नेशापूरी को लिखा है। इसी ख़त के एक ह़िस्से में इस्ह़ाक बिन इस्माईल को लिखते हैं:

शहर से उस वक़्त तक बाहर न निकलना जब तक उ़स्मान बिन सईद रह़्मतुल्लाह अ़लैह से मुलाक़ात न कर लो। हमारा सलाम उनको पहुँचाना, वोह पाक दामन-ओ-अमीन हैं और हमसे वोह सबसे ज़्यादा नज़्दीक हैं।

فَكُلُّ مَا يُحْمَلُ إِلَيْنَا مِنْ شَيْءٍ مِنَ النَّوَاحِي فَإِلَيْهِ يَصِيرُ آخِرُ أَمْرِهِ لِيُوصِلَ ذَلِكَ إِلَيْنَا

फ़ कुल्लो मा योह़मलो इलैना मिन शैइन मिनन्नवाह़ी फ़इलैहे यसीरो आख़ेरो अम्रेही लेयूस़े-ल ज़ाले-क इलैना.

जो कुछ अमवाल मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से आते हैं तो वोह सब उन (उ़स्मान बिन सईद) के हाथों में पहुँचते हैं ताकि वोह हम तक पहुँचे।

(बेह़ारुल अनवार, जि.५०, स़.३२३)

तज़क्कुर

इस तौक़ीअ् से स़ाफ़ ज़ाहिर है तमाम शहरों में जहाँ इमाम अ़लैहिस्सलाम के बहुत से वकील थे और येह सभी वकील शीओं से जो कुछ रुक़ूमे शरइया वस़ूल करते थे या शीआ ह़ज़रात जो कुछ रक़में इमाम अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचाने के लिए देते थे येह सब के सब उ़स्मान बिन सईद अ़म्री रह़ के पास लाते और उ़स्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अ़लैह इमाम की ख़िदमत में ह़ाजिर करते थे।

मज़हबी-ओ-सियासी ह़ालात और उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा

ग़ैबते सुग़रा के दौर का अगर सरसरी मुत़ालेआ भी किया जाए तो येह बात समझ में आ जाती हैं कि नेयाबत की ज़िम्मेदारी आसान न थी। क़दम क़दम पर ह़ुकूमत के जासूस आ़म शीओं पर कड़ी नज़र रखे हुए थे चे जाए कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के ख़ास़ और मोअ्तमद अफ़राद।

ह़ुकूमत के ख़त़रात एक त़रफ़ तो दूसरी त़रफ़ शीओं का मुख़्तलिफ़ फ़िर्कों में तक़्सीम हो जाना। (रुजूअ् करें, अल मुन्तज़र ख़ुसूसी शुमारा (शअ्बान) १४२० हिजरी, स़फ़ह़ात ४-५-६) और ऐसी ह़ालत में नेयाबत की ज़िम्मेदारी एक मुश्किल अ़म्र था लेकिन इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ख़ास़ तवज्जोहात और हेदायतों के सहारे शीओं की बिगड़ती ह़ालत को अच्छी ह़ालत में तब्दील करना उ़स्मान बिन सईद रह्मतुल्लाह अ़लैह का कारनामा था।

टुकड़ों में बटे हुए शीओं को यकजा करना था और दूसरी त़रफ़ ह़ुकूमत की जानिब से ताईद किए गए जअ्फ़रे कज़्ज़ाब का मुक़ाबला करना था। येह अ़म्र इन्तेहाई मुश्किल था क्योंकि जअ्फ़रे कज़्ज़ाब ने इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ्द अपने आप को

उनका जानशीन और इमाम कहना शुरूअ् कर दिया था। शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह्मा किताब अल-इर्शाद में तह्रीर फ़रमाते हैं:

ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की रेह़लत के बअ्द जअ्फ़र बिन अ़ली (मअ्रूफ़ ब कज़्ज़ाब) ने देखा कि ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम का कोई वारिस नहीं है, आप अ़लैहिस्सलाम की जाएदाद और तर्का को ज़ब्त़ कर लिया और उन अ़लैहिस्सलाम की कनीज़ों को ज़िन्दान में डाल दिया, औरतों को बंद कर दिया और उन ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम के अस्ह़ाब जो कि फ़र्ज़न्दे अ़स्करी के ज़हूर के इन्तेज़ार में थे और मोअ्तकिद थे कि उन अ़लैहिस्सलाम का बेटा मौजूद है और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम है, उनके ख़ेलाफ़ बुरा भला कहना शुरूअ् किया, उनको गुमराह करने की कोशिश की, डराया धमकाया। लेकिन लोगों ने जअ्फ़र की त़रफ़ तवज्जोह न दी और बिल आख़िर जअ्फ़रे कज़्ज़ाब ने ख़लीफ़ा से मुलाक़ात की और कहा कि उसकी मदद की जाए कि वोह अपने भाई (इमाम अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम) के मक़ाम पर पहुँच जाए और इसके लिए उसने एक बड़ी रक़म हुकूमत को दी। लेकिन उन तमाम ह़र्बों के बअ्द भी वोह कामियाब न हुआ।

(अल-इर्शाद, बाब ३४)

उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा के लिए यकबारगी येह सारे मसाएल (जअ्फ़रे कज़्ज़ाब का दअ्वए इमामत, इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए खड़े होना, लोगों के दरमियान वेलादते इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम को मश्कूक करना, हुकूमते वक़्त को अपनी इमामत के लिए उकसाना, ख़ानदाने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को क़ैद-ओ-

बंद की मुसीबत में डालना, रुक़ूमे शरई को लोगों से तलब करना वग़ैरह) बड़ी दुश्वारी का सबब था। उन हालात में उ़स्मान बिन सईद ने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मदद से जअ़्फ़र को रुस्वा किया और मक़ामे वेलायत-ओ-इमामत का देफ़ाअ़् किया।

जब शीओं ने देखा कि जअ़्फ़रे कज़्ज़ाब दअ़्वए इमामत कर रहा है और इमाम हसन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के तर्के को अपने तस़र्रुफ़ में ले लिया और हुकूमते अ़ब्बासी की हेमायत भी हासि़ल कर ली तो उन में से बअ़्ज़ लोगों ने उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा से मुलाक़ात की कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की तौक़ीअ़् स़ादिर हो जिसमें जअ़्फ़र बिन अ़ली का मुआमला स़ाफ़ हो जाए और लोगों के ज़ेहन इन्हेराफ़ से बच जाएँ और जअ़्फ़र रुस्वा हों। मुख़्तसरन एक वाक़ेआ मुलाहेज़ा फ़रमाएँ:

जअ़्फ़र बिन अ़ली ने इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के चाहने वाले को एक ख़त लिखा कि मैं अपने भाई के बअ़्द इमामे वक़्त हूँ और हलाल-ओ-हराम का इल्म और दूसरे उ़लूम मेरे पास हैं। जब ख़त उस शख़्स को मिला तो वोह बहुत ग़मज़दा हुआ और उसे लेकर अहमद बिन इस्हाक़ अश्अ़री जो कि इमाम हसन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के ख़ास़ स़हाबी थे, के पास पहुँचा। अहमद बिन इस्हाक़ ने एक ख़त इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को तहरीर किया और जअ़्फ़र के ख़त को उसी लिफ़ाफ़े में रखकर उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा की ख़िदमत में दिया कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा दें। हज़रत अ़ज्जलल्लाहो तआ़ला फ़रजहुश्शरीफ़ ने बहुत ही सख़्त ख़त लिखा कि जिसमें जअ़्फ़र की इमामत को रद्द किया है। उसी ख़त के चंद जुम्ले मुलाहेज़ा हों:

येह मुफ़सिद (जअ़्फ़रे कज़्ज़ाब) जिसने ख़ुदा की तकज़ीब की और दअ़्वए इमामत किया, हमें नहीं मअ़्लूम कि अपनी किस चीज़ पर उसने नज़र किया? अगर ख़ुदा के

दीन के अह्कम में वोह फ़िक़्ह-ओ-दानाई की उम्मीद करता है तो ख़ुदा की क़सम वोह ह्लाल-ओ-ह्राम में फ़र्क़ को नहीं पहचान सकता। कुरआन की मोह्कम और मुतशाबेह आयतों को एक दूसरे से जुदा नहीं कर सकता, हत्ता कि नमाज़ के हुदूद और औक़ात की उसे ख़बर नहीं और अगर वोह अपने तक़्वा और परहेज़गारी पर इत्मीनान रखता है तो ख़ुदा गवाह है कि उसने चालीस रोज़ तक नमाज़े वाजिब को तर्क किया है, उसका दअ्वा मोअ्जेज़ा पर मबनी होना चाहिए, अपने मोअ्जेज़ा को पेश करे और अगर हुज्जत-ओ-दलील रखता हो तो बयान करे।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१२८,
नक़्ल अज़ एह्तेजाजे त़बरसी, २/४६८)

उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा की नेयाबत ही का नतीज़ा था कि इस त़रह की तौक़ीआत स़ादिर हुईं और जअ्फ़रे कज़्ज़ाब अपने मन्सूबों में नाकाम हुआ और फिर एक मजलिस में उ़स्मान बिन सईद ने फ़रमाया: "(मोअ्तमिद अ़ब्बासी) ख़लीफ़ा ख़याल करता है कि इमामे ह्सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम दुनिया से चले गए और कोई वारिस न छोड़ा और अपने अमवाल को ऐसे इन्सान (जअ्फ़रे कज़्ज़ाब) को दे गए जो उसका मुस्तह्क़ न था और इमाम अ़लैहिस्सलाम के बाज़मान्दगान ने भी इस पर स़ब्र किया और सरगरदानी के आ़लम में इधर उधर फिरते रहे और कोई हिम्मत नहीं करता कि उनको पहचाने और उनकी मदद करे या कोई चीज़ उनको पहुँचाए"

(उस़ूले काफ़ी, जि.२, स़.१२१-फ़ारसी तर्जुमा)

उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा बग़दाद में

इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की रेह़लत के बअ़्द इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से नाएबे अव्वल ने बग़दाद का रुख़ किया। वजह येह थी कि सामर्रा में हुकूमत के मामूरीन बहुत सख़्ती का मुज़ाहेरा कर रहे थे और उस ज़माने में बग़दाद पर ह़कूमते अ़ब्बासी की कोई ख़ास़ नज़र न थी। उस वक़्त सामर्रा अ़ब्बासी हुकूमत का पायए तख़्त था। मोअ़्तमिद का दौर था। मोअ़्तमिद १२ रजब २५६ हिजरी में (पायए तख़्त) बग़दाद मुन्तक़िल हुआ। उस वक़्त तक शीओं की फ़अ़्आलियत का मरकज़ बग़दाद था। उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा की येह हिजरत सबब बनी कि मुख़्तलिफ़ शहरों में बिख़रे हुए शीआ हुकूमत की बंदिशों से मह़फ़ूज़ आसानी से नाएबे अव्वल के पास पहुँचने लगे। इस त़रह़ आपकी फ़अ़्आलियत महदूद न रही बल्कि वसीअ़् पैमाने पर राबेत़ों का सिलसिला शुरूअ़् हो गया। अगर आप सामर्रा में होते या उस ज़माने यअ़्नी इब्तेदाए ग़ैबत में अगर पायए तख़्त बग़दाद मुन्तक़िल हो गया होता तो वोकला के लिए इतने वसीअ़् इम्कान पैदा न होते।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१३०)

उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा के काम की रविश

आप अ़लैहिर्रह़्मा ने बग़दाद में अपने कई मुआविन वकील रखे थे जिनको इराक़ और दूसरे मुमालिक के वकीलों से राबेत़े की ज़िम्मेदारी दे रखी थी। बग़दाद में मौजूद उन वोकला से दूसरे सुफ़रा आकर मिलते थे। अपने रुक़ूमे शरई या मसाएल उन के ह़वाले करते और येह अफ़राद उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा के पास उन्हें पहुँचाते और फिर उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा उसे इमाम की ख़िदमत में ले जाते। ह़ाजिज़ बिन यज़ीद वशाव, अह़मद बिन इस्ह़ाक़ अश्अ़री, मोह़म्मद बिन अह़मद बिन जअ़्फ़र

क़त्तान, अह्मद बिन इस्हाक़, इब्तेदा में इमाम ह्सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के वकील की ह्सियत से क़ुम (ईरान) में थे लेकिन इमाम अ़लैहिस्सलाम की रेह्लत के बअ़्द आप उ़स्मान बिन सईद रह् के मुआ़विन की ह्सियत से बग़दाद चले आए।

मोह्म्मद बिन अह्मद बिन क़त्तान कपड़े बेचने का काम करने लगे थे ताकि लोग उन पर शक न करें, कपड़ों में ख़ुतूत और अमवाल लपेट कर दूसरे सुफ़रा उनके पास लेकर आते थे ताकि येह उन्हें उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह्मा के पास पहुँचा दें।

तारीख़ में ऐसे बहुत सारे वाक़ेआ़त मिलते हैं जिनसे मअ़्लूम होता है कि इन नव्वाबे अरबआ़ ने इमाम अ़लैहिस्सलाम की ह्ेफ़ाज़त के लिए ऐसी रविशों को इस्तेअ़्माल किया ज़िनके ज़रीए़ तमाम अमवाल इमाम अ़लैहिस्सलाम तक पहुँच जाया करते थे और लोगों को ह्ज़रत अ़लैहिस्सलाम के रहने की जगह मअ़्लूम भी नहीं होती थी।

वफ़ाते उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह्मा

मुद्दते नेयाबत और आपकी वफ़ात के बारे में दक़ीक़ इत्तेलाअ़् नहीं है। अलबत्ता येह बात रोशन है कि आपकी और आपके फ़र्ज़न्द मोह्म्मद बिन उ़स्मान की नेयाबत की मुद्दत ४५ साल है।

जनाब अ़ल्लामा बह्रुल उ़लूम ने तअ़्लीक़ए रेजाल में लिखा है कि उ़स्मान बिन सईद की वफ़ात २६४ या २६५ हिजरी में वाक़ेअ़् हुई।

डॉक्टर जासिम तारीख़े सियासी ग़ैबते इमामे दवाज़दहुम में लिखते है कि सन २६० हिजरी के बअ़्द आपकी वफ़ात वाक़ेअ़् हुई और इसी किताब के स़फ़्हा १५५ पर लिखते हैं कि सन २८० हिजरी में वफ़ात हुई।

तज़क्कुर

अ़ली ग़फ़्फ़ार ज़ादा ने अपनी किताब में मोवर्रेख़ीन और उ़लमाए इस्लाम के ह़वाले से जो तह़क़ीक़ पेश की है उसका ख़ुलास़ा येह है कि:

उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा की वफ़ात सन २६७ हिजरी से पहले वाक़ेअ़् हुई।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१४४)

क़ब्रे उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा

आपकी क़ब्र बग़दाद में मग़रिब की जानिब शारेअ़् मैदान के अंदर दरबे ह़ीला में मस्जिदे ज़र्ब में दाख़िल होते हुए दाहिनी जानिब क़िब्लए मस्जिद में है।

(बेह़ारुल अनवार, जि.५१, स़.३४७)

आज कल इस क़ब्र के अत़राफ़ एक बाजार है और छोटी छोटी गलियों से गुज़र कर क़ब्र तक पहुँचना पड़ता है। इसलिए बअ़्ज़ मौक़ेअ़् पर ज़ाऐरीन उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा की ज़ेयारत को नज़र अंदाज़ कर देते हैं जबकि इस अ़ज़ीम नाएब की ज़ेयारत बिल्कुल वैसी है जैसी उनकी ज़िन्दगी में लोग इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से राबेत़े के लिए आते थे।

तअ़्ज़ियत नामा

उ़स्मान बिन सईद अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा के इन्तेक़ाल के बअ़्द इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने एक तअ़्ज़ियती ख़त़ लिखा:

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊ़न.....

बेशक, हम अल्लाह के लिए हैं और बिला शुब्हा हम उसी की त़रफ़ वापस जाने वाले हैं। उसी के हुक्म के सामने राज़ी ब रज़ा होकर सरे तस्लीम ख़म करते हैं। तुम्हारे

वालिद ने अपनी ज़िन्दगी सआ़दत के साथ गुज़ार दी और मरते वक़्त तक क़ाबिले तअ़्रीफ़ रहे पस अल्लाह उन पर रह्म फ़रमाए और उन्हें उनके औलिया और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से मुल्हिक़ फ़रमाए येह मुसलसल अपने अइम्मा के उमूर में जद्द-ओ-जेहद-ओ-सई-ओ-कोशिश करते रहे यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और अइम्मए त़ाहेरीन अ़लैहिमुस्सलाम का तक़र्रुब ह़ासि़ल हुआ। अल्लाह उनके चेहरे को बारौनक़ और शादाब रखे।

(बेहारुल अनवार, जि.५१, स़.३४९)

दूसरे नाएबे ख़ास़

जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान बिन सईद अ़म्री

रह़्मतुल्लाह अ़लैह

क़ा-ल अल-इमामुल अ़स्करी** अ़लैहिस्सलामः **अल अ़म्रीयो वब्नोहू से-क़ताने फ़मा अद्दया इलै-क फ़-अ़न्नी योअद्देयाने.

इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम **ने फ़रमायाः अ़म्री (उ़स्मान बिन सईद) और उनके फ़र्ज़न्द (मोह़म्मद बिन उ़स्मान) दोनों मोवस्सक़ और क़ाबिले इत़्मीनान हैं। जो कुछ येह दोनों तुम तक पहुँचाते हैं हमारी त़रफ़ से पहुँचाते हैं।**

(तारीख़ अल-ग़ैबतुस़्सुग़रा अज़ सैयद मोह़म्मद अस़्स़द्र, स़.४०३)

***अ़निल इमामिल महदी** अ़लैहिस्सलामः **लम यज़ल से-क़तोना फ़ी ह़यातिलअबे** रज़ियल्लाहो अ़न्हो.*

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम **ने फ़रमायाः वोह अपने वालिद (उ़स्मान बिन सईद** रज़ियल्लाहो अ़न्हो**) के ज़माने ही से हमारे लिए मोअ़्तबर-ओ-मूरिदे एअ़्तेमाद हैं।**

(तारीख़ अल-ग़ैबतुस़्सुग़रा अज़ सैयद मोह़म्मद अस़्स़द्र, स़.४०३)

हमारा लाखों सलाम हो उस अ़ज़ीम शख़्सीयत पर जिसकी शान में दो मअ़्सूम इमाम अ़लैहेमस्सलाम येह फ़रमाते हो कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान हमारे लिए मोवस्सक़-ओ-मोअ़्तबर और मूरिदे एअ़्तेमाद हैं।

हम गवाही देते हैं कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान रज़ियल्लाहो अ़न्हो (ग़ैबते सुग़रा में) इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचने का दरवाज़ा हैं और आँजनाब ने वज़ीफ़ए नेयाबत ख़ूब अदा किया। और आप सफ़ीरे अमीन

थे। हम गवाही देते हैं कि ख़ुदा ने इस नेयाबत-ओ-सफ़ारत के मन्सब को अपने नूर से मुख़्तस किया।

इसी मअ्रेफ़त के साथ हम आप के ह़ालात जानना चाहते हैं।

तज़क्कुर

नेयाबत-ओ-सफ़ारत के अज़ीम मन्सब की अहम्मीयत का अंदाज़ा हम गुज़श्ता स़फ़्ह़ात में कर चुके हैं। नेयाबत-ओ-नाएब की मअ्रेफ़त के बअ्द जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा के ह़ालाते ज़िन्दगी जान कर हमारा अ़क़ीदा इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम और उनके नाएब के बारे में और भी मुस्तह़कम हो जाएगा।

नाम-ओ-लक़ब-ओ-कुनियत

आप का नाम मोह़म्मद आप के वालिद का नाम उ़स्मान और दादा का नाम सईद था। उ़स्मान बिन सईद के दादा अ़म्री थे इसलिए आपके नाम के सामने अ़म्रवीं (अ़म्री) लिखा जाता है। इस त़रह़ आप तारीख़ में मोह़म्मद बिन उ़स्मान बिन सईद अ़म्री कहलाते हैं। आप की कुनियत अबू जअ्फ़र है। इसके अ़लावा आपकी कोई और कुनियत किताबों में नहीं मिलती। आपके अल्क़ाब अ़म्री, असदी, कूफ़ी, सम्मान और अ़स्करी भी बयान हुए हैं।

उ़लमा की नज़र में आपकी अ़ज़मत

इब्तेदाई सुतूर में अइम्मए हुदा अ़लैहिमुस्सलाम से आपकी अ़ज़मत का अंदाज़ा हो चुका है। अब उ़लमा के अक़वाल मुलाह़ेज़ा हों:

जनाब शेख़ तूसी अपनी किताब रेजाल में लिखते हैं: मोह़म्मद बिन उ़स्मान बिन सईद अ़म्री, आपकी कुनियत अबू जअ्फ़र और आपके

वालिद की कुनियत अबू अ़म्र है। दोनों ही इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वकील थे। और दोनों ही त़ाएफ़ए शीअ़ए इमामिया के नज़्दीक बुज़ुर्ग मंज़ेलत के ह़ामिल हैं।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१५५,
रेजाले तूसी रक़म १०१, स़.५०९)

इसी त़रह़ का क़ौल अ़ल्लामा ह़िल्ली ने अपनी रेजाल, क़िस्मे अव्वल, ह़र्फ़े मीम, रक़म ५७ पर तह़रीर किया है।

मरहूम मामक़ानी ने तन्क़ीहुल मक़ाल में लिखा हैं कि: उन ह़ज़रत (मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा) के मक़ाम-ओ-अ़ज़मत का नज़्दीक होना और आप की उ़लूवे मंज़ेलत त़ाएफ़ए इमामिया के नज़्दीक किसी तौज़ीह़ या दलील-ओ-बुरहान के क़ाएम करने से ज़्यादा मशहूर है। आपके वालिद के ह़ालाते ज़िन्दगी से मअ़्लूम होता है कि आप अपने वालिद के ज़मानए ह़यात ही में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की नेयाबत और वकालत की सनद पा चुके थे।

आपने इन मत़ालिब को मरहूम मजलिसी अ़लैहिर्रह़्मा की किताब बेहारुल अनवार के ह़वाले से लिखा है।

आयतुल्लाह अल उ़ज़्मा सैयद अबुल क़ासिम अल-ख़ूई त़ाबसराह ने किताब मोअ़्जमुर्रेजालिल ह़दीस में लिखा है:

वर्रेवायातो फ़ी जला-लतेही व अ़-ज़-मते मक़ामेही मु-त-ज़-फ़रहू.

आप (मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा) के मक़ाम-ओ-मर्तबे की अ़ज़मत-ओ-जलालत के बारे में जो रवायतें नक़्ल हुई हैं वोह बहुत ज़्यादा हैं।

बअ्ज़ उ़लमाए रेजाल ने आपको स़ाह़बे तालीफ़-ओ-तस़्नीफ़ बयान किया है। चुनांचे एक मशहूर-ओ-मअ्रूफ़ कौल इस त़रह़ नक़्ल किया गया है:

इब्ने नूह़ (अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अ़ली बिन नूह़ सीराफ़ी) कहते हैं: अबू नस़्र हेबतुल्लाह उम्मे कुलसूम बिन्ते अबू जअ्फ़र के नवासे (उम्मे कुलसूम मोह़म्मद बिन उ़स्मान की बेटी थीं और अबू नस़्र हेबतुल्लाह उम्मे कुलसूम के नवासे थे), कहते थे कि अबू जअ्फ़र मोह़म्मद बिन उ़स्मान ने फ़िक़्ह में किताबें तस़्नीफ़ की हैं और उन तमाम ह़दीसों को इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम, इमामे ज़मान अ़लैहिस्सलाम और अपने वालिद उ़स्मान बिन सईद अ़लैहिर्रह़्मा जो कि इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल करते थे, इस्तेमाअ् किया था, और उन तमाम किताबों में से एक किताब अल-अशरबह थी। उम्मे कुलसूम बिन्ते अबू जअ्फ़र रज़ियल्लाहो अ़न्हा फ़रमाती थीं, येह किताब मोह़म्मद बिन उ़स्मान की वस़ीयत के मौक़ेअ् पर हुसैन बिन रौह़ (नाएबे सेवुम) के पास पहुँची थी और उन्हीं के हाथ में थी। अबू नस़्र कहते हैं: गुमान करता हूँ कि हुसैन बिन रौह़ के बअ्द येह किताब अबुल ह़सन समरी अ़लैहिर्रह़्मा (चौथे नाएब) के पास पहुँची।

(अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़.३६३)

मरहूम आयतुल्लाह अल उ़ज़्मा आक़ाए ख़ूई अ़लैहिर्रह़्मा ने मोअ्जमुर्रेजाल में इस ह़दीस के बअ्द इस त़रह़ इज़्हारे ख़याल किया है:

येह रवायत दो बातों को साबित करती है:

१. मोह़म्मद बिन उ़स्मान स़ाह़बे किताब थे।

२. आप ने इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से रवायतें नक़्ल की हैं।

मरजअ्-ओ-पनाहगाहे शीअ्यान

जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान की ज़िन्दगी पर नज़र डालें और आप के ज़रीए नक़्ल होने वाली हदीसें और आपके नाम से स़ादिर होने वाली तौक़ीआत का मुत़ालेआ करें तो बड़ी आसानी से मअ्लूम हो जाता है कि तमाम बेलादे इस्लामी से आप के तमाम वोकला कलामी, फ़िक़्ही, इज्तेमाई मसाएल में आपसे रुजूअ् करते थे और आप लोगों के मसाएल को हल फ़रमाया करते थे। मिसाल के लिए वाक़ेआ नक़्ल करते हैं:

अबुल हसन अ़ली बिन अहमद दल्लाल क़ुम्मी कहते हैं: "शीओं की एक जमाअ़त ने इस बात में इख़्तेलाफ़ किया कि आया ख़ुदावन्द आ़लम ने ख़ल्क़-ओ-रिज़्क़ की क़ुदरत अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को तफ़वीज़ की है या नहीं? एक जमाअ़त का कहना है कि येह मुहाल है ख़ुदा के लिए येह जाएज़ नहीं है क्योंकि अज्साम को ख़ुदा के अ़लावा कोई दूसरा ख़ल्क़ नहीं कर सकता और दूसरी जमाअ़त का कहना है कि ख़ुदावन्द मुतआ़ल ने अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को ख़ल्क़ करने और रिज़्क़ अ़ता करने की क़ुदरत अ़ता की है और उन्हें येह इख़्तेयार दिया है पस वोह ख़ुद से ख़ल्क़ करते हैं रिज़्क़ देते हैं इस सिलसिले में शदीद इख़्तेलाफ़ हुआ। एक शख़्स़ ने कहा: तुम क्यों अबू जअ्फ़र मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़म्री से इस सिलसिले में रुजूअ् नहीं करते और उनसे येह सवाल नहीं करते ताकि वोह तुम्हारे लिए हक़ को वाज़ेह कर दें। वोह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के सफ़ीर हैं। सब इस बात पर राज़ी हो गए कि अबू जअ्फ़र से रुजूअ् किया जाए लेहाज़ा इस मसअले को लिखकर मोहम्मद बिन उ़स्मान को भेजा। आप ने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से रुजूअ् किया तो एक तौक़ीअ् स़ादिर हुई जिस में तहरीर था: बेशक स़िर्फ़ ख़ुदावन्द मुतआ़ल अज्साम को ख़ल्क़ करता है और रिज़्क़ को तक़सीम करता है। क्योंकि वोह न तो जिस्म है और न ही जिस्म में हुलूल करता है, कोई भी शै उसकी शबीह

नहीं है। वोह समीअ-ओ-अलीम है और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ख़ुदावन्द आलम से तलब करते है और वोह ख़ुद ही ख़ल्क़ करता है। वोह अलैहिस्सलाम ख़ुदा से दरख़ास्त करते हैं तो उनकी दरख़ास्त क़बूल करने के लिए और उन अलैहिस्सलाम के हक़ को बुज़ुर्गी अता करने के लिए रिज़्क़ अता करता है।"

आपका ज़मानए नेयाबत बहुत तूलानी है और जैसा कि हमने लिखा कि आप शीओं के लिए मरजअ् थे, आप बेशुमार इल्मी, फ़िक़्ही, इज्तेमाई और एअ्तेक़ादी मसाएल और मुश्केलात को हल करते रहे हैं और इस तूलानी मुद्दत में जो कुछ तौक़ीआत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से हासिल की हैं। वोह तक़तीअ् शुदा हालत में मौज़ूअ् के एअ्तेबार से मुख़्तलिफ़ किताबों में मौजूद हैं और बअ्ज़ किताबों में पूरी की पूरी तौक़ीअ् एक जगह नक़्ल हुई है।

एक बहुत ही अहम तौक़ीअ् जो आपके ज़रीए इस्हाक़ बिन यअ्क़ूब के नाम सादिर हुई है उसके कुछ हिस्से यहाँ तहरीर कर रहे हैं। येह तौक़ीअ् मुख़्तलिफ़ सवालों के जवाब में सादिर हुई है।

इस्हाक़ बिन यअ्क़ूब फ़रमाते है कि येह तौक़ीअ् मेरे मौला इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक से तहरीर की हुई इस तरह सादिर हुई:

ख़ुदा तुम्हारी हेदायत करे और सच्चे अक़ीदे पर बाक़ी रखे। और जैसा कि तुमने सवाल किया है कि मेरे ख़ानदान के बअ्ज़ अफ़राद और मेरे चचाज़ाद भाईयों ने मेरे वजूद का इन्कार किया है तो जान लो ख़ुदा और किसी शख़्स के दरमियान रिश्तेदारी नहीं है और जो शख़्स हमारे वुजूद का मुन्किर हो वोह हम में से नहीं है और जिस रास्ते पर वोह चल रहा है वोह नूह के बेटे का रास्ता है।

और जो रास्ता हमारे चचा जअ्फ़र और उनकी औलाद ने इख़्तेयार किया है वोह युसूफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों का रास्ता है।

इसी तौक़ीअ् के दूसरे मौज़ूअ्: फ़ोक़ाअ् (जौ की शराब), उसका पीना ह़राम है लेकिन शलमाब के पीने में कोई ह़र्ज नहीं है, (शलमाब शीलम से बनाया जाता है। येह जौ के दाने की शक्ल का होता है)।

जहाँ तक बात है उन अमवाल की जो तुम हदिये के नाम से हमें पहुँचाते हो तो हम तुम्हें तुम्हारे गुनाहों से पाक करने की ख़ात़िर क़बूल करते हैं। इसलिए जो चाहता है हमें माल पहुँचाना वोह पहुँचा दे और जो नहीं चाहता, वोह न भेजे। जो कुछ ख़ुदा ने हमें दिया है वोह बेहतर है उससे जो कुछ तुम देते हो।

वक़्ते ज़हूर किसी को नहीं मअ्लूम

इसी तौक़ीअ् में आगे फ़रमाते है: मेरे ज़हूर का वक़्त ख़ुदावन्द मुतआल के इरादे से वाबस्ता है। जो वक़्ते ज़हूर तअय्युन करे वोह झूटा है।

राहनुमाई

और जब नए नए ह़ादेसात-ओ-मुआमलात रूनुमा हों तो हमारी रवायतों के बयान करने वालों (फ़ुक़हा) से रुजूअ् करो क्योंकि वोह तुम पर हमारी हुज्जत हैं और मैं उन पर ख़ुदा की हुज्जत हूँ.....

इसके बअ्द कुछ बातें मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़म्री की वसाक़त, अ़ली बिन महज़ियार अहवाज़ी के क़ल्ब की इस्लाह़ और शक-ओ-तरदीद दूर होने की दुआ और फिर गाने वाली औ़रत के माल के ह़राम होने, मोह़म्मद बिन शाज़ान बिन नुऐ़म नेशापूरी का दोस्ताने अह्लेबैत में शुमार करना, अबुलख़त्ताब मोह़म्मद बिन अबी ज़ैनब और उसके पैरवों को

मलऊन क़रार देना, और इस त़रह़ के बहुत ही अहम मसअले की त़रफ़ ताकीद है।

सह्मे इमाम का बेजा इस्तेअ्माल: फ़रमाते हैं: और जो लोग हमारे अमवाल (सह्मे इमाम) को अपने पास संभालते हैं और उसमें से कुछ ह़िस्से को अपने लिए ह़लाल जानते हैं और इस्तेअ्माल करते है तो ऐसा है जैसे कि उन लोगों ने आग खाई हो.....

ग़ैबत की वजह: और ग़ैबत की इल्लत जो है तो ख़ुदावन्द आ़लम का इर्शाद है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ

या अय्योहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न अश्या-अ इन तुब-द लकुम तसूकुम.

ऐ ईमान लाने वालो! तुम ऐसी चीज़ के बारे में सवाल न करो कि अगर तुम्हारे लिए आश्कार हो जाए तो तुमको आज़ुर्दा-ओ-रंजीदा करे।

(सूरए माएदा, आयत १०१)

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की गर्दन पर किसी की बैअ़्त न होगी: इसी तौक़ीअ़् में फ़रमाते हैं मेरे आबा-ओ-अज्दाद अपने ज़माने के सरकश हुक्मरानों की हुकूमत में ज़िन्दगी बसर कर रहे थे लेकिन मैं ऐसे ज़माने में क़याम करूँगा जब किसी त़ाग़ूत की हुकूमत मुझ पर न होगी।

इसी तौक़ीअ़् में बादलों की आड़ में सूरज से इस्तेफ़ादा की मिसाल से ग़ैबत में इमाम से इस्तेफ़ादा को बयान फ़रमाया है।

इसी तौक़ीअ़् को मरहूम शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह़्मा ने कमालुद्दीन जिल्द २/४८३ ह़दीस शुमारा ४, मरहूम अ़ल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रह़्मा ने बेहारुल अनवार जिल्द ५३/१८० ह़दीस १० में बयान किया है।

इसी त़रह़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की बहुत सी तौक़ीआ़त जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान के ज़रीए़ स़ादिर हुई हैं। बअ़्ज़ दीगर अफ़राद जिनके नाम तौक़ीअ़् आई है, दर्ज ज़ैल हैं:

अबुल ह़सन मोह़म्मद बिन जअ़्फ़र असदी

येह शह्रे रै में मोह़मद बिन उ़स्मान की ह़ैसियत से काम करते थे। आपका इन्तेक़ाल रबीउ़स्सानी सन ३१२ हिजरी में हुआ। आप ही के नाम तौक़ीअ़् में लिखा था कि नमाज़ क़ाएम करो जैसा कि तुमने सूरज के तुलूअ़् और ग़ुरूब, होने के वक़्त नमाज़ पढ़ने के बारे में सवाल किया है और जैसा कि लोग कहते हैं और वैसा ही हो कि: सूरज शैत़ान की दो शाख़ के दरमियान तुलूअ़् करता है और दो शाख़ के दरमियान ग़ुरूब करता है, तो फिर कोई शै नमाज़ से बेहतर शैत़ान की नाक को ख़ाक पर नहीं मलती, इसलिए नमाज़ को क़ाएम करो और शैत़ान की नाक रगड़ो।

(कमालुद्दीन, २/५२०, ह़.४९)

शौहर-ओ-बीवी का इख़्तेलाफ़ ख़त्म

इस तौक़ीअ़् के ज़िक्र से पहले इसके अ़मली पह्लू पर तब्सेरा बेहतर है। पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम व अइम्मए हुदा अ़लैहिमुस्सलाम पेदराने उम्मत हैं। येह बात ग़ुज़र चुकी है कि ख़ुदावन्द आ़लम ने इनकी अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी की ख़ातिर इन्हें बड़ी क़ुदरत अ़त़ा की है। येह ह़ज़रात रिज़्क़ अ़त़ा करने की क़ुदरत रखते हैं यअ़्नी येह ह़ज़रात जिस चीज़ को ख़ुदा से त़लब करते हैं वोह रद्द नहीं करता। येह ह़ज़रात ह़ल्लाले मुश्केलात हैं। इस त़ौक़ीअ़् में इस बात की त़रफ़ इशारा किया गया है।

अबू ग़ालिब अह़मद बिन मोह़म्मद ज़ोरारी कहते हैं: मेरे और मेरी बीवी के दरमियान बड़ा इख़्तेलाफ़ और दुश्मनी पैदा हो गई और हमारे दरमियान

में इत्तेफ़ाक़ के सारे इम्कान ख़त्म हो गए और येह इख़्तेलाफ़ तूल पकड़ गया और इसकी वजह से मैं बहुत ज़्यादा तनाव में था इसलिए मैंने एक ख़त जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा को लिखा कि वोह उसे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचा दें। इस ख़त में मैंने दुआ के लिए दरख़ास्त की थी। ख़त के जवाब में काफ़ी ताख़ीर हुई। एक मर्तबा अबू जअ्फ़र (मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा) से मुलाक़ात हुई तो आपने फ़रमाया: तुम्हारे ख़त का जवाब स़ादिर हो चुका है। फिर उनके घर गया तो उन्होंने एक दफ़्तर निकाला और उसकी वरक़ गरदानी की यहाँ तक कि एक ख़त निकाला और मुझे दिखाया जिसमें तह़रीर था: जहाँ तक शौहर-ओ-बीवी के मसअले के बारे में पूछा था तो ख़ुदावन्द आ़लम ने उनके दरमियान सुल्ह-ओ-आश्ती बरक़रार कर दी है।

अबू ग़ालिब ज़ोरारी कहते हैं कि मेरी बीवी हमेशा सख़्ती से पेश आती थी लेकिन इस वाक़ए़ के बअ्द पिछले इख़्तेलाफ़ात की त़रह़ कोई वाक़ेआ पेश न आया बल्कि मैं कभी कभी जानबूझ कर ऐसा काम अंजाम देता कि उसे गुस़्स़ा दिलाऊँ लेकिन उसकी त़रफ़ से कोई रद्दे अ़मल ज़ाहिर नहीं होता था।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.१७६)

तज़क्कुर

हर त़रह़ के मसाएल-ओ-मुश्केलात और परेशानियों में दरे अह्लेबैत पर पहुँचो और इस ज़माने में वोह दर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम हैं। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम बाबुल्लाह हैं इसलिए हम ज़ेयारत में सलाम भेजते हैं:

अस्सलामो अ़लै-क या बाबल्लाह

मोहम्मद बिन उ़स्मान और झूटे दअ़्वेदार

इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त के मख़्सूस़ ह़ालात और शराएत की बेना पर अ़ाम मज्मेअ़् में बहुत कम ह़ाज़िर हुआ करते थे। इसलिए आप अ़लैहिस्सलाम ह़ज़रात ने ख़ास़ नुमाइन्दे मोअ़य्यन किए थे ताकि इमाम और अ़वाम में इरतेबात़ बाक़ी रहे। और लोग इस निज़ाम के अ़ादी भी हो जाएँ और ग़ैबते सुग़रा के लिए राहें हमवार हो जाएँ। बिल आख़िर लोगों ने इस निज़ाम को समझ लिया और इससे मानूस भी हो गए और ग़ैबते सुग़रा में नव्वाबे ख़ास़ के ज़रीए़ अपनी मुश्किलात को इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचाने लगे और ह़ल पाने लगे। इसी अस्ना में बअ़्ज़ ज़ईफ़ुल ईमान, कजअन्देश और मौक़अ़् परस्त अफ़राद ने फ़ाएदा उठाना चाहा और स़ाह़ेबुल अ़म्र अ़लैहिस्सलाम की नेयाबत का दअ़्वा किया उनके नाम दर्ज कर रहे हैं:

१. अबू मोह़म्मद ह़सन शरीई़

२. मोह़म्मद बिन नसीर नुमैरी

३. अह़मद बिन ह़ेलाल अ़बरताई

४. अबू त़ाहिर मोह़म्मद बिन अ़ली बिन बिलाल

५. अबू बक्र बिन मोह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़स्मान मअ़्रूफ़ ब अबू बक्र बग़दादी। येह मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा का भतीजा था।

६. इस्ह़ाक़ अह़मद

७. बाक़तानी

८. हुसैन बिन मन्स़ूर ह़ल्लाज

क़ाबिले तवज्जोह

क़ाबिले ग़ौर बात येह है कि येह सारे अफ़राद जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान के रक़ीब थे और उनकी नेयाबत से इन्हेराफ़ करते थे। और उन में से अक्सर के अ़क़ाएद ग़ुलू की हद तक पहुँचे हुए थे इसलिए बअ़्ज़ अफ़राद इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम और इमाम हसन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी ही में ग़ाली-ओ-मअ़्लून क़रार पाए। इससे येह अंदाज़ा लगाने में दुश्वारी न होगी मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा से किस क़द्र हसद रखते होंगे और उनके कामों में कितनी रुकावट ईजाद करते रहे होंगे। लेकिन आप अ़लैहिर्रह्मा इमाम अ़लैहिस्सलाम की ताईद के साए में उन तमाम लोगों से निमटते रहे और अपना फ़र्ज़े नेयाबत निभाते रहे।

क्योंकर अ़वाम ने मोहम्मद बिन उ़स्मान पर एअ़्तेमाद किया

आपके दौरे नेयाबत में नेयाबते इमाम के झूटे दअ़्वेदार लोगों को बहका कर धोका देकर अ़वाम से शरई रुक़ूम ऐंठना चाहते थे। येह लोग मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा की शख़्सीयत को मज्रूह करने के दर पै थे। एक त़रह से येह बहुत बड़ा चैलेंज था। लोगों के लिए नाएबे इमाम की शनाख़्त एक मुश्किल मरहला था। ऐसे हालात में आपका लोगों को एअ़्तेमाद में लेना और दुश्मनों को मात देना बहुत बड़ा काम था। आपकी नेयाबत पर एअ़्तेमाद के लिए मिनजुम्ला अ़वामिल में से, सबसे बड़ा सबब वही तौक़ीआ़त थी जिनमें एअ़्तेक़ादी, अख़्लाक़ी, इज्तेमाई और फ़िक़्ही मसाएल के साथ साथ बअ़्ज़ उमूरे ग़ैबी का ज़िक्र था जिसकी बेना पर लोग आपके सामने तस्लीम होने पर मजबूर थे। उमूरे ग़ैबी की ख़बरों से मुतअ़ल्लिक़ बेशुमार वाक़ेआ़त जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा के ज़रीए़ रूनुमा हुए हैं। नमूने के लिए एक वाक़ेआ़ नक़्ल करते हैं।

ख़बरे ग़ैबी

जअ्फ़र बिन मुत्तील बयान करते हैं कि अबू जअ्फ़र बिन मोहमद बिन उ़स्मान सम्मान मअ्रूफ़ ब अ़म्री ने मुझे त़लब किया और कपड़े के कुछ टुकड़े और एक बटुवा जिसमें कुछ दीनार थे दिए और कहा: ज़रूरी है कि इसी वक़्त वासित़ (कूफ़ा और बस़रा के दरमियान में जगह थी) जाओ और जो कुछ तुम्हें दे रहा हूँ तुम उसके ह़वाले कर देना जो शत्त की त़रफ़ जाते हुए सबसे पहले तुमसे मुलाक़ात करे। मैं इस काम से बहुत ग़मज़दा हुआ और सोचा मेरे जैसा इन्सान इस मअ्मूली चीज़ को ले जाने के लिए मामूर किया गया? बहरहाल मैं अपनी सवारी पर सवार हुआ और वासित़ की त़रफ़ रवाना हुआ, पहला शख़्स़ जिससे मेरी मुलाक़ात हुई, मैंने उससे ह़सन बिन मोह़म्मद क़ित्तात स़ैदलानी जो वासित़ में वकीले औक़ाफ़ थे, के ह़ालात दरियाफ़्त किए, उसने कहा मैं ही हूँ। पूछा तुम कौन हो? मैंने कहा मैं जअ्फ़र बिन मोह़म्मद बिन मुत्तील हूँ। उसने मुझे नाम से पहचान लिया और सलाम किया, मैंने भी जवाबे सलाम दिया और आपस में मुआ़नेक़ा किया। मैंने उनसे कहा: अबू जअ्फ़र अ़म्री ने आपको सलाम कहा है और येह कपड़े और पैसों का बटुवा दिया कि आपके ह़वाले कर दूँ। उन्होंने कहा, अलह़म्दो लिल्लाह, क्योंकि मोह़म्मद बिन अ़ब्दिल्लाह आ़मेरी का इन्तेक़ाल हो गया है और मैं उनका कफ़न लेने जा रहा हूँ। लोगों ने जब बटुवा खोला तो इसमें दफ़्न-ओ-कफ़न से मुतअ़ल्लिक़ अख़राजात के लिए रक़म मौजूद थी। मैंने तशयीए़ जनाज़ा में शिरकत की और दफ़्न करके वापस आ गया।

(कमालुद्दीन ५०४, बाब तौक़ीआ़त, बेह़ार ५१/३३६)

तज़क्कुर

अगर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा को इस त़रह की ख़बर या हेदायात न फ़रमाते तो हरगिज़ आपको उन बातों का इ़ल्म न होता।

इस त़रह के एक दो वाक़ेआ़त नहीं हैं, अगर नाएबीन के ह़ालाते ज़िन्दगी पर नज़र डाली जाए तो अक्सर ऐसे वाक़ेआ़त मिलते हैं जिनमें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने ऐसी बातों की त़रफ़ रहनुमाई फ़रमाईं जिसका इ़ल्म किसी को न था।

ज़्यादा मअ़्लूमात के लिए कमालुद्दीन तालीफ़ शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह्मा और बेहारुल अनवार जिल्द ५१ तालीफ़ अ़ल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रह्मा रुजूअ़् कीजिए। दोनों ही किताबों का तर्जुमा उर्दू में हो चुका है।

मोहम्मद बिन उ़स्मान से मन्क़ूल ह़दीसें

अगरचे बेशुमार तौक़ीआ़त हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने आप ही के ह़वाले की हैं और येह तमाम तह़रीर-ओ-अक़वाल बत़ौरे ह़दीस लोगों में आज भी पाई जाती हैं। लेकिन इसके बअ़्द भी हम यहाँ इस उ़न्वान के तह़त कुछ ह़दीसें नक़्ल करना चाहेंगे। क्योंकि बअ़्ज़ उ़लमाए इ़ल्मे रेजाल ने आप अ़लैहिर्रह्मा को अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से ह़दीस नक़्ल करने वालों की फ़ेहरिस्त में शामिल नहीं किया है और हमारे बअ़्ज़ उ़लमाए रेजाल ने उनके इस नज़रअन्दाज़ करने पर तन्क़ीद भी की है। येह हमारा मौज़ूअ़् नहीं है इसलिए अब वोह ह़दीसें मुलाह़ेज़ा हों जो आपके तवस्सुत़ से नक़्ल हुई हैं।

(१) मोह़म्मद बिन हमाम कहते हैं: मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़म्री क़द्दसल्लाहो रूह़ेही से सुना कि आप फ़रमाते थे, नाह़ियए मुक़द्दसा से एक तौक़ीअ़् बरामद हुई है। ऐसे ख़त़ में कि जिसको मैं पहचानता हूँ (यअ़्नी नाह़ियए

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से) और उस त़ौक़ीअ़् में इस त़रह़ लिखा हुआ था:

مَنْ سَمَّانِي فِي مَجْمَعٍ مِنَ النَّاسِ بِاسْمِي فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ

मन सम्मानी फ़ी मज्मइ़न मिनन्नासे बेइ़स्मी फ़अ़लैहे लअ़्नतुल्लाहे.

जो किसी मज्मेअ़् और मह़फ़िल में मेरे नाम से मुझे पुकारे उस पर लअ़्नते ख़ुदा हो।

(कमालुद्दीन, स़.४८३)

अबू अ़ली मोह़म्मद बिन हमाम ने कहा कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के हुज़ूर में एक ख़त लिखा और ज़हूर के वक़्त के बारे में सवाल किया कि कब होगा? जवाब में फ़रमाया:

كَذَبَ الْوَقَّاتُون

क-ज़बल वक़्क़ातू-न.

जो लोग ज़हूर के वक़्त का तअ़य्युन करते है वोह झूटे हैं।

(कमालुद्दीन, स़.४८३)

तज़क्कुर

इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के नाम लेने को मनअ़् करने की इल्लत ख़ुद ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ही ने इस त़रह़ बयान फ़रमाई है:

إِمَّا السُّكُوتَ وَ الْجَنَّةَ وَ إِمَّا الْكَلَامَ وَ النَّارَ فَإِنَّهُمْ إِنْ وَقَفُوا عَلَى الِاسْمِ أَذَاعُوهُ وَإِنْ وَقَفُوا عَلَى الْمَكَانِ دَلُّوا عَلَيْهِ.

इम्मस्सुकू-त वल जन्न-त व इम्मल कला-म वन्ना-र फ़-इन्नहुम इन व-क़फ़ू अ़लल इस्मे अ़ज़ाऊहो व इन व-क़फ़ू अ़लल मकाने दल्लू अ़लैहे.

या नाम लेने में ख़ामोशी इख़्तेयार करना चाहिए ताकि जन्नत के ह़क़दार हों या फिर (उनके बारे में) गुफ़्तुगू करें ताकि जहन्नम में डाले जाएँ क्योंकि अगर (सवाल करने वाले) नामे ह़ज़रत से वाक़िफ़ हुए तो उसे मुन्तशिर-ओ-आ़म कर देंगे और अगर जगह से वाक़िफ़ हो जाएंगे तो लोगो को बता देंगे।

(बेहारुल अनवार, जि.५१, स़.३५१)

तज़क्कुर

स़ाह़बे वसाएलुश्शीआ़ ने जिल्द १६ बाब ३३ स़.२४० रवायत नंबर २१४६० के ज़ैल में नाम न लेने कि वजह तक़य्या और ख़ौफ़ करार दिया है।

(२) अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र हुमैरी कहते हैं कि मैंने मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा से कहा कि मैं चाहता हूँ कि आपसे वही सवाल करूँ जो ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदावन्द आ़लम से किया था और कहा था:

رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتَى قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلَى وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي.

रब्बे अरेनी कै-फ़ तोह्यिल मौता क़ा-ल अ-वलम तोअ़्मिन क़ा-ल बला व लाकिन लेयत़्मइन-न क़ल्बी.

ख़ुदाया! मुझे दिखा कि किस त़रह़ मुर्दे को ज़िन्दा करता है। ख़ुदा ने कहा क्या तुम ईमान नहीं रखते? ह़ज़रत इब्राहीम ने कहा, क्यों नहीं (हाँ) लेकिन चाहता हूँ कि मेरा दिल मुत़्मइन हो जाए।

मुझे बताओ कि स़ाह़बुल अम्र को देखा है? मोह़म्मद बिन उ़स्मान ने कहा, हाँ और उनकी गर्दन इस त़रह़ है और अपने हाथ से अपनी गर्दन की त़रफ़ इशारा किया।

(कमालुद्दीन, बाब मन शाहेदल क़ाएम, ह़.३)

(३) अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र हुमैरी कहते है मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़म्री अ़लैहिर्रह़्मा से सुना, आप फ़रमाते थे:

وَ اللّٰهِ إِنَّ صَاحِبَ هَذَا الْأَمْرِ لَيَحْضُرُ الْمَوْسِمَ كُلَّ سَنَةٍ فَيَرَى النَّاسَ وَيَعْرِفُهُمْ وَيَرَوْنَهُ وَلَا يَعْرِفُونَه

वल्लाहे इन-न स़ाहे-ब हाज़ल अम्रे ल-यह़ज़ोरुल मौसे-म कुल-ल स-नतिन फ़-यरन्ना-स व यअ़्रेफ़ोहुम व यरौनहू व ला य़अ़्रेफ़ू-नहू.

खुदा की क़सम स़ाहेबल अम्र अ़लैहिस्सलाम **हर साल (मौसमे ह़ज) में मक्का आते हैं, आप लोगों को देखते हैं और उन्हें पहचानते हैं और लोग भी उन्हें देखते हैं लेकिन उन को नहीं पहचानते।**

(कमालुद्दीन, बाब मन शाहेदल क़ाएम, ह़.८)

तज़क्कुर

मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा ही ने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को ख़ानए कअ़्बा में येह कहते हुए देखा लेहाज़ा येह ह़दीस भी आप ही से नक़्ल हुई है:

اَللّٰهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي

अल्लाहुम-म अन्जिज़ ली मा वअ़्दतनी.

ख़ुदाया जो कुछ तूने मुझसे वअ़्दा किया है उसे अंजाम तक पहुँचा दे।

(कमालुद्दीन, बाब मन शाहेदल क़ाएम, ह़.९)

आप ही के ज़रीए़ येह ह़दीस भी नक़्ल हुई है, फ़रमाते हैं: मैंने ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम को बाबुल मुस्तजार के पास ख़ानए ख़ुदा के पर्दे को पकड़ कर अ़र्ज़ करते हुए सुना:

اَللّٰهُمَّ انْتَقِمْ لِي مِنْ أَعْدَاءِ

अल्लाहुम-म इन्तक़िम ली मिन अ़अ़्दाई (अव अ़अ़्दाए-क).

ख़ुदाया! मेरे ज़रीए़ से अपने दुश्मनों से इन्तेक़ाम ले।

(कमालुद्दीन, बाब मन शाहेदल क़ाएम, स़. ४४०, ह़.१०)

तज़क्कुर

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा से अपने ज़हूर के इज़्न का इन्तेज़ार कर रहे हैं और अपने ज़हूर के लिए दुआ फ़रमाते हैं: हमें हमेशा आप अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए दुआ करते रहना चाहिए और बिलख़ुसूस़ उन मक़ामात पर जहाँ दुआएँ जल्द मुस्तजाब होती हैं। जैसे ह़ज के दौरान अल मुस्तजार पर।

दुआए समात

मशहूर-ओ-मअ़रूफ़ दुआ, दुआए समात जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान के ज़रीए़ वारिद हुई है। मफ़ातीहुल जिनान में येह दुआ मौजूद है। इसे दुआए शब्बूर भी कहते हैं और जुमआ के दिन आख़िरी साअ़तों में इसका पढ़ना मुस्तहब हैं। शेख़ अ़ब्बास कुम्मी अ़लैहिर्रह्मा ने इसको क़दीम किताबों से नक़्ल किया है। येह दुआ इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जअ़्फ़र स़ादिक़ अ़लैहेमस्सलाम से भी वारिद हुई है। अ़ल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रह्मा ने बेहारुल अनवार में इसे शर्ह के साथ बयान किया है।

ख़ुलफ़ाए बनी अ़ब्बास

जनाब मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा के दौरे नेयाबत में जिन ख़ुलफ़ा ने हुकूमत की उनके नाम दर्जे ज़ैल हैं:

१. मोअ़्तमिद बिल्लाह (२५६ से २७९ हिजरी)

२. मोअ़्तज़िद बिल्लाह (२७९ से २८९ हिजरी)

३. मकतफ़ी बिल्लाह (२८९ से २९५ हिजरी)

४. मुक़्तदिर बिल्लाह (२९५ से ३२० हिजरी)

मुद्दते नेयाबत

उ़लमाए रेजाल के दरमियान मशहूर है कि मुद्दते नेयाबत पचास साल के क़रीब है लेकिन येह क़ौल क़ाबिले क़ुबूल नहीं है। इसलिए कि वफ़ाते मोहम्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह्मा ३०५ हिजरी में वाक़ेअ़् हुई और शहादते इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम से इसका फ़ास़ला ४५ साल है और ग़ैबते सुग़रा इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द ही से शुमार की जाती है यअ़्नी ४५ साल में नाएबे अव्वल का ५ साल दौरे नेयाबत शामिल है। इस त़रह़ दूसरे नाएब का दौरे नेयाबत ४० साल क़रार पाता

है।

वफ़ात

आप की वफ़ात जमादील-ऊला सन ३०५ हिजरी नक़्ल हुई है। बअ़्ज़ लोगों ने ३०४ हिजरी भी लिखा है। लेकिन अबू ग़ालिब ज़ोरारी जो इब्ने रौह़ के कूफ़ा में वकील थे और मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा से बहुत करीब जाने जाते थे, आपने ३०५ हिजरी नक़्ल किया है। मोह़क़्क़ेक़ीन इसी रवायत को तरजीह़ देते हैं।

आप की वफ़ात के बारे में आप ने ख़ुद ही दो महीने पहले पेशीनगोई कर दी थी लेहाज़ा अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद दल्लाल क़ुम्मी नक़्ल करते हैं कि एक रोज़ मोह़म्मद बिन उ़स्मान की ख़िदमत में पहुँचा, देखा कि एक लौह़ उनके सामने है और उस पर आप कुछ नक़्शा ख़ींच रहे हैं क़ुरआन की आयतें लिख रहे हैं और उसके ह़ाशिये में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के नाम लिख रहे हैं। मैंने सवाल किया येह कैसी लौह़ है? फ़रमाया! येह मेरी क़ब्र के लिए है और मुझे इसी पर रखेंगे। या येह कहा कि मैं इस पर तकिया करूँगा और फ़रमाया हर रोज़ अपनी क़ब्र में दाख़िल होता हूँ और क़ुरआन का एक पारा पढ़ता हूँ और बाहर आ जाता हूँ। एक रवायत में है कि इसके बअ़्द अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद ने कहा कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा ने मेरे हाथों को पकड़ा और अपनी क़ब्र के पास ले गए और क़ब्र दिखा कर कहा! जब फ़ुलाँ रोज़, फ़ुलाँ महीना और फ़ुलाँ साल आ पहुँचे तो मैं ख़ुदा की बारगाह में चला जाऊँगा और इसमें दफ़्न हूँगा और येह लौह़ भी मेरे साथ होगी। मैंने उनकी बातों को याद कर लिया और मुअ़य्यना वक़्त का इन्तेज़ार करता रहा। थोड़े ही दिन बअ़्द आप बीमार हुए और बिलआख़िर बताए हुए दिन-ओ-माह-ओ-साल में आप ने वफ़ात पाई और उसी क़ब्र में दफ़्न हुए।

(तारीख़े सियासी ग़ैबते इमाम दवाज़ दहम अ़लैहिस्सलाम, स़.१७०)

इसी त़रह़ की रवायत मोह़म्मद बिन अ़ली बिन अस्वद क़ुम्मी ने भी नक़्ल किया है। रुजूअ् कीजिये बेहारुल अनवार जिल्द ५१, स़फ़्ह़ा ३५१; कमालुद्दीन जिल्द २/५०२ ह़.२९।

नाएबे इमाम की ज़ेयारत

जिनके दिलों पर मुह़र लग जाती है वोह क्या इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम को पहचानेंगे। दिल पर लगी उस मुह़र को मह़्व करने के लिए चाहिए कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा की क़ब्र पर जाएँ और देखें कि येह क़ब्र आज भी एक नाएबे इमाम के वजूद का पता दे रही है। बग़दाद के मशरिक़ में मशग़ूल और भीड़ भाड़ वाले इन्तेहाई स़ाफ़ सुथरे और पॉश इलाक़े में एक मस्जिद जो ख़ुल्लानी के नाम से मशहूर है, इसी में आपकी क़ब्र है और आज भी लोग नाएबे इमाम के अ़क़ीदे के तह़त आपकी ज़ेयारत करते हैं और कहते हैं:

अश्हदो अन्न-क बाबुल मौला..... जेअ्तो-क अ़रेफ़न बिलह़क़्क़िल्लज़ी अन-त अ़लैहे व अन्न-क मा ख़ुन-त फ़ित्तादियते वस्सेफ़ारते. अस्सलामो अ़लै-क मिन बाबिन मा अव-स-अ़हू.

मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि आप मेरे मौला के दरे रह़मत हैं..... मैं आपके इस ह़क़ का अ़ारिफ़ बन कर (आप की ख़िदमत में) आया हूँ जिस पर आप क़ाएम रहे और मुझे मअ़्लूम है कि आप ने पैग़ाम रसानी या सेफ़ारत में कोई कोताही नहीं की। सलाम हो आप पर ऐ वसीअ़् तरीन दरे रह़मत।

(मफ़ातीहुल जिनान, तर्जुमा अ़ल्लामा अल-जवादी, स़.८९७)

तीसरे नाएबे ख़ास़

जनाब हुसैन बिन रौह़ नोबख़्ती रह़्मतुल्लाह अ़लैह

नाम : हुसैन

कुनियत : अबुल क़ासिम

वालिद का नाम : रौह़

दादा का नाम : अबी बह़्र

ख़ानदान : नोबख़्त

इस त़रह़ आप अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह़ बिन बह़्र नोबख़्ती के नाम से पहचाने जाते हैं। आपकी वेलादत की तारीख़ कुतुबे रेजाल-ओ-तारीख़ में मुशख़्ख़स़-ओ-मअ़्लूम नहीं है।

ह़सब-ओ-नसब

मुवर्रेख़ीन ने लिखा है कि अबू सुहैल इस्माईल बिन अ़ली के बअ़्द ख़ानदाने नोबख़्ती में सबसे ज़्यादा मशहूर शख़्स़ अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह़ बिन अबी बह़्र हैं और उनकी शोहरत का अहम ज़रीआ उनका दीनी मक़ाम-ओ-मन्स़ब है। वोह शीओं के दरमियान ह़ज़रत क़ाएम अ़लैहिस्सलाम के नव्वाबे अरबअ़् में से एक नाएब शुमार किए जाते हैं।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२३३)

शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने अपनी किताब रेजाल में हुसैन बिन रौह़ का कोई तज़्केरा नहीं किया और उनकी इत्तेबाअ़् में इब्तेदाई स़दियों के उ़लमाए रेजाल ने भी आपकी ज़िन्दगी पर कोई रोशनी नहीं डाली। और दौरे ह़ाज़िर के उ़लमाए रेजाल ने स़िर्फ़ आपके नाम ही पर इक्तेफ़ा किया है। लेकिन शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने अपनी किताब "अल-ग़ैबा" में आपके बारे

में बहुत सी हदीसें नक़्ल की हैं जिससे आपकी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ गोशे वाज़ेह-ओ-रोशन हो जाते हैं।

इब्ने शह्रे आशोब ने हुसैन बिन रौह़ को इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के ख़ास़ अस़्ह़ाब में शुमार किया है।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२३४, नक़्ल अज़ मनाक़िब ४/४२३)

हुसैन बिन रौह़ दूसरे नाएब के दौर में:

बेनाबर मशहूर आप इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के अस़्ह़ाब में से थे और दूसरे नाएब मोह़म्मद बिन उ़स्मान रिज़वानुल्लाह अ़लैह के दौरे नेयाबत में आप उनके नज़्दीकी कारगुज़ारों में शुमार होते थे। नाएबे दुवुम के नज़्दीक आपका मक़ाम-ओ-मर्तबा इस क़द्र बलन्द था कि नाएबे दुवुम ने रुअसाए इमामिया को मुख़्तलिफ़ त़बक़ात में तक़सीम करने के बअ़्द हुसैन बिन रौह़ को अव्वल दर्जा का मक़ाम अ़त़ा किया था और तमाम रुअसा में हुसैन बिन रौह़ वोह पहले शख़्स़ थे जिन्हें आपने ख़ुद से मुलाक़ात की इजाज़त दे रखी थी।

तज़क्कुर

जो बात मज़्कूरा रविश की रोशनी में सामने आती है वोह येह है कि नाएबीने ख़ास़ ग़ैरे मअ़्मूली मुदीरियत के ह़ामिल थे और जिस तदब्बुर-ओ-तदबीर से काम लेते थे उससे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के जाए सुकूनत को दुश्मनों पर हरगिज़ ज़ाहिर ने होने देते थे। येह बात एक ग़ैर मअ़्मूली स़लाहियत का पता देती है क्योंकि ग़ैबते सुग़रा साल दो साल का ज़माना नहीं है बल्कि सात दहाइयों पर मुश्तमिल इस त़ूलानी दौर में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से बराबर राबेत़ा रखना और लोगों के मसाएल को इमाम तक पहुँचाना और उनके जवाबात से लोगों को बाख़बर करना इन तबादलों में ज़रूर लोगों को इस बात का इस़रार होता होगा कि इमाम

कहाँ हैं, क्यों हम से नहीं मिल सकते, हम मिलना चाहते हैं। क़ारेईन! ख़ुद इस बात पर ग़ौर करें कि अगर हम किसी चीज़ को छिपाना चाहें जबकि दूसरों को येह मअ्लूम हो कि चीज़ छिपाई गई है और हम उसे जानते हैं और फिर लोग इस़रार पर इस़रार करें कि उसका पता बताओ, कुछ रोज़ तो हम उसे छिपा सकते हैं, टाल मटोल कर सकते है लेकिन सालहा साल नहीं। बस इसी से अंदाज़ा किया जा सकता है कि अइम्मए मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने नाएबीन को किस त़रह़ से तरबियत दी थी।

जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़लैहिर्रह़्मा ने आप को अपने और वोकलाए बग़दाद के दरमियान ह़ल्क़ए इत्तेस़ाल (राबेत़ा) क़रार दिया था। हुसैन बिन रौह़ इन तमाम चीज़ों के साथ साथ नाएबे दुवुम ही के दौर में ख़ास़ मस़्लेह़तों की बेना पर दरबारे बनी अ़ब्बास में भी ग़ैर मअ्मूली असर-ओ-रुसूख़ रखते थे और नतीजे में हुकूमत से आपको मदद भी पहुँचती थी। इस सिलसिले में ज़ैल के वाक़ेआ पर तवज्जोह फ़रमाएँ:

मरहूम शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह़मा ने अबू मोह़म्मद ह़सन बिन मोह़म्मद बिन यह़्या अ़लवी से नक़्ल किया है कि अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद बिन अ़ली अ़क़ीक़ी सन २९८ हिजरी में बग़दाद आए और अ़ली बिन ईसा बिन जर्राह़ जो कि उस वक़्त हुकूमत में वज़ीर के ओ़हदे पर था, से मुलाक़ात की ताकि अपनी इम्लाक के सिलसिले में उससे बाज़पुर्स करें और अपनी ह़ाजत-ओ-ज़रूरत को वज़ीर से त़लब करें। वज़ीर ने कहा: इस शहर में तुम्हारे रिश्तेदार बहुत ज़्यादा हैं। अगर उन में से हर एक ने त़लब किया और हम उनको देना चाहें तो मुआ़मला त़ूलानी हो जाएगा और हम इस मुआ़मले को ह़ल न कर पाएँगे। अ़क़ीक़ी ने वज़ीर के जवाब में कहा: मैं अपनी ह़ाजत को उससे त़लब कर रहा हूँ जिसके ज़रीए़ मुश्किल ह़ल हो सकती है। अ़ली बिन मूसा ने कहा वोह कौन है? तो कहा! ख़ुदावन्द अज़्ज़ व जल्ल। येह कहकर ग़ुस़्से की ह़ालत में बाहर निकल गए।

अ़क़ीक़ी कहा करते थे कि मैं ग़ुस्से की ह़ालत में बाहर आया और कह रहा था: ख़ुदावन्द अ़ालम हर हलाकत पर स़ब्र दे देता है और हर मुस़ीबत की तलाफ़ी कर देता है, येह कह कर मैं वहाँ से निकल गया। फिर हुसैन बिन रौह़ की जानिब से एक क़ास़िद पैग़ाम लेकर मेरे पास आया, मैंने उससे वज़ीर की शिकायत की और उसने भी इस शिकायत को हुसैन बिन रौह़ से बयान कर दिया। दोबारा वही क़ास़िद मेरे पास आया और सौ दिरहम मेरे लिए लाया। सब को गिना और वज़्न किया और एक रूमाल और कुछ मेक़दार में हुनूत़ और चंद अ़दद कफ़न मुझे दिया और कहा: तुम्हारे सरवर-ओ-आक़ा ने तुम्हें सलाम भेजा है और कहा है: जब कोई मुश्किल या ग़म-ओ-अन्दोह तुम पर आए तो इस रूमाल को अपनी स़ूरत पर मल लेना। येह रूमाल तुम्हारे आक़ा का रूमाल है। इस रक़म और हुनूत़-ओ-कफ़न को साथ ले जाओ। और जान लो कि आज की शब तुम्हारी ह़ाजत पूरी हो जाएगी और इसी के साथ येह भी कहा: जब तुम मिस्र पहुँचोगे तो मोह़म्मद बिन इस्माईल, तुमसे दस रोज़ क़ब्ल मर जाएँगे और फिर दस रोज़ बअ़्द तुम भी इस दुनिया से रुख़्सत हो जाओगे। येह कफ़न और हुनूत़ तुम्हारे लिए है। मैंने उसे ले लिया और वोह क़ास़िद चला गया। अचानक मैंने ख़ुद को अपने घर के दरवाज़े के चिराग़ के किनारे पाया। उस वक़्त दरवाज़े के पास से आवाज़ आई, मैंने अपने ग़ुलाम से कहा! सब कुछ ठीक तो है? देखो कौन है? वोह गया और कहा ठीक है! वज़ीर के चचा के लड़के ह़मीद बिन मोह़म्मद कातिब का ग़ुलाम है। उसे मेरे पास लाया, उसने मुझसे कहा: वज़ीर ने आपको बुलाया है और मेरे मालिक ह़मीद ने कहा है मेरे पास चले आओ। मैं भी सवार हुआ और चला यहाँ तक कि कूचए वज़्ज़ानीन में पहुँचा तो ह़मीद को देखा कि वोह बैठा मेरा इन्तेज़ार कर रहा है। जब उसने मुझे देखा तो आया और मुस़ाफ़ेह़ा के बअ़्द हम लोग फिर सवार हुए और वज़ीर के घर पहुँचे।

वज़ीर ने मुझसे कहा! ऐ बूढ़े शख़्स! ख़ुदा ने तुम्हारी ह़ाजत को पूरा किया फिर मुझसे मआ़फ़ी चाही और कुछ काग़ज़ात जिन पर मोहर लगी हुई (इम्लाक के काग़ज़ात) मुझे दिए, मैं उन्हें लेकर बाहर आ गया।

(कमालुद्दीन, बाब तौक़ीआ़त, ह़.३६)

तज़क्कुर

इस वाक़ेआ़ से हुसैन बिन रौह़ के असर-ओ-रुसूख़ का अंदाज़ा किया जा सकता है। इस वाक़ेआ़ से येह भी पता चलता है कि सन २९८ हि. में मोह़म्मद बिन उ़स्मान के दौरे नेयाबत का तक़रीबन सात साल बाक़ी था और आप अभी नाएबे इमाम भी न हुए थे लेकिन ग़ैबी ख़बरें इमाम अ़लैहिस्सलाम की जानिब से आप तक पहुँचती थीं।

जनाब हुसैन बिन रौह़ का इन्तेख़ाब

जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान ने अपनी वफ़ात से दो, तीन साल क़ब्ल ही बअ़्ज़ शीओं को जो सह्मे इमाम या दूसरी रक़में लेकर आते थे, उसे हुसैन बिन रौह़ नोबख़्ती से रुजूअ़् करने को कहते गोया उनकी नेयाबत के लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की जानिब से ज़मीन को हमवार कर रहे थे। जो लोग इस सिलसिले में शक करते उनसे कहा करते येह हुक्मे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम है। इस सिलसिले की कई ह़दीसें किताबों में मिलती हैं। यहाँ एक ह़दीस नक़्ल करते हैं:

मोह़म्मद बिन अ़ली अस्वद कहते हैं: कुछ अमवाल जो वक़्फ़ किए गए थे, मुझ तक पहुँचते थे, उन्हें मोह़म्मद बिन उ़स्मान के पास ले जाता था। वोह मुझसे ले लिया करते थे। एक मर्तबा उनकी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में कुछ मेक़दार में अमवाल लेकर उनके पास पहुँचा लेकिन

मोहम्मद बिन उ़स्मान ने हुक्म दिया कि उसे हुसैन बिन रौह़ के ह़वाले कर दूँ।

मैंने भी उन अमवाल को उनके ह़वाले कर दिया और उनसे रसीद दरियाफ़्त की।

हुसैन बिन रौह़ ने इस बारे में मोह़म्मद बिन उ़स्मान से शिकायत की तो उन्होंने हुक्म दिया कि अमवाल की रसीद का मुत़ालबा उनसे न करो और फ़रमाया: जो कुछ अमवाल अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह़ को दिया गया वोह ऐसा है कि जैसे मुझे दिया गया। इसके बअ़्द जब भी अमवाल हुसैन बिन रौह़ के पास ले गया उनसे रसीद का मुत़ालबा न किया।

(कमालुद्दीन, बाब तौक़ीआत, ह़.२८)

इसी त़रह़ का एक वाक़ेआ अबू अ़ब्दिल्लाह जअ़्फ़र बिन मोह़म्मद मदाई मअ़्रूफ़ बेह "इब्ने क़िज़दा" से भी नक़्ल हुआ है जिसे शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने अल-ग़ैबा, स़.३६७ पर लिखा है।

मोह़म्मद बिन उ़स्मान ने हुसैन बिन रौह़ को अपना जानशीन मोअ़य्यन करने के लिए बड़ी ताकीद से काम लिया। कभी इन्फ़ेरादी स़ूरत में, कभी मुख़्लिस़ शीओं के मज्मअ़् में तो कभी अपने वकीलों से नेयाबत का ज़िक्र किया और उसकी वजह स़ाफ़ है क्योंकि हुसैन बिन रौह़ के बारे में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम से उनकी वसाक़त-ओ-अमानत पर किसी त़रह़ की नस़्स़ बत़ौरे दलील स़ादिर नहीं हुई थी। वोकलाए बग़दाद और ख़ास़-ओ-आम शीओं में भी ऐसा कोई तस़व्वुर न था कि हुसैन बिन रौह़ जानशीनी के लिए मुन्तख़ब होंगे। इसलिए मोह़म्मद बिन उ़स्मान ने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की जानिब से हुसैन बिन रौह़ की नेयाबत को बयान करने में हर फ़ुरस़त का फ़ाएदा उठाया।

जअ़्फ़र बिन मोह़म्मद बिन क़ूलवै क़ुम्मी फ़रमाते हैं: हमारे असातज़ा कहा करते थे, हमें इस बात में शक नहीं था कि जब मोह़म्मद बिन उ़स्मान

वफ़ात पाएँगे तो सिवाए जअ्फ़र अह्मद बिन मुत्तील या उनके वालिद के उनकी जगह कोई न लेगा क्योंकि उनके अंदर मोह्म्मद बिन उ़स्मान की ख़ुसूसि़यात थीं और हम येह भी जानते थे कि वोह किस क़द्र उनके घर पर वक़्त बसर करते थे। यहाँ तक कि मोह्म्मद बिन उ़स्मान अपनी उ़म्र के आख़िरी दिनों में सि़र्फ़ जअ्फ़र बिन मुत्तील और उनके वालिद के घर से तैयार होने वाली ग़ेज़ा खाया करते थे या फिर जअ्फ़र बिन मुत्तील या उनके वालिद के घर पर चले जाते और वहीं खाना खाया करते थे। मख़्सूस़ शीओं में ज़रा भी शक न था कि अगर कोई ह्रादेसा मोह्म्मद बिन उ़स्मान के साथ पेश आया तो अपनी वस़ीयत के मुत़ाबिक़ जअ्फ़र बिन मुत्तील को अपना जानशीन बनाएँगे। लेकिन जब देखा कि उन्होंने अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह्र के लिए वस़ीयत की तो सब तस्लीम हो गए और उन्हें जानशीने मोह्म्मद बिन उ़स्मान की ह्रैसियत से क़बूल कर लिया और मोह्म्मद बिन उ़स्मान की त़रह्र उनके साथ बर्ताव किया। जअ्फ़र बिन मुत्तील भी जब तक ज़िन्दा थे मोह्म्मद बिन उ़स्मान के दौर की त़रह्र उनके निज़ामे नेयाबत में भी काम करते रहे।

"येह है इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के मुख़्लिस़ यावरों की सि़फ़त कि शख़्सीयतों के बदलने से फ़अ़्आलियत में कमी नहीं आती।"

जअ्फ़र बिन मोह्म्मद बिन क़ूलवै क़ुम्मी फ़रमाते हैं: फिर जो शख़्स़ हुसैन बिन रौह्र को बुरा कहे उसने मोह्म्मद बिन उ़स्मान को बुरा कहा और जिसने उन्हें बुरा कहा, दर ह्रक़ीक़त उसने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को बुरा कहा और उन ह्रज़रत अ़लैहिस्सलाम पर तन्क़ीद की।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२४३)

मज़्कूरा ह्रदीसों पर ग़ौर किया जाए तो मअ्लूम होगा कि मोह्म्मद बिन उ़स्मान के वकीलों में कुछ लोग हुसैन बिन रौह्र के मुक़ाबिले में उनके बहुत क़रीब थे और ज़ाहेरन उन्हीं लोगों से आप (का मिलना जुलना था)

और हुसैन बिन रौह़ से ज़ाहिरी इर्तेबात़ बहुत कम नज़र आता था इसलिए येह बात ज़्यादा मशहूर थी कि उन्हीं लोगों में से कोई जानशीन होगा और पिछली ह़दीसों से येह भी वाज़ेह हुआ है कि बावजूद इसके कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान के दौर ही में नेयाबत हुसैन बिन रौह़ की त़रफ़ मुन्तक़िल हो रही थी लेकिन येह बात ज़्यादा मशहूर न थी पस मअ़्लूम हुआ कि हुसैन बिन रौह़, मोह़म्मद बिन उ़स्मान (के सब से ज़्यादा) बज़ाहिर नज़्दीक न होने के बावजूद जानशीनी के लिए मशहूर थे।

अबू अ़ली मोह़म्मद बिन हुमाला रावी हैं कि मोह़म्मद बिन उ़स्मान रज़ियल्लाहो अ़न्हो ने अपनी रेह़लत से पहले बुज़ुर्गान और रुअसाए शीआ़ को जमअ़् किया और कहा: अगर मेरी रेह़लत वाक़ेअ़् हो जाए तो मेरे जानशीन हुसैन बिन रौह़ नोबख़्ती हैं। मैं इस बात पर मामूर हूँ कि अपनी जगह पर उन्हें मोअ़य्यन करूँ। पस तुम भी उन्हीं से रुजूअ़् करो और अपने कामों में उन पर एअ़्तेमाद करो।

(बेहारुल अनवार, जि.५१, स़.३५५)

हुसैन बिन रौह़ को पहली तौक़ीअ़्

अबुल अ़ब्बास बिन नूह कहते हैं कि मोह़म्मद बिन नफ़ीस ने अहवाज़ से ख़त़ लिखा था मैंने ख़त़ में लिखा हुआ देखा पहली तौक़ीअ़् जो हुसैन बिन रौह़ के बारे में नाह़ियए मुक़द्दसा इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से स़ादिर हुई, इस त़रह़ थी:

हम उन्हें (हुसैन बिन रौह़ को) पहचानते हैं, ख़ुदावन्द आ़लम अपनी तमाम ख़ूबियों और रज़ा-ओ-ख़ुशनूदी को उन्हें अ़त़ा फ़रमाए और उन्हें अपनी तौफ़ीक़ात से सरफ़राज़ करे। उनके ख़त़ से हम वाक़िफ़ हुए और वोह हमारे

नज़्दीक मूरिदे वुसूक़-ओ-इत़्मीनान हैं। ख़ुदावन्द आ़लम अपने एह़सान और अच्छाइयों को उन पर इज़ाफ़ा करे।

(अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़.३७२, ह़.३४४)

येह तौक़ीअ़् बरोज़े इतवार, माहे शव्वाल की छटी शब गुज़रने के बअ़्द सन ३०५ हिजरी को पहुँची है। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की जानिब से हुसैन बिन रौह़ अ़लैहिर्रह़्मा को नेयाबत की ज़िम्मेदारी मिलने की वजह यूँ बयान हुई है:

१- वफ़ादारी-ओ-होशियारी, स़ब्र-ओ-बुर्दबारी और उन सबसे अह़म उनका इख़्लास़ उनकी जानशीनी का सबब बना। उन मख़्सूस़ सियासी ह़ालात में इन अ़वामिल की सख़्त ज़रूरत थी। वरना रक़ाबत-ओ-ह़सद-ओ-दुश्मनी का सामना यक़ीनी था। बहुत से फ़क़ीह़-ओ-मुतकल्लिम मौजूद थे और अ़वाम की नज़रें भी उन्हीं लोगों पर थीं।

२- शीआ़ और सुन्नी, दोनों की त़रह़ के लोगों में आपका सबसे ज़्यादा अ़क़्लमंद होना, दूसरे येह कि आपने दुश्मन और दोस्त हर एक को राम कर दिया था। लेहाज़ा जो आख़िरी तौक़ीअ़् इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की जानिब से हुसैन बिन रौह़ के ज़रीए़ स़ादिर हुई है, इसमें तह़रीर है:

وَ كَانَ أَبُوْ الْقَاسِمِ رَحِمَهُ اللهُ مِنْ أَعْقَلِ النَّاسِ عِنْدَ الْمَخَالِفِ وَ الْمُوَافِقِ وَيَسْتَعْمِلُ التَّقِيَّةِ

व का-न अबुल क़ासिम रह़्मेहुल्लाहो मिन अअ़्क़लिन्नासे इन्दल मोख़ालिफ़े वल मोवाफ़िक़े व यस्तअ़्मेलुत्तक़य्यते.

अबुल क़ासिम अ़लैहिर्रह़्मा मुख़ालिफ़-ओ-मुवाफ़िक़ में सबसे ज़्यादा अ़क़्लमंद इन्सान हैं और उनकी रविश तक़य्या है।

(अल- ग़ैबा, स़.३८४)

आपके तक़य्ये की बहुत सी दास्तानें हैं। मरहूम शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह्मा ने अपनी किताब अल-ग़ैबा में अबू नस्र हेबतुल्लाह बिन मोहम्मद के ज़रीए इब्ने यसार वज़ीर मुक़्तदिर बिल्लाह अ़ब्बासी के घर में हुसैन बिन रौह की मौजूदगी में ५ सुन्नी उ़लमा के दरमियान येह गुफ़्तुगू हो रही थी और उसमें एक का कहना था कि पैग़म्बर अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही वसल्लम के बअ़्द सबसे अफ़ज़ल अबू बक्र हैं, फिर उ़मर, फिर अ़ली। दूसरे का कहना था अ़ली सबसे अफ़ज़ल हैं।

इस मसअले को हुसैन बिन रौह ने हल कर दिया। अलबत्ता उसका तक़ाज़ा जो था उसी के तहत हल किया और इस त़रह शीओं की हेफ़ाज़त की। अह्ले मजलिस हुसैन बिन रौह के ज़बरदस्त हामी हो गए।

३- आपके इन्तेख़ाब की एक इल्लत येह भी बताई जाती है कि मुम्किन था कि मुख़ालेफ़ीन मोहम्मद बिन उ़स्मान से शक-ओ-शुब्हा ज़ाहिर करें कि अपने नज़्दीकियों में से चुन लिया और येह कहते कि येह मोहम्मद बिन उ़स्मान का ज़ाती नज़रिया है, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से इसका कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। (येह बात लिख चुके हैं कि हक़ीक़त में हुसैन बिन रौह, मोहम्मद बिन उ़स्मान के बहुत क़रीब थे लेकिन ज़ाहिरन दूसरे नौ अफ़राद उन के ज़्यादा क़रीब नज़र आते थे।)

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२५२)

नाएब की हैसियत से काम की इब्तेदा

मोहम्मद बिन उ़स्मान की वफ़ात के बअ़्द उनकी वस़ीयत के मुताबिक़ अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह नोबख़्ती के नाएबे सेवुम होने की एक रस्मी मजलिस, "दारुन्नेयाबह" बग़दाद में मुनअ़क़िद हुई। इसमें शीओं के बुज़ुर्ग और सरकर्दा अफ़राद हुसैन बिन रौह के साथ जमअ़् हुए। इस वाक़ेअ़्

को सैयद इब्ने ताऊस अलैहिर्रह्मा ने अपनी किताब "मोहजुद्दअ्वात" में इस तरह दर्ज किया है:

"जब शेख़ अबू जअ्फ़र मोहम्मद बिन उस्मान सईद अम्री अलैहिर्रह्मा ने रेहलत फ़रमाई और अम्रे नेयाबत से फ़ारिग़ हुए, शेख़ अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह बिन अबी बह्र, मोहम्मद बिन उस्मान के मकान पर हाज़िर हुए। मोहम्मद बिन उस्मान के ख़ादिम "ज़का" ने उनके सामान को आपके हवाले किया। वोह सामान येह थे:

१. कुछ मकतूबात जो एक साथ लपेटे हुए थे और एक तूमार।

२. अस़ा (अक्काज़ह)।

३. लकड़ी का एक सन्दूक़ रंग लगा हुआ।

ख़ादिम ने इन चीजों को हुसैन बिन रौह को दिखाया। उन्होंने उसे अपनी तहवील में ले लिया और मोहम्मद बिन उस्मान के वारिसों से कहा: इस तूमार में अइम्मा अलैहिमुस्सलाम की वदीअतें ज़िक्र हुई हैं। और उन्हें आपने खोला और बताया तो उसमें अइम्मा अलैहिमुस्सलाम की दुआएँ और क़ुनूत दर्ज थे। वारिसों ने इसे छोड़ दिया और कहा: यक़ीनन इस सन्दूक़ में सोना और जवाहेरात हैं। हुसैन बिन रौह ने कहा, क्या इस सन्दूक़ को बेचोगे? उन लोगों ने कहा: कितनी क़ीमत अदा करोगे? हुसैन बिन रौह ने अबुल हसन यअ्नी इब्ने शबीब कोशारी से कहा! इन लोगों को दस दीनार दे दो। वोह लोग राज़ी न हुए। हुसैन बिन रौह ने बढ़ा कर कहा, यहाँ तक कि सौ दीनार पर पहुँचे इस पर भी वोह राज़ी न हुए तो कहा अगर इस मेक़दार में भी तुमने न बेचा तो पछताओगे। वोह लोग राज़ी हो गए और सौ दीनार ले लिया। हुसैन बिन रौह ने अस़ा और तूमार को अलाहेदा किया और सन्दूक़ को ख़ुद उठा लिया जब सन्दूक़ का मसअ्ला हल हो गया तो आपने फ़रमाया! अस़ा हज़रत इमाम अबी मोहम्मद हसन अस्करी अलैहिस्सलाम का है जिसे आपने शेख़ उस्मान बिन सईद को वकील बनाते

वक़्त और वसीयत करते वक़्त उनके ह़वाले किया था और वोह अब तक मौजूद है और रहा सवाल इस सन्दूक़ का तो इसमें अइम्मा की अंगूठियाँ हैं। येह अंगूठियाँ अलग ही ख़ुसूसियात की ह़ामिल थीं, बाहर निकाला और उन लोगों को दिखाया।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२५२-२५४)

रवायत से स़ाफ़ ज़ाहिर है कि हुसैन बिन रौह़ का दौर बह़ैसियत सफ़ीरे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम पहले और दूसरे सफ़ीर के मुक़ाबले में शीओं के दरमियान में बहुत ज़्यादा आश्कार रहा है और इसी वजह से शायद बहुत से अफ़राद अपने इलाक़ों के वोकला से राबेत़े के बजाए बराहे रास्त हुसैन बिन रौह़ से राबेत़ा क़ाएम किया करते थे। आपसे पहले अदवार में अत़राफ़-ओ-अकनाफ़ के लोगों की मुख़ालेफ़तें ज़्यादा देखने में आती हैं लेकिन आपके दौर में बहुत कम मुख़ालेफ़त हुई।

मुन्किरे नेयाबत

सन ३०७ हिजरी में मोह़म्मद बिन फ़ज़्ल मूस़ली ने आपकी नेयाबत का इन्कार किया लेकिन ह़सन बिन अ़ली वजना की रहनुमाई और हुसैन बिन रौह़ के बअ़्ज़ उमूर के मुशाहदे से तौबा कर ली।

एक बात का तज़्केरा यहाँ ज़रूरी है कि बअ़्ज़ लोगों ने ह़सन वजना के सिलसिले में तह़रीर किया है कि आप मुन्किराने वकालत-ओ-नेयाबते हुसैन बिन रौह़ थे और आपके नाम को भी बअ़्ज़ लोगों ने ह़सन बिन अ़ली वजना और बअ़्ज़ ने हुसैन लिखा है।

इस सिलसिले में मरहूम आयतुल्लाहुल उ़ज़्मा आक़ाए ख़ूई रह़्मतुल्लाह अ़लैह ने अपनी किताब "मोअ़्जमुर्रेजाल अल-ह़दीस" जि.५, स़.१३० पर इनका नाम इस त़रह़ लिखा है: अबू मोह़म्मद ह़सन बिन मोह़म्मद वजना

नसीबी। आपने इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम से हदीसें नक़्ल की हैं और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात भी की है।

शेख़ तूसी अलैहिर्रह्मा ने आपको मदाफ़ेअ् हुसैन बिन रौह बयान किया है। हसन वजना नसीबीन के इलाक़े में हुसैन बिन रौह के वकील थे और अह्ले मिस्र के लिए भी आप ही ख़त-ओ-किताबत करते थे। इसी तरह क़ासिम बिन अला और उनके दो अहबाब अबू हामिद इमरान बिन मुफ़लें और अबू अली हज्दर आज़र-बाईजान में और मोहम्मद बिन जअ्फ़र असदी सन ३१२ हिजरी तक शहरे रै में और मोहम्मद बिन हसन सीरफ़ी बलख़ में हुसैन बिन रौह और लोगों के दरमियान में राबेते की हैसियत से काम करते थे।

(तारीख़े सियासी ग़ैबते इमाम दवाज़ दहम, स.१९६-१९८)

सियासी पह्लू

हुसैन बिन रौह अलैहिर्रह्मा मुक़्तदिर अब्बासी के दौर (२९५ से ३२० हिजरी) में वुज़रा और उम्माले हुकूमत के नज़्दीक बहुत ज़्यादा क़ाबिले एह्तेराम रहे हैं। लेकिन मुक़्तदिर ही के दौर में आपको क़ैद भी किया गया है। मुक़्तदिर बहुत कमसिनी में ख़लीफ़ा बना था। उसके वज़ीरों में जब तक ख़ानदाने फ़ुरात के लोग शामिल थे हुसैन बिन रौह का हुकूमत में बड़ा अमल दख़ल रहा लेकिन हामिद बिन अब्बास जो इन्तेहाई क़िस्म का बद अख़्लाक़ और बदमिज़ाज था यहाँ तक की ग़ुस्से की हालत में गालियाँ दिया करता था, जब उसके हाथ वज़ारत आई तो उसने आले फ़ुरात को परेशान करना शुरुअ् किया और उनके अतराफ़ जो शीआ होते उन्हें भी क़ैद-ओ-बन्द की मुसीबतें झेलनी पड़तीं। उन्हीं में हुसैन बिन रौह भी सख़्तियों से दो चार हुए। सख़्तियों का दौर माहे जमादिल आख़िर सन ३०६ हिजरी से माहे रबीउल आख़िर सन ३११ हिजरी तक है यअ्नी

तक़रीबन पाँच साल। इस पाँच साला दौर में हुसैन बिन रौह़ अ़लैहिर्रह़्मा ने छिप कर ज़िन्दगी गुज़ारी। खुले अ़ाम आपकी कोई फ़अ़्आलियत न थी। ह़ामिद बिन अ़ब्बास के मअ़्ज़ूल किए जाने के बअ़्द फिर शीअ़ों के ह़ालात बेहतर हुए और हुसैन बिन रौह़ ने फिर खुले अ़ाम अपनी फ़अ़्आलियत को शुरुअ़् किया लेकिन ३१२ हिजरी में आपको हुकूमत ने गिरफ़्तार कर लिया। मुवर्रेख़ीन ने इस गिरफ़्तारी की दो इल्लतें बयान की हैं:

१. हुसैन बिन रौह़ पर तोहमत लगाई गई कि आपका तअ़ल्लुक़ क़ेरामत़ा के साथ है और आपने अबू त़ाहिर क़िरमत़ी को ख़त़ लिखा है और दअ़्वत दी है कि वोह बग़दाद आए और बग़दाद का मुह़ासे़रा करे। (अबू त़ाहिर ने बग़दाद के ह़ाजियों पर ह़मला किया था और उन्हें क़ैदी बना लिया था। उन ह़ाजियों में ख़लीफ़ा मुक़्तदिर के कुछ रिश्तेदार भी थे)।

२. एक तोहमत येह लगाई गई कि वोह लोग उनको अपना माल ह़वाले कर देते हैं और वोह सारा माल अपनी तह़वील में ले लेते हैं। बअ़्ज़ लोगों ने येह भी लिखा है कि हुकूमत उनसे कुछ अमवाल का मुत़ालबा कर रही थी जिसे वोह अ़दा न कर सके।

हुसैन बिन रौह़ माहे ज़िलह़िज्जा सन ३१२ हिजरी में फिर गिरफ़्तार हुए और माहे मोह़र्रम सन ३१७ हिजरी में क़ैद से आज़ाद हुए और फिर पूरे एह़्तेराम के साथ बग़दाद में अपने कामों में मश्ग़ूल हो गए। आपके लिए ह़ालात इसलिए भी साज़गार हो गए कि आले नोबख़्त से अबू यअ़्क़ूब इस्ह़ाक़ बिन इस्माईल (मक़्तूल दर ३२२ हिजरी), अबुल ह़सन अ़ली बिन अ़ब्बास (२४४-३२४) और अबू अ़ब्दिल्लाह हुसैन बिन अ़ली नोबख़्ती (मुतवफ़्फ़ा ३२६) हुकूमत में बड़े ओहदों पर फ़ाएज़ थे।

इल्मी मन्ज़ेलत

जिसका राबेत़ा बराहे रास्त हुज्जते ख़ुदा से हो और हुज्जते ख़ुदा की ए़नायात-ओ-तवज्जोहात और अल्त़ाफ़-ओ-इकराम जिसके शामिले ह़ाल हों उसके इल्म का क्या कहना।

मोह़म्मद बिन इब्राह़ीम इब्ने इस्ह़ाक़ त़ालेक़ानी अ़लैहिर्रह़्मा ने जब अ़ली बिन ईसा क़स्री के सवाल को जिसमें हुसैन बिन रौह़ अ़लैहिर्रह़्मा से पूछा था कि आया इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम वलीए ख़ुदा थे? और उनका क़ातिल दुश्मने ख़ुदा था? तो आपके मुस्बत जवाब के बअ़्द सवाल किया था, क्या येह स़ह़ीह़ है कि ख़ुदा अपने दुश्मन को वली पर मुसल्लत करे? इन सवालों के जवाबों को सुन कर मोह़म्मद बिन इब्राहीम बिन इस्ह़ाक को शक हुआ था और दूसरे दिन जब हुसैन बिन रौह़ के सामने पहुँचे तो मोह़म्मद बिन इब्राह़ीम के बग़ैर कुछ पूछे ही आपने फ़रमाया:

ऐ मोह़म्मद बिन इब्राहीम! अगर मैं आसमान से गिरूँ और परिन्दों का लुक़्मा बन जाऊँ तो मैं इसे बेहतर समझता हूँ उस बात से कि अपनी राय से या ख़ुद से दीने ख़ुदा के बारे में कुछ कहूँ। जो कुछ जवाब मैंने दिया था उसका सरचश्मा हुज्जते ख़ुदा है। मैंने इसे हुज्जते ख़ुदा से सुना है।

(इस्बातुल हुदा, जि.१, स़.११७, ह़.१६८)

हुसैन बिन रौह़ ने जो जवाब दिया था उसका ख़ुलास़ा येह है कि ख़ुदा बराहे रास्त लोगों से गुफ़्तुगू नहीं करता। जिस त़रह़ हम गुफ़्तुगू करते हैं बल्कि अंबिया जो बशर की शक्ल में आए उनके ज़रीए गुफ़्तुगू करता है। उनको मोअ़्जेज़ात अ़त़ा किए जिसको पेश करने से दूसरे आ़जिज़ रहे। इसके बावजूद कुछ लोग ईमान नहीं लाए यअ़्नी अंबिया कभी ग़ालिब तो कभी मग़लूब होते थे और मुस़ीबतों और बलाओं में गिरफ़्तार होते थे। अगर ख़ुदा हर चीज़ पर अंबिया को ग़ालिब रखता तो लोग उन्हें ही ख़ुदा

समझने लगते और फिर स़ब्र-ओ-बला और इम्तेहान के कोई मअ़्ना न होते।

और इसीलिए ख़ुदा ने उन्हें बशर होने के साथ साथ उन ख़ुसूसि़यात से नवाज़ा ताकि वोह मुस़ीबत-ओ-गिरफ़्तारी के दौर में स़ब्र से काम लें और अच्छे औक़ात और दुश्मनों पर ग़लबा के मौक़अ़् पर ख़ुदा का शुक्र करें और हर ह़ाल में मुतवाज़ेअ़् हों और बग़ावत-ओ-सरकशी से दूर हों ताकि बंदे येह समझ सकें कि ख़ुदा है, ख़ालिक़ है और हर उमूर में उसी की तदबीर होती है।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.२६५)

आपके मक़ामे इ़ल्मी का अंदाज़ा लगाने के लिए ह़दीस की किताबों की त़रफ़ रुजूअ़् करें जैसे अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा, स़.३९० ह़.३५६, स़.३७८ ह़.३४६ और स़.३७३ ह़.३४५। कमालुद्दीन अज़ शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह़्मा, जि.२ स़.५१९ ह़.४८। बेहारुल अनवार अज़ अ़ल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रह़्मा, जि.५३ स़.१९२ ह़.२० (बेहार की इस जिल्द का उर्दू तर्जुमा भी मौजूद है और कमालुद्दीन का भी उर्दू तर्जुमा मौजूद है)।

करामात-ओ-मुकाशेफ़ात:

बेशुमार वाक़ेआ़त और दास्तानें मौजूद हैं। उन में से सि़र्फ़ दो मुलाह़ेज़ा हों:

१. हुसैन बिन अ़ली बाबवै (शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह़्मा के भाई) ने नक़्ल किया है कि एक गिरोह हमारे शह़्रे क़ुम से उस साल (३११ हिजरी) जिसमें क़ेरामत़ा ने ह़ाजियों पर ह़मला किया था, ह़ज के लिए रवाना हो रहा था तो मेरे वालिद (अ़ली बिन बाबवै अ़लैहिर्रह़्मा) ने एक ख़त़ शेख़ अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह़ अ़लैहिर्रह़्मा को लिखा कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की बारगाह में पेश कर दें और इस साल ह़ज्जे बैतुल्लाह के लिए इजाज़त ह़ासि़ल कर लें। इमामे ज़माना

अ़लैहिस्सलाम की जानिब से इस मज़्मून के साथ जवाब स़ादिर हुआ: इस साल ह़ज पर न जाओ। मेरे वालिद ने दूसरा ख़त़ लिखा! मुझ पर ह़ज वाजिब है। आया जाएज़ है कि इज्तेनाब करूँ? जवाब आया अगर जाना नहीं रुक सकता तो आख़िरी कारवान के साथ जाओ।

चूँकि मेरे वालिद आख़िरी कारवान के साथ तशरीफ़ ले गए, बच गए लेकिन उनसे पहले जाने वाले कारवान हलाक हो गए।

(बेहारुल अनवार, जि.५१, स़.२९३, ह़.१)

२. अह़मद बिन इस्ह़ाक़ कुम्मी ने जब आपके तवस्सुत से ह़ज पर जाने की इजाज़त त़लब की तो हुसैन बिन रौह़ ने इजाज़त दी और साथ ही एक कपड़ा भेजा। अह़मद बिन इस्ह़ाक़ ने देखा और कहा येह तो मेरे मरने की इत्तेलाअ् है। और ह़ज से लौटते वक़्त ह़लवान के मक़ाम पर आपका इन्तेक़ाल हो गया।

वफ़ाते हुसैन बिन रौह़:

आप ३०५ हिजरी में मन्सबे नेयाबत पर फ़ाएज़ हुए और ३२६ हिजरी में इस दारे फ़ानी से कूच किया। इस त़रह़ आपके नेयाबत की मुद्दत तक़रीबन २१ साल होती है लेकिन अगर दो, तीन साल उस मुद्दत को भी मिलाया जाए जो आपने जनाब मोह़म्मद बिन उ़स्मान की ज़िन्दगी में वकालत की ज़िम्मेदारी निभाई तो कुल २३ साल से ज़्यादा ही होगी।

आपकी क़ब्र बग़दाद में "नोबख़्तिया" में अ़ली बिन अह़मद नोबख़्ती के मकान के दरवाज़े पर वाक़ेअ् है। आपकी वफ़ात शबे चहार शम्बा, १८ शअ्बान ३२६ हिजरी में हुई।

आज भी आपकी क़ब्र बग़दाद में उसी मक़ाम पर बाक़ी है लेकिन अब इस इलाक़े को "सूक़ुल अ़त्तारैन" कहते हैं। ज़ाएरीन अ़तबाते आ़लियाते काज़मैन की ज़ेयारत के मौक़ेअ् पर इस अ़ज़ीम नाएबे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़ेयारत को फ़रामोश न करें।

चौथे नाएबे ख़ास़
जनाब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी
रह़्मतुल्लाह अ़लैह

नाम : अ़ली

कुनियत : अबुल ह़सन

वालिद का नाम : मोह़म्मद

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के चौथे और आख़िरी नाएबे ख़ास़ अबुल ह़सन अ़ली बिन मोह़म्मद समरी, जनाब हुसैन बिन रौह़ नोबख़्ती के बअ़्द मन्स़बे नेयाबत पर फ़ाएज़ हुए। आपकी नेयाबत के लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने अबुल क़ासिम बिन रौह़ नोबख़्ती को हुक्म दिया। लेहाज़ा इमाम अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से आप नाएब क़रार पाए।

समरी ख़ानदान उन शीआ़ ख़ानदानों में से है जो अपने तदय्युन और तशय्योअ़् की ख़िदमत के लिए मशहूर है और यही वजह है कि अ़ली बिन मोह़म्मद की नेयाबत-ओ-सेफ़ारत की किसी ने मुख़ालेफ़त नहीं की।

इसी ख़ानदान के बहुत से अफ़राद जैसे इस्माईल बिन स़ालेह़ के बेटे ह़सन और अ़ली बिन ज़ेयाद के बेटे मोह़म्मद, बसरा में बड़ी जाएदाद के मालिक थे, उन ह़ज़रात ने अपनी अमलाक से होने वाली आमदनी को हमारे ग्यारहवें इमाम ह़ज़रत ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.३०४)

इसके अ़लावा ख़ानदाने समरी के बअ़्ज़ अफ़राद इमामे रज़ा अ़लैहिस्सलाम के ख़िदमतगारों में से थे। इसी त़रह़ दीगर अइम्मा के बअ़्ज़

अस्ह़ाब समरी ख़ानदान से थे जैसे अ़ली बिन मोह़म्मद बिन ज़ेयाद जो दसवें और ग्यारहवें इमाम, इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम और इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के वकील भी रह चुके हैं और उन्होंने एक किताब भी लिखी है 'अल औस़िया' और इस किताब में बारहवें इमाम अ़लैहिस्सलाम की इमामत को साबित किया है, इस किताब को तज़्केरा सैयद इब्ने त़ाऊस अ़लैहिरह़्मा ने अपनी गराँक़द्र किताब 'मोहजुद्दअ़्वात', स़फ़्हा ४२८ (त़ब्ए़ जदीद अज़ मुअस्सए इन्तेशारात रायहा फ़ारसी तर्जुमा के साथ जो ख़ूबस़ूरत रेह़्ली (बड़ी साइज़ में शाएअ़् हुई है) पर किया है। इस किताब से सैयद इब्ने त़ाऊस ऱह़्मतुल्लाह अ़लैह ने दो ह़ेकायतें नक़्ल की हैं जिस में इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल की साज़िश करने वाले अ़ब्बासी ख़ुलफ़ा मुस्तईन और मोअ़्तज़िद की हलाकत की दास्तान है।

इसी त़रह़ अ़ली बिन ज़ेयाद के बारे में मिलता है कि आपने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को ख़त़ लिखा और आप अ़लैहिस्सलाम से एक अ़दद कफ़न का मुतालबा किया, ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने जवाब में लिखा: तुमको इसकी ज़रूरत ८० हिजरी (यअ़्नी २८०) में होगी। फिर अ़ली बिन ज़ेयाद ने सन २८० हिजरी में वफ़ात पाई और ह़ज़रत इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने उनकी वफ़ात से चंद रोज़ पहले कफ़न रवाना किया।

(कमालुद्दीन २/५०१, ह़.२६)

बहरह़ाल इन चंद वाक़ेआ़त से समरी ख़ानदान के अफ़राद की अहम्मीयत और अ़ज़मत-ओ-शराफ़त का अंदाज़ा होता है।

क्यों न अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी मिले उन लोगों को जिनको अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की ताईद ह़ास़िल हो।

चौथे नाएब का लक़ब

आपके लक़ब के तलफ़्फ़ुज़-ओ-तह्रीर में कुछ इख़्तेलाफ़ देखा गया है। इस सिलसिले में जनाब अ़ली ग़फ़्फ़ार ज़ादे ने बुज़ुर्ग उ़लमा के ह्वाले से अपनी तह्क़ीक़ पेश की है।

आपका लक़ब समरी (फ़त्हे सीन-ओ-मीम के साथ) या सैमुरी (फ़त्हे सीन,सुकूने या और ज़म्मे मीम) या सैमरी (फ़त्हे मीम के साथ) या फिर स़ैमुरी या स़ैमरी था।

इस सिलसिले में तह्रीर फ़रमाते है कि शेख़ तूसी ने अपनी किताब ग़ैबत में और जनाब शेख़ स़दूक ने कमालुद्दीन में कुत़्बे रावन्दी ने ख़राएज में और दीगर क़दीम किताबों में (फ़त्हे सीन-ओ-मीम के साथ) आया है इसलिए हम भी इसको स़ह्ीह़ क़रार देते हैं। क्योंकि इस बात में शक नहीं है कि रेजाल-ओ-ह्दीस की किताबों में स़ैमुरी या सैमुरी बहुत कम नज़र आता है लेकिन बअ़्ज़ मआ़स़ेरीन आपकी शर्हे ह्ाल लिखते वक़्त आपके लक़ब को ज़म्मे मीम के साथ समुरी) और बअ़्ज़ ने फ़त्हे मीम के साथ समरी लिखा है और फ़त्हे मीम के साथ समरी ज़्यादा क़रीने क़यास और स़ह्ीह़ मअ़्लूम होता है इसलिए कि बस़रा और वासित़ के दरमियानी इलाक़े में एक जगह समरी है और शेख़ आक़ा बुज़ुर्ग तेहरानी ने इसे फ़त्हे मीम से लिखा है।

(पज़ूहशी पैरामूने ज़िन्दगानीए नव्वाबे ख़ास़, स़.३०५)

ख़ुलासा येह कि आपका लक़ब समरी है।

आप अ़लैहिर्रह्मा का दौर

जनाब अ़ली बिन मोह्म्मद की नेयाबत के दौर में ह्ाकिमाने वक़्त की सितमगरी, ख़ूँरेज़ी और ज़ुल्म-ओ-सितम अपने औज पर था इसलिए आप अपने पेशरौ नाएबीन की त़रह् बहुत ज़्यादा फ़अ़्आल न थे आपकी

फ़अ़्आलियत बहुत मह़दूद थी इसलिए आपने अपने नुमाइन्दे वकीलों के साथ राबेत़े को बहुत ही मह़दूद रखा था। लेकिन उन तमाम मह़दूदियत के बावजूद आपका राबेत़ा शीओं से बरक़रार था और आपकी जलालत-ओ-वसाक़त शीओं के नज़्दीक वैसी ही थी जैसी दूसरे नव्वाब की। इसलिए अ़वाम उनके वोकला के ज़रीए़ रक़ूमे शरई उन तक पहुँचाते थे।

आपकी तारीख़ी वेलादत-ओ-ह़ालाते ज़िन्दगी के बारे में ज़्यादा तफ़्स़ीलात किताबों में नहीं मिलती लेकिन आपकी नेयाबत के मुख़्तसर दौर का ज़िक्र किताबों में मुसलसल आया है।

जनाब अ़ली बिन मोह़म्मद अ़लैहिर्रह़्मा स़ह़ाबिये इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम

शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने अपनी किताब रेजाल में स़फ़्ह़ा ४३२ पर आपको "अस़्ह़ाबे इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम" में शुमार किया है।

ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने अ़ली बिन मोह़म्मद समरी से ख़त़-ओ-किताबत भी फ़रमाई है। मुलाह़ेज़ा हो:

अ़ली बिन मोह़म्मद समरी कहते हैं कि अबू मोह़म्मद इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम ने मुझे तह़रीर फ़रमाया कि "एक फ़ित्ना बरपा होने वाला है जो तुमको गुमराह कर देगा और तुम अपने दस्त-ओ-पा खो बैठोगे, तुम उससे होशियार रहना और उससे बचना" तीन रोज़ बअ़्द बनी ह़ाशिम के दरमियान एक ऐसा वाक़ेआ़ पेश आया कि जिसकी वजह से बनी ह़ाशिम को बड़ी सख़्त मुस़ीबत और दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। मैंने ह़जरत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम को लिखा कि क्या येह वही फ़ित्ना है जिसके बारे में आप अ़लैहिस्सलाम ने तह़रीर फ़रमाया था? ह़ज़रत ने फ़रमाया! नहीं इसके अ़लावा है, इसलिए तुम अपने आप को

पूरी त़रह़ बचाओ, उसके कुछ दिनों बअ़्द मोअ़्तज़ अ़ब्बासी ख़लीफ़ा के क़त्ल का वाक़ेआ रूनुमा हुआ।

(कशफ़ुल ग़ुम्मा, जि.३, स़.२०७, पज़ूहशी....३०६)

बहरहाल येह ख़त़-ओ-किताब इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम से राबेत़े का पता देती है।

ख़बरे ग़ैबी अ़ली बिन मोह़म्मद अ़लैहिर्रह़्मा

अ़ली बिन मोह़म्मद समरी रह़्मतुल्लाह अ़लैह से भी दूसरे नाएबीन की त़रह़ करामत को नक़्ल किया गया है जिसके ज़रीए़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से आपके राबेत़े का इस्तेह़्काम स़ाबित होता है और शीआ़ ह़ज़रात उन करामत का मुशाहेदा करने के बअ़्द नेयाबत में किसी त़रह़ के शक-ओ-शुब्हे से हमेशा मह़फ़ूज़ रहे।

शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने अपने असातज़ा के ह़वालों से हुसैन बिन अ़ली बिन बाबवै क़ुम्मी (शेख़ स़दूक अ़लैहिर्रह़्मा के भाई) की ज़बानी नक़्ल किया है कि आपने फ़रमाया: क़ुम की एक जमाअ़त इमरान स़फ़्फ़ार, अ़लवीए स़फ़्फ़ार और हुसैन बिन अह़मद बिन इदरीस ने नक़्ल किया है कि: जिस साल मेरे वालिद अ़ली बिन हुसैन मूसा बिन बाबवै (वालिदे शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह़्मा) ने वफ़ात पाई वोह लोग बग़दाद तशरीफ़ लाए वोह लोग कहते है कि अ़ली बिन मोह़म्मद समरी ने हम में से हर एक से अ़ली बिन बाबवै के बारे में दरियाफ़्त किया और हम लोगों ने भी कहा कि ख़त़ आया है वोह अच्छे हैं जब तक उनका इन्तेक़ाल नहीं हुआ था वोह हमसे पूछते रहे और हम लोगों ने भी जवाब में यही कहा कि वोह ठीक हैं। एक मर्तबा आपने फिर वही सवाल किया और हम लोगों ने कहा अभी जवाब नहीं आया है तो आपने फ़रमाया: अ़ली बिन हुसैन की रेह़लत पर ख़ुदा तुम लोगों को अज्र अ़त़ा करे। वोह लोग कहते हैं जिस वक़्त उन्होंने येह बात

कही उस वक़्त अ़ली बिन हुसैन ने वफ़ात पाई। इसलिए हम लोगों ने उस दिन, उस महीने और वक़्त को याद रखा, जब सत्रह या अट्ठारह रोज़ गुज़र गए तो ख़बर आई कि अ़ली बिन मोहम्मद बाबवै ने उसी वक़्त रेहलत फ़रमाई है जिस वक़्त अबुल हसन समरी ने बताया था।

(बेहारुल अनवार, जि.१५,.स.१६३, ह.८, नक़्ल अज़ ग़ैबते तूसी)

इसी वाक़ेए को शेख़ स़दूक़ अ़लैहिर्रह्मा ने अपने वालिद की वफ़ात के तक़रीबन दस साल बअ़्द ३३९ हिजरी में अबुल हसन स़ालेह बिन शुऐब त़ालेक़ानी के ज़रीए सुना और त़ालेक़ानी से अहमद बिन इब्राहीम मोख़ल्लद ने बयान किया और अहमद बिन इब्राहीम ने बराहे रास्त अ़ली बिन मोहम्मद समुरी रज़ियल्लाहो अ़न्हो को येह कहते हुए सुना:

रहेमल्लाहो अ़ली यब्नल हुसैनिब्ने मूसब्ने बाबवै अल-कुम्मी।

(कमालुद्दीन २/३०५ ह.२३)

तौक़ीअ़्

ग़ैबते सुग़रा में स़ादिर होने वाली आख़िरी और तारीख़ी तौक़ीअ़्, बल्कि यूँ कहा जाए कि जिसके ज़रीए चौथे नाएबे ख़ास़ जनाब अ़ली बिन मोहम्मद समरी रज़ियल्लाहो अ़न्हो, दुनियाए तशय्योअ़् में जाने पहचाने जाते हैं, और जिस तौक़ीअ़् के ज़रीए नेयाबते ख़ास़ के एख़्तेताम और ग़ैबते कुबरा के आग़ाज़ का एअ़्लान हुआ, बहुत गराँक़द्र मफ़ाहीम लिए हुए है। येह तौक़ीअ़् जनाब समरी की रेहलत के कुछ रोज़ पहले इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की जानिब से स़ादिर हुई है। हदीसों की बहुत सी किताबों में अल्फ़ाज़ के कुछ रद्द-ओ-बदल के साथ येह तौक़ीअ़् मुबारक मौजूद है। आपकी मौत से पहले बअ़्ज़ लोगों ने दरियाफ़्त किया कि आपका जानशीन कौन है तो आपने दर्ज ज़ैल तौक़ीअ़् उनके सामने पेश कर दी।

يَا عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ السَّمُرِيَّ أَعْظَمَ اللّٰهُ أَجْرَ إِخْوَانِكَ فِيكَ فَإِنَّكَ مَيِّتٌ مَا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ سِتَّةِ أَيَّامٍ فَاجْمَعْ أَمْرَكَ وَ لَا تُوصِ إِلَى أَحَدٍ يَقُومُ مَقَامَكَ بَعْدَ وَفَاتِكَ فَقَدْ وَقَعَتِ الْغَيْبَةُ الثَّانِيَةُ فَلَا ظُهُورَ إِلَّا بَعْدَ إِذْنِ اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ وَ ذَلِكَ بَعْدَ طُولِ الْأَمَدِ وَ قَسْوَةِ الْقُلُوبِ وَ امْتِلَاءِ الْأَرْضِ جَوْراً وَ سَيَأْتِي شِيعَتِي مَنْ يَدَّعِي الْمُشَاهَدَةَ أَلَا فَمَنِ ادَّعَى الْمُشَاهَدَةَ قَبْلَ خُرُوجِ السُّفْيَانِيِّ وَ الصَّيْحَةِ فَهُوَ كَاذِبٌ مُفْتَرٍ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अ़लीयब-न मोह़म्मदिस्स-मरी-य, अअ़्ज़मल्लाहो अज-र इख़्वाने-क फ़ी-क फ़इन्न-क मय्यतुन मा बै-न-क व बै-न सित्तते अय्यामिन, फ़ज्मअ़् अम्र-क व ला तूसे एला अ-ह़दिन फ़-यक़ूमा मक़ा-म-क बअ़्-द व-फ़ाते-क फ़क़द व-क़-अ़तिल ग़ैबतुत्ताम्मतो फ़ला ज़ोहू-र इल्ला बअ़्-द इज़्निल्लाहे तअ़ाला ज़िक्रोहू व ज़ाले-क बअ़-द तूलिलअ-मदे व क़स्वतिल क़ुलूबे वम्तेलाइल अर्ज़े जौरन व सयाती शीअ़ती मन यद्दइल मुशाह-द-त अला फ़मनिद्दअ़ल मुशाह-द-त क़ब्ल ख़ुरूजिस्सुफ़्यानीया वस्सैह़ते फ़हो-व काज़ेबुन मुफ़्तर-र व ला ह़ौ-ल व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अ़लीयिल अ़ज़ीम.

ऐ अ़ली बिन मोह़म्मद समरी ख़ुदावन्द मुतअ़ाल तुम्हारी मुसीबत में तुम्हारे भाइयों के अज्र-ओ-सवाब में इज़ाफ़ा करे। छह दिन के अंदर तुम्हारा इन्तेक़ाल हो जाएगा पस

तुम अपने उमूर को समेट लो, और अपने बअ़्द किसी से वस़ीयत न करना। तुम्हारे इन्तेक़ाल के बअ़्द येह सिलसिला (नेयाबते ख़ास्सा) मुन्क़त़अ़् हो जाएगा और ग़ैबते ताम्मा (कुबरा) का आग़ाज़ हो जाएगा। अब ख़ुदा के हुक्म से ज़हूर होगा वोह भी एक त़वील मुद्दत और लोगों के क़सीयुलक़ल्ब हो जाने के बअ़्द। और फिर मेरे शीओं पर ऐसा ज़माना आएगा जिसमें लोग मेरे दीदार का दअ़्वा करेंगे। जो कोई सुफ़्यानी के ख़ुरूज़ और स़ह़ीह़ा (आसमानी नेदा) से पहले इस त़रह़ का दअ़्वा करे वोह झूटा और तोहमत लगाने वाला है। ख़ुदाए बुज़ुर्ग-ओ-बरतर के अ़लावा कोई ताक़त-ओ-क़ूवत नहीं है।

जैसा कि ऊपर नक़्ल कर चुके हैं कि लोगों ने अ़ली बिन मोह़म्मद समरी से उनके जानशीन के बारे में दरियाफ़्त किया तो आपने इस तौक़ीअ़् को उनके सामने पेश कर दिया। मरहूम त़बरसी रह़्मतुल्लाह अ़लैह इसके बअ़्द फ़रमाते हैं कि इन लोगों ने तौक़ीअ़् की नुस्ख़ा बरदारी कर ली और चले गए और जब छटा दिन आया तो वोह लोग फिर आए और देखा कि अ़ली बिन मोह़म्मद समरी बीमार हैं और क़रीब है कि वोह इन्तेक़ाल करें। उनसे फिर दरियाफ़्त किया:

مَنْ وَصِيُّكَ مِنْ بَعْدِكَ

मन वस़ीयो-क मिन बअ़्दे-क?

आपके बअ़्द आपका जानशीन कौन है? तो फ़रमाया!

لِلّٰهِ أَمْرٌ هُوَ بَالِغُهُ

लिल्लाहे अम्रुन हो-व बालेग़ोहू.

ख़ुदा के लिए अम्र-ओ-मशीयत है वोह ख़ुद उसको अंजाम पहुँचाने वाला है।

यही आपकी ज़िन्दगी के आख़िरी कलेमात थे।

इस तौक़ीअ् के लिए दर्ज ज़ैल किताबों की त़रफ़ रुजूअ् किया जा सकता है। अल-ग़ैबा अज़ शेख़ तूसी, स़फ़्हा ५९३; कमालुद्दीन, जिल्द २, स़फ़्हा ६१५; अल-एह्तेजाज, जिल्द २, स़फ़्हा ८७४; बेहारुल अनवार, जिल्द १५, स़फ़्हा ६३, जिल्द २५, स़फ़्हा १५१ और जिल्द ३५, स़फ़्हा ८१३; अअ्लामुलवरा, स़फ़्हा ७१४; तर्जुमए फ़ारसी यौमुलख़लास़, जिल्द १, स़फ़्हा ४०३; तर्जुमए फ़ारसी अअ्यानुश्शीआ, स़फ़्हा ५५; मुन्तख़बुल असर स़फ़्हा, ९९३; यनाबीउ़ल मवद्दा (उर्दू तर्जुमा त़बअ् लाहौर), स़फ़्हा ५१७।

तह्लील-ओ-तज्ज़िया

इस तौक़ीअ् का गहराई से मुत़ालआ किया जाए तो मअ्लूम होगा कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम जनाब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी रह़्मतुल्लाह अ़लैह को मुख़्तलिफ़ उमूर की त़रफ़ मुतवज्जेह किया है और साथ ही अपने वुजूदे मुबारक को उन मुन्केरीन पर वाज़ेह किया है जो शीअ़याने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

१) इमाम अ़लैहिस्सलाम की पेशीनगोई के छह रोज़ बअ्द अ़ली बिन मोह़म्मद समरी का इन्तेक़ाल हो जाएगा। और ऐसा ही हुआ इससे लोगों में येह यक़ीन पैदा हुआ कि तौक़ीअ् इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ही की जानिब से स़ादिर हुई है।

२) इमाम अ़लैहिस्सलाम ने अ़ली बिन मोह़म्मद समरी को हुक्म दिया कि वोह अपने बअ्द किसी को अपना जानशीन न बनाएँ। इस त़रह़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से बराहे रास्त मुलाक़ात का रास्ता बन्द हो गया यअ्नी

ग़ैबते कुबरा में आपका कोई बराहे रास्त नाएब न होगा। और न ही कोई किसी को इमाम का नाएब मोअ़य्यन कर सकता है। इस त़रह़ ग़ैबते कुबरा में मुद्दईयाने नेयाबते ख़ास़ का क़लअ़् क़मअ़् हो जाता है।

३) इस तौक़ीअ़् से येह भी मअ़्लूम होता है कि दूसरी ग़ैबत या ग़ैबते ताम्मा (कुबरा) का आग़ाज़ हुआ।

४) इमाम अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त तक ज़हूर न फ़रमाएंगे जब तक इज़्ने ख़ुदा न हो जाए।

५) इस तौक़ीअ़् से येह बात भी ज़ाहिर होती है कि जो इमाम से अ़लल एअ़्लान मुलाक़ात का दअ़्वा करे वोह झूटा है तोहमत लगाने वाला है।

एअ़्तेराज़

यहाँ एक बात मुतज़ाद और मुख़्तलिफ़ मअ़्लूम होती है वोह येह कि तौक़ीअ़् में है कि मुलाक़ात का दअ़्वा करने वाला झूटा है जबकि ऐसी बेशुमार ह़ेकायात-ओ-दास्तानें मिलती हैं जिनसें स़ाफ़ ज़ाहिर है कि बहुत से उ़लमा और अ़वाम ने इमाम अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ातें की हैं। येह तज़ाद क्यों?

जवाब

अ़ल्लामा मजलिसी रह़्मतुल्लाह अ़लैह ने बेहारुल अनवार में दो मक़ामात पर इस तज़ाद का ह़ल पेश किया है और बअ़्द के उ़लमा ने इससे इस्तेफ़ादा किया है। हम ख़ुलास़े के त़ौर पर यहाँ जवाब तह़रीर कर रहे हैं। फ़रमाते हैं:

(१) जैसा कि बअ़्ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि मुम्किन है मुद्दईये मुशाहेदा को कज़्ज़ाब-ओ-मुफ़तरी इसलिए कहा गया हो कि जो लोग दअ़्वाए नेयाबत करेंगे वोह इमाम से मुलाक़ात-ओ-मुशाहेदे को अपने दअ़्वा की दलील क़रार देंगे और अ़वाम को धोका देंगे और उन्हीं ह़ेकायात और

हज़रत से शरफ़े मुलाक़ात के वाक़ेआत पर ग़ौर किया जाए तो मअ्लूम होगा कि येह इस बात की दलील और क़रीना पेश कर रहे हैं कि तौक़ीअ् में मुशाहेदा और मुलाक़ात की नफ़्ये मुतलक नहीं आई है बल्कि इससे मुराद उस (दअ्वे) की नफ़ी है जो किसी ख़ास़ शख़्स की नेयाबत पर दलालत करे।

(२) येह भी मुमकिन है कि "मुद्दईये मुशाहेदा कज़्ज़ाब-ओ-मुफ़तर है" से मुराद "इख़्तेयारी इर्तेबात़-ओ-मुलाक़ात के दअ्वे की नफ़ी हो यअ्नी कोई इस बात का दअ्वा करे कि उसकी मुलाक़ात-ओ-राबेत़ा उसके इख़्तेयार में है और वोह जब चाहे इमाम अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ास़िल कर सकता है तो वोह शख़्स कज़्ज़ाब-ओ-मुफ़तर कहलाएगा" और ग़ैबते कुबरा में इस त़रह़ दअ्वा करने वाले को हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा।

ख़ुलासा येह कि मुशाहेदे की नफ़ी मुतलक़ नहीं आई है। और ग़ैबते कुबरा में अपने इख़्तेयार से कोई भी इमाम अ़लैहिस्सलाम से नहीं मिल सकता बल्कि ह़ज़रत जिससे चाहें वोह उनसे मिल सकते है यअ्नी मुलाक़ात का इख़्तेयार ह़ज़रत को ह़ास़िल है।

इस त़रह़ मुलाक़ात के मशहूर-ओ-मुतवातिर वाक़ेआत और ह़ेकायतों पर किसी क़िस्म का शुब्हा करना दुरुस्त नहीं है।

ख़त्मे सिलसिलए नेयाबते ख़ास़्स़ा

आयतुल्लाह सैयद मोह़म्मद बाक़िर अस़्स़द्र रह़्मतुल्लाह अ़लैह जिन्हें मलऊन सद्दाम ने शहीद कर दिया, आप तह़रीर फ़रमाते हैं:

ग़ैबते सुग़रा का ग़ैबते कुबरा में मुन्तक़िल हो जाना इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जो हदफ़-ओ-मक़स़द ग़ैबते सुग़रा से वाबस्ता था वोह ह़ास़िल हो गया और इस तदरीजी

प्रोग्राम से शीआ़ नागहानी ख़ला पैदा होने से पेश आने वाली मुसीबत से महफ़ूज़ हो गए और धीरे धीरे उनके ज़ेहन नुमाइन्दगाने ख़ास़ के बदले नुमाइन्दगाने आ़म से रुजूअ़् करने पर आमादा हो गए और इस मुन्तक़ेली से इमाम अ़लैहिस्सलाम **की नेयाबत-ओ-नुमाइन्दगी मख़्सूस़ और मुशख़्ख़स़ अफ़राद से आ़दिल मुज्तहिदीन के ज़िम्मे आ गई और इस त़रह़ दीन-ओ-दुनिया के कामों में उनकी पैरवी लाज़िम क़रार पाई।**

(बह़से ह़ौलल महदी, स़.७०)

इस नज़रिये की ह़ेमायत में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की एक मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ ह़दीस नक़्ल करते है जो आज के दौर में ज़बाँ ज़दे आ़म है:

وَ أَمَّا الْحَوَادِثُ الْوَاقِعَةُ فَارْجِعُوا فِيهَا إِلَى رُوَاةِ حَدِيثِنَا فَإِنَّهُمْ حُجَّتِي عَلَيْكُمْ وَ أَنَا حُجَّةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ

व अम्मल ह़वादेसुल वाक़ेअ़तो फ़र्जेऊ फ़ीहा एला रोवाते ह़दीसेना फ़इन्नहुम ह़ुज्जती अ़लैकुम व अना ह़ुज्जतुल्लाहे अ़लैहिम.

और जो वाक़ेआ़त रूनुमा होंगे (मसाएल-ओ-अह़काम वग़ैरह) हमारी ह़दीसों के बयान करने वालों से रुजूअ़् करना क्योंकि वोह लोग हमारी जानिब से तुम पर ह़ुज्जत हैं और मैं उन पर ख़ुदा की ह़ुज्जत हूँ।

अगरचे इस ह़दीस को मोह़म्मद बिन उ़स्मान अ़म्री रह़्मतुल्लाह अ़लैह से मन्सूब तौक़ीअ़् में नक़्ल किया गया है और अकसर उ़लमा ने इस ह़दीस को उन्हीं से मन्सूब किया है। लेकिन स़ाहेबे यौमुलख़लास़ जनाब कामिल सुलेमानी ने इस तौक़ीअ़् को ग़ैबते सुग़रा के आख़िरी अय्याम की तौक़ीअ़्

में शुमार करते हुए इसे चौथे नाएब अ़ली बिन मोह़म्मद समरी की जानिब निस्बत दी है।

(यौमुल ख़लास़ तर्जुमा फ़ारसी, जिल्द १/३०३)

तज़क्कुर

इस में कोई मुश्किल नहीं कि येह ह़दीस दो मर्तबा वारिद हुई हो। और ह़दीस के मफ़हूम और पैग़ाम से समझ में आता है कि ग़ैबते सुग़रा के ख़ात्मे पर ग़ैबते कुबरा में पेश आने वाले मसाएल के ह़ल की त़रफ़ इशारा कर दिया गया है।

वफ़ाते अ़ली बिन मोह़म्मद अ़लैहिर्रह़्मा

आपकी वफ़ात १५ शअ़्बान ३२९ हिजरी को वाक़ेअ़् हुई और जैसा कि आख़िरी तौक़ीअ़् में बयान हो चुका है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने आपके इन्तेक़ाल से छह रोज़ पहले ही आपको इत्तेलाअ़् दे दी थी कि छह रोज़ बअ़्द इन्तेक़ाल कर जाओगे और फिर वैसा ही हुआ कि आपने छह रोज़ बअ़्द इन्तेक़ाल किया।

आपकी नेयाबत का दौर ३२६ हिजरी से ३२९ हिजरी तक़रीबन तीन साल रहा। आपके दौरे नेयाबत में दो अ़ब्बासी ख़लीफ़ा राज़ी और मुत्तक़ी ने हुकूमत की।

मज़ार

जनाब शेख़ अ़ब्बास क़ुम्मी अ़लैहिर्रह़्मा ने सफ़ीनतुल बेहार, जिल्द ६, स़फ़्ह़ा २३४ पर तह़रीर फ़रमाया कि: शेख़े जलीले मोअ़ज़्ज़म, अ़ली बिन मोह़म्मद समरी, ह़ुसैन बिन रौह़ के क़ाएम मक़ाम हुए और अय्ये नेयाबत उनके ज़िम्मे तीन साल रही। ३२९ हिजरी क़मरी में वास़िले रह़मते ह़क़ हुए और वोह साल तनासुरे नुजूम (सितारों का गिरना, कनाया है उ़लमा

और मोह़द्देसीन का कसरत से रेह़लत पाना) था। ग़ैबते कुबरा शुरूअ् हुई। आपकी क़ब्र शरीफ़ बग़दाद में शेख़ कुलैनी की क़ब्र के नज़्दीक है।

राक़ेमुल हुरूफ़ ने इस क़ब्र की ज़ेयारत की है। अब येह इलाक़ा मस़्रूफ़ तरीन इलाक़ा हो गया है इसलिए ज़ाएरीन आसानी से नहीं पहुँच पाते।

शेख़ तूसी अ़लैहिर्रह़्मा ने लिखा है कि आपकी क़ब्र बग़दाद में एक सड़क जो ख़लत्जी के नाम से मशहूर है जो रुबहुल मुह़व्वल के बाज़ू में नह्रे अबू ए़ताब के नज़्दीक वाक़ेअ् है। आज कल इस इलाक़े को सूक़ुल कुतुब कहा जाता है जो दजला के मशरिक़ी जानिब में बाबे जस्रे अ़तीक़ (जस्रे मामून) के नज़्दीक है। अगर कोई शख़्स़ मशरिक़ी जानिब से कर्ख़ की त़रफ़ आए तो मक़्बरए शेख़ कुलैनी अ़लैहिर्रह़्मा उसके बाएँ जानिब होगा और उसी के नज़्दीक जनाब अ़ली बिन समरी की क़ब्र शरीफ़ है। मोहिब्बाने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम स़दियों से उनके नाएब की ज़ेयारत करते हैं:

अस्सलामो अ़लै-क या अ़लीयब-न मोह़म्मदिन अश्हदो अन्न-क बाबुल मौला अद्दै-त अ़न्हो व अद्दै-त इलैहे.

सलाम हो आप पर ऐ अ़ली बिन मोह़म्मद, मैं गवाही देता हूँ कि आप दरे मौला (इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम) हैं आपने उनकी जानिब से (अमानतों को) अदा किया और उनकी ख़िदमत में (अमानतों को) पहुँचाया।

मुह़ाफ़ेज़ाने वेलायत

उ़लमा पर तन्क़ीद करना अ़वाम का दिलचस्प तरीन मौज़ूअ् है। जब येह ज़िक्र छेड़ा जाता है तो हर एक कुछ न कुछ कहना ज़रूर चाहता है। हर एक के पास दो चार वाक़ेआत ज़रूर होते हैं बअ्ज़ ह़ज़रात तो इस त़रह़ की तन्क़ीद को अपना ह़क़ समझते हैं। और इसी को दानिशवरी क़रार देते हैं। वोह शाएद इस ह़क़ीक़त की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं हैं कि इस दुनिया में (अंबिया, अइम्मा, एलाही नुमाइन्दों के अ़लावा) कोई एक सि़र्फ़ ऐसी नहीं है जिसमें हर त़रह़ के अफ़राद न पाए जाते हों। ताजिर, कारीगर, मज़्दूर, इन्जीनियर, डॉक्टर, वकील, उस्ताद, शागिर्द..... के हर त़बक़े में हर त़रह़ के अफ़राद पाए जाते हैं। अच्छे, बहुत अच्छे, ख़राब, बहुत ख़राब, बाज़ार में हर त़रह़ की चीज़ें आती हैं। अस़ली भी और नक़्ली भी। इसका इलाज़ तन्क़ीद करना नहीं है बल्कि "फ़र्क़" पैदा करना है। ताकि हम नक़्ली को अस़ली समझ न बैठें, मुलम्मअ़् को खरा ख़याल न करें। हम फ़िल्हाल दुनिया से उन तमाम चीज़ों को ख़त्म नहीं कर सकते हैं लेहाज़ा ख़ुद को धोके से मह़फ़ूज़ रखने के लिए ज़रूरी है कि हम "मेअ़्यारी नज़र" पैदा करें परख रखें। कसौटी अपने साथ रखें ताकि धोका न खाने पाएँ।

जब इस्लामी तारीख़ पर नज़र डालते हैं तो ऐसे ताबिन्दा जबीं और दरख़्शाँ पेशानी उ़लमा नज़र आते हैं जिनके सरों पर इमामत-ओ-वेलायते अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की ख़िदमत का ज़रीं ताज दमक रहा है। जिनके वुजूद पर जाँनिसारी की क़बा रास्त आ रही है। अगर आज येह रोशन ज़मीर मुह़ाफ़ेज़ाने वेलायत न होते तो कितने लोग दीने ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ हो गए होते।

हज़रत इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम ने इस त़रह़ के उ़लमा के बारे में फ़रमाया:

अगर हमारे क़ाएम की ग़ैबत के बअ़्द ऐसे उ़लमा न होते जो लोगों को इमाम की त़रफ़ दअ़्वत देते और उनकी त़रफ़ रहनुमाई करते, ख़ुदा की अ़त़ा कर्दा मुस्तह़कम दलीलों से उसके दीन की हेफ़ाज़त न करते, ख़ुदा के कमज़ोर और ज़ईफ़ बन्दों को शैत़ान के जाल से नजात न दिलाते, सरकशों और नासेबीयों के दाम से आज़ाद न करते तो यक़ीनन सब ही लोग ख़ुदा के दीन से बरगश्ता हो जाते मुरतद हो जाते। लेकिन यही वोह लोग हैं जो कमज़ोर शीओं को इस त़रह़ संभाले हुए हैं जिस त़रह़ नाख़ुदा कश्ती को संभाले रहता है। यही लोग ख़ुदा के नज़्दीक सबसे ज़्यादा बाफ़ज़ीलत हैं।

(बेहारुल अनवार, जि.२, स़.६, ह़.१२)

हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द इमामत और उम्मत की रहबरी के लिए ख़ुदावन्द आ़लम ने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को मुन्तख़ब फ़रमाया है और इस मन्स़ब में बक़ीया उ़म्मत का कोई ह़क़ नहीं है। उसी वक़्त से लोग इस फ़िक्र में पड़ गए कि किस त़रह़ अ़वाम को इससे बरगश्ता किया जाए और स़ेराते मुस्तक़ीम वेलायत से मुन्ह़रिफ़ किया जाए। हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ज़िन्दगी में येह सारी बातें ज़्यादातर ज़ेह्नों की ह़द तक थीं। येह अफ़कार दिमाग़ से निकलकर ज़बान-ओ-अ़मल तक नहीं आते थे लेकिन हज़रत रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के इन्तेक़ाल के बअ़्द येह तमाम बातें रफ़्ता रफ़्ता सामने आने लगीं। सक़ीफ़ा की पूरी कारवाई कोई "इत्तेफ़ाक़ी

ह़ादेसा” नहीं थी। “इत्तेफ़ाक़ी ह़ादेसा” तो सिर्फ़ फ़िक्री साज़िशों को बेनक़ाब न होने के लिए कहा गया है।

अगर मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की ज़िन्दगी में इस त़रह़ शुब्हात उभरते रहे तो हर दौर में ऐसे अस्ह़ाब-ओ-उ़लमा रहे जो उन शुब्हात का जम कर मुक़ाबला करते रहे और त़ालेबाने ह़क़ीक़त को स़ेरात़े मुस्तक़ीम की हेदायत करते रहे। जिनमें जनाब सलमान, अबूज़र, अ़म्मार, मीसमे तम्मार, रुशैदे हुजरी, हुज्र बिन अ़दी, ज़ोरारा, मोमिने त़ाक़, हेशाम बिन ह़कम, फ़ज़्ल बिन शाज़ान..... वग़ैरह के नाम रोज़े रोशन की त़रह़ नमूदार और आश्कार हैं।

जब सन २६० हिजरी में ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत हो गई और ह़ज़रत इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत का आग़ाज़ हुआ। आफ़ताबे इमामत काएनात की नाक़द्रियों की बेना पर ख़ुदा के हुक्म से सह़ाब ग़ैबत में चला गया। उस वक़्त मुख़्तलिफ़ लोगों को फलने फूलने का मौक़अ् मिल गया। लोग येह समझ रहे थे कि इमामे आख़िर के ग़ैबत में चले जाने से उनके लिए मैदान स़ाफ़ हो जाएगा और अब शीओं के लिए कोई इल्मी पनाहगाह न होगी। और उनका राबेत़ए उलूही अक़यानूसे इल्म-ओ-मअ्रेफ़त से मुन्क़त़अ् हो जाएगा।

ग़ैबत में चले जाने से इमाम का राबेत़ा उम्मत से मुन्क़त़अ् नहीं होता है। बस रहबरी-ओ-रहनुमाई का अंदाज़ बदल जाता है। रहबरी और रहनुमाई के लिए ग़ैबत और हुज़ूर-ओ-ज़हूर का फ़र्क़ उन लोगों के लिए है जो ज़माने के हुदूद-ओ-क़ुयूद में गिरफ़्तार हैं। लेकिन वोह जो ज़माने पर फ़ौक़ीयत रखते हों सारी काएनात जिनके सामने कफ़े दस्त से ज़्यादा वाज़ेह़ हो उनके लिए ग़ैबत और हुज़ूर का क्या फ़र्क़, चश्मए फ़ैज़े इल्म-ओ-मअ्रेफ़त हमेशा जारी है येह इस्तेफ़ादा करने वालों के इम्कान और ज़र्फ़ पर मुन्ह़सिर है।

इस दौरे ग़ैबत में दुनिया कभी भी पाक सीरत, पाक बात़िन, पाक फ़िक्र..... मुख़्लिस़ उ़लमा से ख़ाली नहीं रही और न ख़ाली रहेगी। ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने अपने एक ख़ुत़्बे में इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया है:

ख़ुदाया मैं जानता हूँ कि तमाम इ़ल्म न ख़त्म होगा और न उसके सारे चश्मे ख़ुश्क़ होंगे। तू यक़ीनन अपनी ज़मीन को अपनी हुज्जत से ख़ाली नहीं रखेगा। चाहे वोह ज़ाहिर हो और लोग उसकी इत़ाअ़त-ओ-फ़रमाँबरदारी न करते हों और चाहे वोह ख़ाएफ़-ओ-पोशीदा हो। तू ज़मीन को अपनी हुज्जत से इसलिए ख़ाली नहीं रखेगा ताकि तेरी दलीलें बात़िल न हों और तेरे औलिया तेरे दोस्त हेदायत के बअ़्द गुमराह न हों।

अब यहाँ से ख़ुदा के औलिया (उ़लमा) का तज़्केरा शुरूअ़् होता है:

लेकिन येह ह़ज़रात कहाँ है? और उनकी कितनी तअ़्दाद है?

येह ह़ज़रात अ़दद के एअ़्तेबार से कम हैं। लेकिन ख़ुदावन्द बुज़ुर्ग-ओ-बरतर की निगाह में बड़ी अ़ज़मत वाले हैं।

येह ह़ज़रात अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के पैरवकार हैं। ह़ज़रत के आईन-ओ-आदाब से वाक़िफ़कार और औस़ाफ़े ह़मीदा से आरास्ता हैं।

इस बेना पर (ख़ुदा की ए़नायतें उनके शामिले ह़ाल हुईं) इ़ल्म ने पूरी त़रह़ उनकी त़रफ़ रुख़ किया वोह इ़ल्म जो ईमान की ह़क़ीक़तों पर उस्तवार है। जिस की बेना पर उनकी रूहों ने रहबराने इ़ल्म की दअ़्वत को क़बूल

किया। और वोह हदीसें उनके लिए आसान हो गईं जो दूसरों के लिए दुश्वार थीं। और वोह बातें जिनसे झूटे और इफ़्तेरा परदाज़ घबराते और वहशत ज़दा होते थे इस्राफ़ करने वाले जिसका इन्कार करते थे।

(फ़ज़ाएल-ओ-मनाक़िब, वेलायत-ओ-इताअ़त ख़ास़ कर वेलायते तकवीनीये अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ जो मोअ़्तबर-ओ-मुस्तनद हदीसें है जिनसे मुख़ालेफ़ीने अह्लेबैत वहशतज़दा होते हैं और क़बूल करने से घबराते हैं। उसे उनकी पाकीज़ा रूह और पाक बातिन आसानी से क़बूल कर लेता है।)

येह हैं वोह बरगुज़ीदा हस्तियाँ उ़लमा की जो अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की पैरवी और इताअ़त को ख़ुदा की पैरवी और इताअ़त की त़रह वाजिब जानते हैं। येह ख़ुदा के औलिया हैं। अपने दुश्मनों के ख़ौफ़ से तक़ैये में हैं उनकी रूहें मंज़िले बलन्द में आवेज़ाँ हैं (यअ़्नी जिस्मानी त़ौर पर लोगों के साथ हैं लेकिन रूहानी-ओ-मअ़्नवी त़ौर पर उनसे जुदा हैं)। आपके उ़लमा आपके पैरवकार बात़िल हुकूमते ज़ोर-ओ-जौर में पोशीदा और ख़ामोश हैं और हुकूमते एलाहिया का इन्तेज़ार कर रहे हैं। ख़ुदावन्द आ़लम अपनी हक़ की बात को दवाम और बात़िल को नाबूद कर देगा।

अपने आराम के दिनों (ज़हूर से पहले) दीन के लिए जो स़ब्र-ओ-तहम्मुल कर रहे हैं वोह उन्हें मुबारक हो।

उनकी हुकूमत-ओ-ज़हूर के ज़माने में उनके देखने का मुझे किस क़द्र शौक़ है।

ख़ुदा हमें और उनको अपनी जन्नत में उनके नेक किरदार वालेदैन, अज़्वाज और औलाद के साथ यकजा करे।

(उसूले काफ़ी, जि.१, किताबुल हुज्जा)

इस हदीस शरीफ़ का एक एक जुम्ला दौरे ग़ैबत के उ़लमा की अ़ज़मतों को ज़ाहिर कर रहा है। उनके इल्म और उनके किरदार की वज़ाहत कर रहा है।

आज के दौर की आसानियों और वसाएल की फ़रावानियों को न देखें बल्कि उस वक़्त के हालात का मुत़ालआ करें जब हर त़रफ़ से अ़क़ाएद पर हमले हो रहे थे। अ़क़ाएद के इज़्हार पर पाबंदी थी। हुकूमते वक़्त की बन्दिशें थीं। वसाएल मफ़क़ूद थे। एक एक हदीस की त़लाश में मंज़िल मंज़िल सफ़र करना पड़ता था। एक एक किताब की तलाश में दर दर की ख़ाक छानना पड़ता था। उन किताबों का तलाश करना फिर उनका मुत़ालआ करना जबकि रात में रोशनी का भी कोई मअ़्क़ूल-ओ-ख़ात़िरख़ाह बंदोबस्त न होता था। फिर उस वक़्त की किताबें आज की किताबों की त़रह़ स़ाफ़ सुथरी और वाज़ेह और ख़ुश ख़त़ न होती थीं। फ़स़लें और पैरागराफ़ एक दूसरे से बहुत ज़्यादा मुशख़्ख़स न होते थे। बअ़्ज़ जगह स़फ़्ह़ात पर नंबर भी न होते थे..... इस त़रह़ की किताबों की जमअ़् आवरी फिर उनका मुत़ालआ..... इन तमाम मुश्केलात को नज़र में रखने के बअ़्द जब हम उस वक़्त के उ़लमा के किताबों की गहराई, मुख़ालेफ़ीन के एअ़्तेराज़ के मुस्तह़कम जवाबात, और ह़वालाजात देखते हैं तो अ़क़्ल ह़ैरान हो जाती है। फिर इसके साथ किताबों की तअ़्दाद। येह कब मुत़ालेआ करते थे कब आराम करते थे, कब तह़रीर फ़रमाते थे। येह बुज़ुर्ग मर्तबा उ़लमा गोशा नशीन भी न थे। बल्कि मरजए़ ख़लाएक़ थे। लोगों के दरमियान रहते थे उनके मसाएल ह़ल करते थे।

बस एक बात समझ में आती है येह तमाम तौफ़ीक़ात बस ख़ुदा और वलीए ख़ुदा की एनायतों का नतीजा है, तब ही तो मौलाए काएनात हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम इनके देखने की तमन्ना कर रहे हैं। जनाब शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह्मा के बारे में मिलता है:

मा का-न नेयामुन मिनल लैले इल्ला हजअ़्तन सुम्मा यक़ूमो युस़ल्ली अव युत़ालेआ़ अव यदरेस अव यतलोवुल कुरआन.

रात में एक ज़रा सा सोते थे उसके बअ़्द बेदार हो जाते फिर येह नमाज़ पढ़ते या मुतालआ़ करते या दर्स देते या कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते थे।

(अत्तहज़ीब, मुक़द्दमा ३१,३३)

हज़रत इमाम जअ़्फ़र स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

हमारे शीआ़ उ़लमा सरहदों पर जमकर शैत़ानी हम्लों का मुक़ाबला कर रहे हैं शैत़ान और उसके शागिर्दों का जवाब दे रहे हैं और कमज़ोर शीओं की उन शयात़ीन के हमलों से हेफ़ाज़त कर रहे हैं। नास़ेबीयों को मुसल्लत़ होने से रोक रहे हैं।

हाँ हमारे शीओं में से जो भी इस मंज़िल-ओ-मन्स़ब पर फ़ाएज़ हो वोह रूम और तुर्क से जंग करने वालों से हज़ार हज़ार (दस लाख) दर्जा बा फ़ज़ीलत है। क्योंकि येह (उ़लमा) हमारे दोस्तों के दीन की हेफ़ाज़त कर रहे हैं जबकि वोह लोग जिस्मों की हेफ़ाज़त कर रहे हैं।

(अल-एह्तेजाजे त़बरसी, स़.८)

इस हदीस शरीफ़ से अंदाज़ा होता है कि अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की नज़रों में उन उ़लमा की बेहद क़द्र है जो शीओं के दीन

की हेफ़ाज़त कर रहे हैं दीनी तअ्लीम के एअ्तेबार से कमज़ोर और ज़ईफ़ दोस्तदाराने अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के ज़ेह्नों को नए नए एअ्तेराज़ात शुब्हात से महफ़ूज़ किए हैं। शैतान और उसके शागिर्द कल किसी और शक्ल में सामने आए थे और आज किसी और शक्ल में। मगर दोनों का मक़सद एक है यअ्नी शीअ्याने अह्लेबैत को उनके दीन से दूर करना। दीन से दूर करने का मतलब सिर्फ़ येह नहीं है कि उनको दीनदार से बेदीन बना दिया जाए। बल्कि इसका एक मफ़हूम येह भी है कि दीन रखते हुए दीनी तक़ाज़ों दीनी ग़ैरत दीनी फ़अ्आलियत दीनी ज़िम्मेदारी.....को सल्ब कर लिया जाए। और उनको ऐसा बना दिया जाए कि वोह मआशरे को तबाह बर्बाद होते हुए देखे तो मगर ख़ुद उसमें कोई दीनी ग़ैरत पैदा न हो।

आज जो भी ज़रा दीनी ग़ैरत नज़र आ रही है येह भी उलमाए शीआ की फ़अ्आलियत-ओ-तब्लीग़ का नतीजा है। गरचे अभी बहुत काम बाक़ी है। जो करना है वोह उससे बहुत ज़्यादा है जो अब तक हो चुका है।

इमामे वक़्त ख़ुदा और मख़्लूक़ात के दरमियान वासतए फ़ैज़-ओ-रह्मत है। यअ्नी इस वक़्त जो कुछ भी काएनात को ख़ुदा की जानिब से मिल रहा है वोह इमामे वक़्त के ज़रीए मिल रहा है। ज़ेयारते जामेआ कबीरा में इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है:

بِكُمْ فَتَحَ اللّٰهُ وَبِكُمْ يَخْتِمُ وَبِكُمْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ وَبِكُمْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيُنَفِّسُ الْهَمَّ

बेकुम फ़तहल्लाहो व बेकुम यख़्तेमो व बेकुम युम्सेकुस्समा-अ अन त-क़-अ अलल अर्ज़े इल्ला बेइज़्नेही व बेकुम युनज़्ज़ेलुल ग़ैसा व बेकुम युनफ़्फ़ेसुल हम-म.

ख़ुदा ने आपकी बेना पर आग़ाज़ किया और आप ही की ज़ात पर किताबे आफ़रीनश को तमाम करेगा और आप ही की बेना पर आसमान ज़मीन पर गिरने से रुका हुआ है और आपकी बेना पर बारिश होती है और आप ही कि बेना पर रंज-ओ-ग़म दूर होते हैं।

इसके अ़लावा ख़ुद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने अपनी ख़ास़ ए़नायतों को जनाब शेख़ मुफ़ीद अ़लैहिर्रह्मा की तौक़ीअ् में इस त़रह़ बयान फ़रमाया:

إِنَّا غَيْرُ مُهْمِلِينَ لِمُرَاعَاتِكُمْ وَلَا نَاسِينَ لِذِكْرِكُمْ

इन्ना ग़ैरो मोह्मेली-न लेमुराआ़तेकुम व ला नासी-न लेज़िक्रेकुम.

हम तुम्हारी हेफ़ाज़त देख रेख में कोताही नहीं करते और न ही तुम्हारी याद को भुलाते हैं। और अगर ऐसा न होता तो बलाएँ तुमको घेर लेतीं और दुश्मन तुम पर मुसल्लत़ हो जाते।

येह तो हर एक के साथ है। येह इमाम अ़लैहिस्सलाम का करम है कि आज दुनिया में शीआ़ बहुत से फ़ित्नों से मह़फ़ूज़ हैं। अगर इस वक़्त थोड़ी बहुत बलाएँ हैं परेशानियाँ हैं तो इसमें यक़ीनन कोई मस़लेह़त ज़रूर है। एक आ़म मस़लेह़त तो यही है कि बलाएँ हमको किसी ह़द तक बेदार, होशियार और फ़अ़्आल रखती हैं। अगर येह भी न होतीं तो हम पूरी त़रह़ ग़ाफ़िल हो जाते।

और उ़लमाए केराम के साथ तो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ख़ासुल ख़ास़ ए़नायतें रही हैं कभी कभी येह ए़नायतें ज़ाहिर हो गई हैं और उसका तज़्केरा किताबों वग़ैरह में मिल जाता है जबकि अक्सर ऐसी ए़नायतें जिसकी त़रफ़ कोई मुतवज्जेह ही नहीं है। इमाम इमाम हैं वोह कोई

दुनियावी रहबर तो हैं नहीं कि एक काम करके उसकी पब्लिसिटी कराएँ और अख़बारों में तस्वीरें दें।

इस सिलसिले में फ़ारसी ज़बान में मुतअ़द्दिद किताबें लिखी गई हैं जिसमें सिर्फ़ उन एनायतों का तज़्केरा है जो उ़लमा के शामिले ह़ाल रही हैं। येह बात बिल्कुल वाज़ेह और ज़ाहिर हैं यहाँ के माह़ौल में शीईयत की तब्लीग़, वेलायत-ओ-इमामत का देफ़ाअ़् इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की एनायतों के बग़ैर मुम्किन नहीं है। मगर इस मौज़ूअ़् पर कोई ख़ास़ और जामेअ़् किताब मन्ज़रे अ़ाम पर नहीं आई। अगर कोई स़ाह़ेबे क़लम इस मौज़ूअ़् की त़रफ़ तवज्जोह दे और मोअ़्तबर वाक़ेआ़त जो इस स़ह़नए अ़ालम में वक़ूअ़् पज़ीर होते हैं उन्हें कलम बंद करे तो येह भी एक ख़िदमत होगी। जिसका अज्र कसीर है। और इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की त़रफ़ लोगों को मुतवज्जेह करने और इमाम से ज़्यादा से ज़्यादा लौ लगाने और उनकी एनायतों के ह़ासि़ल करने का ज़रीआ और वसीला होगा।

इस मज़्मून को सि़र्फ़ एक वाक़ेआ नक़्ल करके तमाम करते हैं:

जब ह़ज़रत आयतुल्लाहुल उज़मा जनाब आक़ाए सैयद अबुल ह़सन इस्फ़हानी अ़लैहिर्रह्मा के फ़र्ज़न्द को शहीद कर दिया गया उन्होंने चाहा कि किनारा कशी इख़्तेयार कर लें रेयासत-ओ-क़यादत से दस्त बरदार हो जाएँ उस वक़्त जनाब हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लेमीन अलह़ाज आक़ाए शेख़ मोह़म्मद कूफ़ी शूस्तरी (जिन्होंने ४० मर्तबा से ज़्यादा ह़ज किया था) के ज़रीए इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम ने मुन्दर्जा ज़ैल पैग़ाम भेजा:

कुल लहू अख़्रिस नफ़्स-क वज़्अल मज्ले-स-क फ़िद्दहलीज़े वक़्ज़े ह़वाएजन्नासे नह़्नो नन्सुरु-क.

उनसे कह दें ख़ुद को दूसरों से ज़ुदा न करें उनसे रब्त-ओ-ज़ब्त रखें। अपनी नेशिस्त अपनी घर की दहलीज़ पर रखें लोगों की ज़रूरतों को पूरा करें हम उनकी मदद करेंगे।

(एनायाते हज़रत महदी मौऊद ब उलमा-ओ-मराजेअ् तक़लीद, स.११०)

इस तौक़ीअ् मुबारक का आख़िरी जुम्ला '**नह्नो नन्सुरु-क**' (हम तुम्हारी मदद करेंगे) काफ़ी ज़्यादा तवज्जोह का तालिब है।

यअ्नी अगर कोई शीअ्याने अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की माद्दी-ओ-मअ्नवी ज़रूरतों को पूरा करे और इस राह में क़दम उठाए तो इमामे अस्र अलैहिस्सलाम उसकी ज़रूर मदद करेंगे। ख़ुदावन्द आलम हम सबको ऐसे काम करने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाए जो हज़रत वलीए अस्र अलैहिस्सलाम की तवज्जोहात का सबब हों। आमीन।